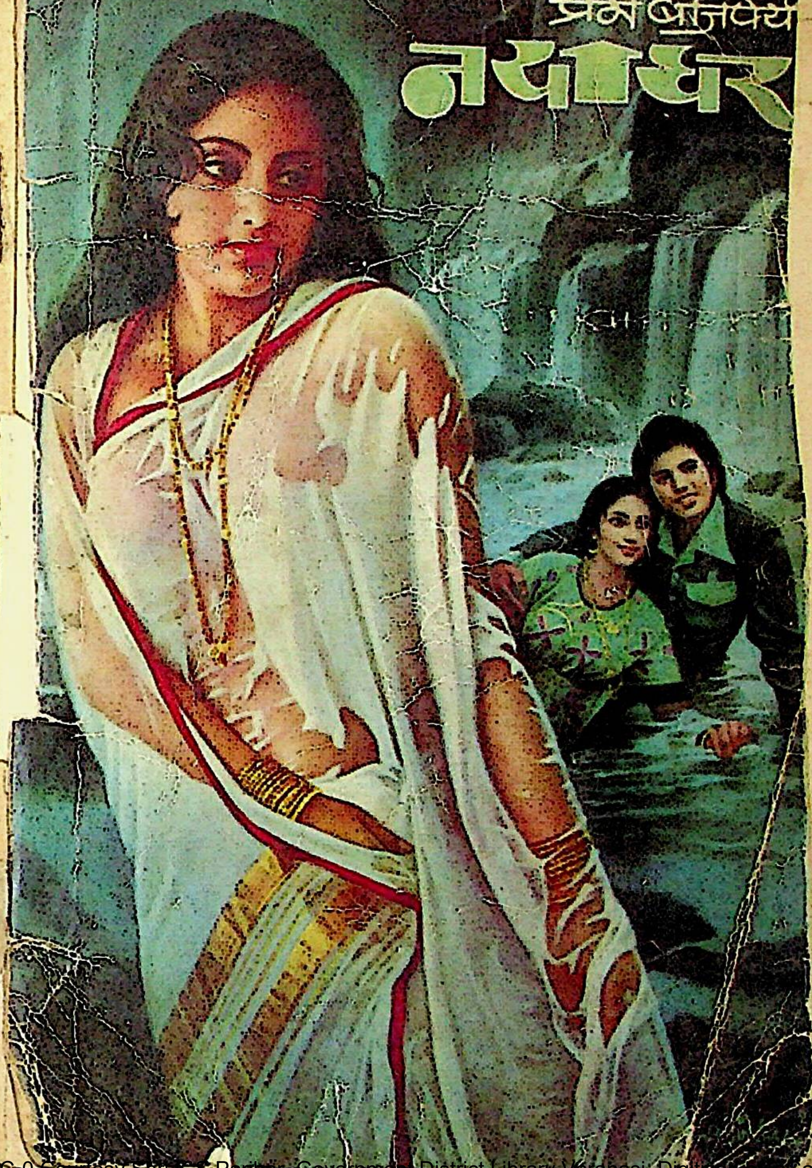

प्रेम बाजपेयी
नया घर

भाई-भाई के प्यार, त्याग और आदर्श की अनुपम कथा एक नये वातावरण के साथ

नया घर

पीले चावल के दाने अन्जू पर फेंकती हुई माँ कहती जा रही थीं—"इस घर को छोड़कर तू जिस नये घर में जा रही है उसमें तुझे अपना सारा जीवन व्यतीत करना है। वह नया घर ही तेरे मान-सम्मान की रक्षा करेगा। बेटी···अब तक तू कुँवारी थी, पवित्रता की मूर्ति थी···इस-
...म सब तेरे पांव छूते थे। उस नये घर में
... वस्तु बनेगी, इसलिए वहाँ जाकर
... छूने पड़ेंगे।"

प्यार और ... पेयी की नवीनतम कृति जिनके
के ... सिर्फ मनोज पॉकेट बुक्स में ही
दो युवा ...

ा
ये
के
मार
के
पने
तैर
व
ती

प्रेम बाजपेयी

के

मनोज पॉकेट बुक्स

द्वारा प्रकाशित

एकदम नये हृदयस्पर्शी उपन्यास

१. तलाक
२. राहगीर
३. सत्य-मुक्ता
४. नये मोड़
५. आंख मिचौनी
६. मनुहार
७. दाग
८. नीली धूप
९. पीले फूल
१०. क्वांरी कराहें
११. टूटी मीनारें
१२. लटके हुए लोग
१३. बांध और बहाव
१४. तन चुभी कीलें
१५. इन्तजार
१६. भंवर जाल
१७. सीढ़ियां
१८. मीठी उम्र बसन्ती सपने
१९. अपमान
२०. सलाखें
२१. मंगल-सूत्र
२२. जीवन साथी
२३. संस्कार
२४. इन्कार
२५. स्वीकार
२६. चूड़ियां और हथकड़ियां
२७. नारी की भूल
२८. दर्पण
२९. मोनिका
३०. चरित्रहीन
३१. सोहाग बन्धन
३२. गंदली राहें
३३. चलते-फिरते
३४. प्रतिज्ञा
३५. गरीबी
३६. जलती सिगरेट की कसम
३७. विश्वासघात
३८. गर्दिश
३९. हम दोनों
४०. लगन-मण्
४१. ि
४२.
४
४

नोट :—पूरा सैट मंगाने पर

मनोज पॉ

१५८४, दरीवा कर

Alok Kumar Singh
M.A (Previous)
Economics
Hindu University
Varanasi

नया घर

प्रेम वाजपेयी

प्यार और बलिदान, नफरत और प्रेम
के दो पाटों के बीच पिसते हुए
दो युवा हृदयों की दर्द-भरी कहानी

अपनी पूरी
हो गईं।
ना के साथ
एक एक
मलित होते
। उसकी
शक्तिशाली

ए उसको
उसके विरुद्ध
और यह
कृपाणि के
उनके पुत्र
यह सम्बन्ध
मुकाबिला

पास गये
तथा उसके
गये
राजकुमार
संकट के

सामने
चे और
। अब
आराम की कुंजी

प्रकाशक	मनोज पॉकेट बुक्स, १५८४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : २७९६३६
वितरक	राजा सेल्स कारपोरेशन २५/१२८-२९, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७.
मुद्रक	प्रिंट आर्ट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

नया घर : उपन्यास : प्रेम वाजपेयी

मूल्य : तीन रुपये

हो गई और चन्द्रकला की नानी रानी इन्दुमती अपनी पूरी सेना के साथ सन्त का साथ देने के लिये तैयार हो गई। विराट ने अपनी पत्नी रानी हँसा को विशाल सेना के साथ सन्त से लड़ने को भेजा। युद्ध में विराट के सर्दार एक एक करके या तो मरते रहे या सन्त की सेना में सम्मिलित होते रहे, मगर विराट अट्ठारह सौ देशों का राजा था। उसकी शक्ति अपार थी। इसलिये सन्त को कुछ नये शक्तिशाली साथियों की आवश्यकता हुई।

विराट की ऐयाशी और दुराचार के कारण उसकी पत्नी रानी हँसा की बहिन रानी बसन्तबाला भी उसके विरुद्ध हो गई। यही बात रानी उर्वशी के साथ भी हुई और यह दोनों सन्त से मिल गई, फिर उर्वशी महाराज चक्रपाणि के पोते राजकुमार कुणाल पर और बसन्तबाला उनके पुत्र राजकुमार विक्रम से प्रेम करने लगी इसलिये यह सम्बन्ध और पुष्ट हो गया, मगर इसके बाद भी विराट का मुकाबिला करना कठिन ही था।

इसलिये सन्त जालेन्द्र सम्राट ज्योतिसेन के पास गये जो एक दूसरे तिलिस्म का सम्राट था। ज्योतिसेन तथा उसके गुरू महाराज गुरुदेव दोनों ही सन्त के साथी बन गये।

ज्योतिसेन की लड़की रानी सुवासिनी, राजकुमार पुष्पमित्र से प्रेम करती थी। उसने कई बार बड़े संकट के समय में सन्त की सहायता की।

अब राजकुमार अरुण को छुड़ाने का प्रश्न सामने था। सन्त किसी न किसी प्रकार प्रकाश मठ तक पहुँचे और अरुण तथा राजकुमारी चन्द्रकला को मुक्त किया। अब तिलिस्म जादूनगरी को तोड़ने के लिये तिलिस्म की कुंजी

को प्राप्त करना आवश्यक था और वह मायावी बाटिका में थी। सन्त वहाँ पहुँचे। अरुण के हाथ कुंजी लगने ही वाली थी कि विराट ले उड़ा और ले जाकर भगवान भीमा के पास रखा जो अपने को भगवान कहलवाता था, मगर सन्त ने ऐयारी करके कुंजी उससे छीन ली, मगर विराट की खास दासी दामिनी ने जो सन्त की प्रेमिका थी, कुंजी प्राप्त कर ली और विराट ने उसे ऐसे स्थान पर रख दिया जिसका पता किसी को नहीं था। सन्त ने स्वांग रच कर विराट से कुंजी का भेद मालूम कर लिया और तिलिस्म चन्दन तक पहुँच गये। उस पर विजय प्राप्त करके चन्द्र द्वार तक पहुँचे, मगर विराट भी घात में था, उसने सन्त के तमाम बड़े साथियों को कैद करके एक दूसरे संसार में भेज दिया। सन्त बच गये थे। वहाँ तक उनका शिष्य कीर्तिकर्ण भी पहुँच गया था। सन्त ने वहाँ पर इतनी शानदार ऐयारी की, कि कीर्ति कर्ण दंग रह गया। उस संसार को भस्म करके वहाँ की रानी तथा अपने साथियों के साथ वह वापस आये, मगर कुंजी नहीं मिली विराट वहाँ से भी उसे ले उड़ा था। फिर विराट ने उस चाभी को एक ऐसे आदमी के शरीर में रख दिया जो अपने को सामरी का बेटा कहता था वैसे उसका नाम था महाकाल जादू! यह भेद किसी को नहीं मालूम था।

यह हैं वह संक्षिप्त बातें जो इस अंक से पहले के अंकों में लिखी गई हैं, इससे आगे की कहानी इस अंक "शैतानी मलका" में पढ़िये।

शैतानी मलका

प्रेम प्रकाश

सन्त जालेन्द्र के पास अरुण, रानी चन्द्रकला, रानी इन्दुमति, रानी बसन्त बाला बैठी थीं। एक ओर उद्यान जादू भी मौन बैठा राजकुमार के उदास चेहरे को निरख रहा था।

अचानक अरुण ने सन्त को सम्बोधित करके कहा।

"मेरी समझ में नहीं आता कि अब क्या होगा। हम लोग अभी तक उसी मंज़िल पर हैं में जहाँ से हमने युद्ध आरम्भ किया था।"

"यह तुम्हारा भ्रम है बेटे...' सन्त उसे समझाते हुए बोले "जब तुमने तिलिस्म जादू नगरी की सीमा में पहला कदम रखा था उस समय तुम्हारे साथ केवल बारह सहस्त्र सैनिक थे और फिर वह भी बिछड़ गये। और जब विराट ने तुम्हें पहली बार गिरफ्तार किया था तो हमारा सहायक कोई नहीं था मगर आज भगावन की कृपा से हमारे साथ पचास से अधिक देशों के राजा हैं और सेना को संख्या लाख से भी अधिक है।"

"मगर यह तो सोचिये—।"

"अगर मगर कुछ नहीं—"सन्त ने बात काट कर कहा "भगवान की देन का अपमान मत करो। हर काम का

समय होता है। जब समय आ जायेगा तो हर काम अपने आप हो जायेगा। रह गया यत्न करना तो हम यत्न कर हैं और हमें पूरी आशा है कि हम विजयी होंगे और अवश्य होंगे!"

यह बातें हो ही रही थीं कि अचानक पर्दा हटा कर फिरंगी अन्दर आया वह अत्यन्त घबड़ाया हुआ था।

"क्या बात है?" सन्त ने चौंक कर पूछा।

"बड़ा अनर्थ हो गया गुरुदेव।"

"अबे बता तो क्या हुआ।"

'रानी समरकला आक्रमण करने वाली है।"

"तो मरा क्यों जा रहा है—"सन्त बिगड़ कर बोले "जब आक्रमण करेगी तो देखा जायेगा।"

"आप समझे नहीं—"

"अच्छा तो अब तुम मुझे समझाओगे?" सन्त आँखें निकाल कर बोले।"

"उसके साथ बहुत सेना है।"

"होने दे! तुझ से कई बार कहा कि ऐसे वैसे समाचार लेकर मेरे पास न आया कर।"

"आप तो अकारण ही नाराज़ हो रहे हैं?" फिरंगी मुँह बना कर बोला।"

"नाराज़ होने की तो ऐसी तैसी।"

"रानी समरकला—"

"फिर उसका नाम लिया —" सन्त बिगड़ उठे "जा भाग जा वर्ना गर्दन में हाथ देकर बाहर ढकेल दूँगा।"

"आप चले क्यों नहीं जानते—"रानी सनन्त वाला ने फिरंगी से

कहा।

"जा रहा हूँ—" फिरंग बोला"गुरु का मुड खराब मालूम होता है।"

"हाँय—" सन्त क्रोध में खड़े हो गये "फिर फिरंगी भाषा बोला।"

फिरंगी उछल कर खेमे के द्वार पर पहुँचा और वहीं से बोला।

"मैं बड़े बूढ़ों की बातों का बुरा नहीं मानता।"

"अबे मैं बूढ़ा हूँ!" सन्त उसकी ओर झपटे।

फिरंगी उछल कर भागा। जब कुछ दूर निकल गया तो चीख कर बोला।

"अगर बूढ़े न होते तो इस प्रकार चबा चबा कर बातें न करते, कुछ करके दिखाते।"

यह बात भी सन्त ने सुनली, मगर टाल गये, और फिरंगी बकता झकता निकल गया।

वास्तव में फिरंगी भी झल्ला गया था। इस झल्लाहट का कारण यह था कि वह अपनी समझ से बड़ी महत्वपूर्ण सूचना लेकर गया था मगर सन्त ने उसे सुनना भी पसन्द नहीं किया। इसीलिए वह अब यह सोचता जा रहा था कि जब तक वह कोई बड़ा काम नहीं कर दिखायेगा तब तक सन्त के पास नहीं जायेगा।

वह सोचता विचारता चला जा रहा था कि चित्राँगद मिल गया।

"कहाँ से आ रहे हो वत्स!' फिरंगी ने पूछा।

"डाँट खाकर आ रहा हूँ बड़े भाई—' चित्राँगाद मुंह बना कर बोला।"

"ओह! मैं तो यह समझा थाकि केवलमैं ही डाँटा गया हूँ" फिरंगी

ने कहा।

"मुझ पर दो डाँट पड़ी है—" चित्राँगद ने कहा।

"पहली डाँट तो सन्त की होगी' मगर दूसरा डाँटने वाला कौन है ?"

"लाली ?"

"यह कौन देवी जी हैं ?" फिरंगी ने पूछा।

"एक नई विपत्ति जो उठते बैठते टर टर लगाये रहती है।"

"यह विशेषतायें तो पत्नियों में होती हैं, क्या तुम ने विवाह कर लिया है ?"

"इस चक्कर में मैं नहीं पड़ता—" चित्राँगद ने कहा "मैं उसे रानी हंसा के दरबार से उठा लाया था। अब इस प्रकार पीछे पड़ी है कुछ समझ में नहीं आता।"

"बात क्या है ?"

"कहती है कि इतने नामी बाप के बेटे हो तो कुछ करके तुम भी दिखाओ। और जब मैं उसे समझाता हूँ कि करता मैं ही हूँ नाम सन्त जी का होता है तो मानती ही नहीं।"

"आज यही ताना सन्त ने मुझे भी दिया है।" फिरंगी ने कहा "इसलिए बड़ा दुख हुआ है। चलो चल कर रानी हँसा की सेना का हाल चाल लें।"

अचानक एक ओर से सिंह के डकारने की आवाज आई और फिरंगी ने फौरन छलांग लगाई।

"अरे कहाँ भगे" चित्राँगद ने हँसकर पूछा

"अरे तुम भी भागो फिर बताऊँगा।"

चित्राँगद भी भागना ही चाहता था कि एक अट्टहास सुनाई पड़ा।

और दोनों के पाँव रुक गये।

फिर वृक्ष से कोई धड़ाम से कूदा दोनों ने पलट कर देखा तो कोर्तिकर्ण खड़े थे।

उनका भयंकर रूप और चौंका देने वाला वस्त्र विचित्र था। वह शेर की खाल ओढ़े और गदा ताने किसी धार्मिक से कम नहीं दिखाई दे रहे थे।

"कहाँ की तैयारी है ?" उन्होंने गरज कर पूछा।

"गुरु को पराजित करने की—" फिरंगी जल्दी से बोला।

"शाबाश !" उन्होंने व्यंग भरे स्वर में कहा "ऐसे ही शिष्य योग्य समझे जाते हैं जो अपने गुरु को नीचा दिखाने का यत्न करें।"

"बात यह है कि गुरू कभी कभी बड़ी अनुचित बात कह देते हैं –" फिरंगी बोला।

"देखो बकवास बन्द करो और अपने मन का विकार निकाल डालो।"

"हां भैया ! तुम क्यों नहीं ऐसी बातें करोगे—" फिरंगी जल कर बोला "गुरू ने तुम्हें तो अपना उत्तराधिकारी बना ही दिया है··· चलोगे हमारे साथ ?"

"नहीं—।"

"बड़ा अच्छा हुआ जो तुमने नहीं कह दिया वास्तव में हम लोग तुम्हें खुद भी साथ नहीं ले जाना चाहते थे—" फिरंगी ने कहा और चित्राँगद के साथ आगे बढ़ गया।

मार्ग में दोनों ने स्वांग भरे और दो विभिन्न मार्गों से पहुँचे।

रानी हँसा के दरबार का विचित्र रंग था। एक सुन्दर लड़की वीणा पर ऐसा मधुर गीत गा रही थी कि अधेड़ अवस्था वाली औरतों

को भी अपनी जवानी के दिन याद आने लगे थे।

और मालती जो फिरंगी से प्रेम करती थी, यह सोच रही थी कि अगर फिरंगी सनातन धर्मियों का साथ छोड़ कर हमारे साथ हो जाये तो कितना अच्छा हो।

वह सोच ही रही थी कि अचानक बादलों का एक टुकड़ा खेमे में घुस आया। सुगन्ध फैल गई, फिर बिजली चमकी और बादल जैसे ही गायब हुआ लोगों ने देखा कि एक सुन्दरी खड़ी है। सोलह सतरह की उम्र, काले विशाल नेत्र, घनी पलकें, कमर तक बल खाये हुए काले केश, कपोलों पर बालों के बने हुए काफ, पतले पतले अधर, गोरा रंग, सुडौल भुजायें, दाहिने कपोल पर छोटा सा काला तिल और शरीर पर श्वेत वस्त्र! ऐसा लगता था जैसे चन्द्रमा की उज्ज्वल किरणों ने नारी रूप धारण कर लिया हो, किसी की नजर उसके चेहरे पर नहीं ठहर रही थी, ललाट की खिंची हुई रेखायें इस बात का प्रमाण थां कि उसे अपने सौन्दर्य और अपनी जवानी पर गर्व है। उसने एक बार अँगड़ाई ली और सबने अपने दिल थाम लिये। वह मुस्कुराई तो सबकी आंखें झपक गईं। उसने बड़ी श्रद्धा से झुक कर रानी हँसा को प्रणाम किया। रानी हँसा ने हाथ फैला कर उसे खींचा और गले लगा कर कहने लगी।

"कहो रानी सुन्दरी! कैसे आना हुआ?"

"बहुत दिनों से सोच रही थी, मगर अवकाश नहीं मिल रहा था, मगर जब सुना कि आप परेशान हैं तो मन नहीं माना और चली आई।"

"हाँ, परेशान तो अवश्य हूँ—" रानी हँसा ने कहा "और सबसे अधिक परेशान बसन्तबाला ने कर रखा है, मगर करूँ भी क्या!

छोटी बहिन है इसलिये उसे दण्ड भी नहीं देना चाहती।"

"दुनिया का खून ही सफेद हो गया है महारानी जी!" सुन्दरी ने कहा 'अगर आपने रानी बसन्तबाला को सर न चढ़ाया होता तो क्या उनमें इतना साहस होता कि वह सम्राट के मुकाबिले को आतीं?"

"खैर छोड़ो इन बातों को! अब तो तुम्हारी माता रानी समरकला ने यह निश्चय कर लिया है कि वह विद्रोहियों को रसातर में मिला कर ही रहेंगी।"

"वह इससे पहले भी उन लोगों से लड़ चुकी हैं।"

"हाँ, मगर ऐयारों ने ऐसा नाक में दम कर रखा था कि वह सफल न हो सकीं।"

"अब आप चिन्ता न कीजिये—" सुन्दरी ने गर्व से कहा "बस आज्ञा दीजिये, फिर देखिये कि मैं क्या करती हूँ।"

"तुम ठीक कहती हो लेकिन—।"

"महारानी जी! भला मेरे समक्ष किसी का जादू क्या चल सकेगा। मेरी वाटिका देखिये! एक एक फूल ऐसा है कि बसन्तबाला को पसीना आ जाये। दृष्टि पड़े और मतवारी हो जायें उद्यान देखे तो जल जाये।"

"तुम मेरी मन्त्री की पुत्री हो, इसलिये मैं तुम्हारी बातों को काट कर तुम्हारा दिल नहीं छोटा करना चाहती हूँ, लेकिन—।"

"रानी बसन्तबाला ने ऐसे ऐसे जादू किये थे कि लोगों ने अपने हाथों से अपनी गर्दनें काट डालीं—" दामिनी ने कहा "गुरू घन्टाल चित्रकार प्रस्तर बन गये थे, अगर सम्राट न आ गये होते तो वह भी अपना गला अपने हाथ से काट डालते।"

"क्यों न हो ! हैं तो महारानी की ही बहिन ना—" सुन्दरी ने मुस्कुरा कर कहा "मगर कल मैदान में मैं उनके सामने अवश्य जाऊँगी। देखना है कि वह कैसे जादू करती हैं। अगर उनका जादू बेकार न कर दिया तो सुन्दरी नाम नहीं।"

"कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ—" रानी हँसा ने कहा।

"मैं आपकी व्याकुलता का कारण समझ रही हूँ—" दामिनी ने कहा "चाहे कुछ भी हो, मगर रानी बसन्त बाला फिर भी आपकी बहिन हैं।"

हँसा कुछ नहीं बोली। सुन्दरी प्रणाम करके चली गई।

"तुमने गलत समझा था दामिनी—" रानी हँसा ने कहा "मैं बसन्तबाला के लिये नहीं बल्कि सुन्दरी के लिये परेशान हूँ; अगर कुछ हो गया तो—"

"तो फिर ऐसा कीजिये—" दामिनी ने कहा "आप रानी समर कला को एक पत्र लिख दीजिये ताकि आप पर किसी प्रकार का आरोप न लगाया जा सके। कोई यह न कह सके कि महारानी ने अपने स्वार्थ के लिये जानबूझ कर सुन्दरी को आग में झोंक दिया।"

"ठीक कहती हो—" रानी हँसा ने कहा और उसी समय रानी समरकला के नाम एक पत्र लिख कर अपनी खास दासी नयना को दिया और कहा।

"इसे रानी समरकला के पास ले जा और उत्तर ला।"

नयना पत्र लेकर चली गई।

जिस समय रानी सुन्दरी महारानी हँसा के दर्बार में पहुँची थी

उस समय वहाँ फिरंगी भी रूप भरे एक ओर बैठा था, जब उसने नयना को निकलते देखा तो उसको एक उपाय सूझा। वह चक्कर काट कर तेजी से भागता हुआ एक स्थान पर रुक गया।

यह स्थान सुनसान था और यहाँ अँधेरा भी था। वह खड़ा होकर नयना की प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही नयना उसके निकट आई, वह दोनों हाथ जोड़ कर उसके सामने खड़ा हो गया।

"कौन हो तुम ?" नयना ने पूछा।

"मेरी जाँ ! चाहने वाला बड़ी मुश्किल से मिलता है—" फिरंगी ने सीने पर हाथ रख कर कहा और नयना का हाथ पकड़ लिया।

"हाथ छोड़ नहीं तो शोर मचा दूँगी—" नयना ने हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"बलम धीरे बोल, कोई सुन लेगा—और अगर सुन लिया तो भाले से मार भी डालेगा।"

नयना ने सोचा कि यह कोई पागल है। इससे पीछा छुड़ाना ही चाहिये। स्वर में माधुर्यता भरती हुई बोली।

"क्या चाहते हो ?"

"यह पूछो कि क्या नहीं चाहता !" फिरंगी ने फिर सीने पर हाथ रखा "मेरी जान मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

"यह हुस्न, यह शवाब तुम्हारा, यह सालो सिन !
नयना तुम्हारी याद में कटते हैं रात दिन !!"

नयना मुस्कुरा पड़ी और फिरंगी सोचने लगा कि गुरुदेव ठीक कहते हैं कि नारी चाहे जैसी भी हो वह अपनी प्रशंसा सुन कर पावरोटी हो ही जाती है। नयना को मुस्कराता देख कर उसका साहस बढ़ा। वह ठण्डी साँस खींच कर बोला।

"आह! यह रसीले अधर! यह सुडौल भुजाएँ और यह विशाल—"

"छिछोरापन मुझे पसन्द नहीं—" नयना बिगड़ कर बोली।

"इतने क्रोध में तो तुम्हारे कपोल सेव बन गये हैं, कहीं और अधिक—।"

"कुछ कहोगे भी या बकवास ही करते रहोगे?" नयना ने फिर बात काटी।

"एक बात कहनी है। कान इधर लावो।"

"नहीं—" नयना ने कहा और आगे बढ़ने के लिये पग उठाया।

फिरंगी ने जब देखा कि अधिकार में आया हुआ शिकार निकला चाहता है तो उसने फ़ौरन एक डिबिया निकाली और कहने लगा।

"जाने से पहले यह निशानी तो लेती जाओ?"

"इसमें क्या है?",

"दिल का टुकड़ा, जिसे देखते ही तुम वेहोश हो जाओगी।"

नयना की उत्सुकता बढ़ी, वह डिबिया खोलने लगी, मगर वह खुल नहीं रही थी। झल्ला कर उसने एक बार जोर लगाया तो डिबिया खुल गई। झटका खा जाने के कारण उसमें रखा हुआ सफ़ूफ उड़ा और उसके चेहरे पर पड़ा वह चकरा कर "अरे" कहती हुई पीछे हटी। फिरंगी ने कमन्द फ़ेंकी। नयना लड़खड़ा कर गिरी। फिरंगी ने उसे उठाया और एक गढ़े में चला गया। गढ़े में उसे लिटा कर उसका रूप भरा, और वहाँ से रानी सुन्दरी के खेमे की ओर चल पड़ा।

———

थोड़ी ही दूर जाने के बाद उसे रानी सुन्दरी का खेमा दिखाई पड़ा। फिरंगी ने रानी हँसा वाला पत्र नयना के पास से ले ही लिया था। उसे मुट्ठियों में दबाये बड़े अन्दाज के साथ वह रानी सुन्दरी के खेमे में प्रविष्ट हुआ।

सुन्दरी के चेहरे पर सदैव गर्व के चिन्ह रहते थे, मगर वह इतनी सुन्दर थी कि देखने वाला उसके हर रूप पर अपना दिल गँवा बैठता था। वह रंगीन तबीयत की थी। जहाँ वह अल्हड़ थी वहाँ चचल भी थी, ऐशोआराम भी चाहती थी, उसके आस पास सुन्दर सुन्दर दासियाँ बैठी हुई थीं और चौदह पन्द्रह की अवस्था वाले लड़के प्यालों में उन्हें मदिरा मिला रहे थे।

फिरंगी ने दाखिल होते ही झुक कर सलाम किया, फिर बोला।

"मैं महारानी हँसा की दासी नयना हूँ और आपके नाम उनका एक पत्र लाई हूँ।"

सुन्दरी ने पत्र पढ़ कर कहा।

"यह तो मेरी माता रानी समरकला के नाम है।"

"आप ठीक कहती हैं—" फिरंगी ने कहा "यह पत्र उन्हीं के नाम था। उन्होंने इसे पढ़कर आपके पास इसलिये भेजा है कि आप भी पढ़ लें। सरकार! मैं पढ़ी लिखी तो हूँ नहीं। गाने बजाने के शौक के कारण महारानी ने मुझे अपनी दासियों में सम्मिलित कर लिया है।"

"अच्छा! तुम गाना जानती हो?"

"बस थोड़ा सा।"

"तो फिर मुझे भी सुनाओ?"

"पत्र का उत्तर दीजिये सरकार!" फिरंगी बोला।

"उत्तर क्या देना है—" सुन्दरी ने तीव्र स्वर में कहा "कह देना कि मैं रानी वसन्तवाला से अवश्य लड़ूँगी।"

फिरंगी ने पलटना ही चाहा था कि नयना ने मुस्कुरा कर कहा।

"अरी नयना! अब ऐसा भी क्या गर्व! दो एक बोल हमें भी सुना दे तो आशीर्वाद देंगे।"

"यह मेरा सौभाग्य है कि आप जैसी रानी मेरा गाना सुनने के लिये उत्सुक हैं—" फिरंगी ने हाथ जोड़ कर कहा "लेकिन सरकार! जब तक मैं कुछ सुन नहीं लेती तब तक मन में लहर नहीं उठती।"

"अच्छा बैठो—" सुन्दरी ने फिरंगी से कहा, फिर अपनी एक दासी की ओर देखती हुई बोली "प्रेमा! एक फड़कती हुई चीज़ सुनाओ।"

प्रेमा ने लहक कर तान मारी और ऐसा गीत सुनाया कि सब झूम उठे। सुन्दरी ने अपने गले का एक हार उतार कर उसे पुरस्कार में दिया मगर फिरङ्गी उसी प्रकार चुपचाप बैठा रहा।

"क्यों नयना! तुम्हें प्रेमा का गाना पसन्द नहीं आया?" सुन्दरी ने पूछा।

"अगर क्षमा किया जाये तो कुछ कहूं?"

"कहो?"

"सरकार! ऐसे गाने तो मेरी दासियों की शिष्यायें गाती हैं—" फिरंगी ने कहा।

"डींग न हाँको—" प्रेमा जल कर बोली "कुछ सुनाओ तो पता चले।"

"सरकार मेरी एक शर्त है—" फिरंगी ने सुन्दरी से कहा।

"कहो !"

"मैं बिना सामान के नहीं गा सकती ।"

"कैसा सामान ?" सुन्दरी ने चौंक कर पूछा ।

"एक पेश्वाज और कुछ गहने जैसे हाथ में कंगन, कान में बुन्दे, माथे का टीका, सर का छपका, पाँव में पाजेब और घुँघरू । तब गाने के साथ नाच का भी आनन्द उठाइये !"

सुन्दरी ने संकेत किया और थोड़ी ही देर बाद सारी वस्तुयें आ गईं ।

फिरंगी ने एकान्त में जाकर बनाव श्रृङ्गार किये और फिर श्रृङ्गाररस का एक गीत भाव बता बता कर गाने लगा । एक तो मधुर कण्ठ, उस पर से सन्त जालेन्द्र का शिष्य । गीत और नृत्य ने वातावरण को मदहोश बना दिया । सुन्दरी तो इतनी मदहोश हुई कि प्रशंसा करना भी भूल गई । जब फिरंगी रुका तो एक क्षण तक सब गुम सुम बैठे रहे और जब सुन्दरी ने अपने गले के सारे हार और हजार अशर्फियों की थैली फिरंगी को पुरस्कार में दिये तो सब चौंक पड़े ।

रानी सुन्दरी ने निन्दासे स्वर में कहा ।

"मुझे तो ऐसा लगता था जैसे संसार मुझ में गुम था और मैं नृत्य में और संगीत में मुझे गुम...एक-एक कण मुझे गाता, नाचता और मुस्कुराता दिखाई दे रहा था ।"

"एक कला और जानती हूँ सरकार—" फिरंगी ने मुस्कुरा कर कहा "जरा मदिरा पिलाने की कला भी देखिये ।"

"तो फिर देर न करो । एक प्याला अपने हाथों से पिलाओ—" सुन्दरी ने जल्दी से कहा "मैं तुम्हारी यह कला भी देखना चाहती हूँ ।"

फिरंगी ने सुराही से प्याले में मदिरा उडेली और नृत्य करने

लगा, फिर उसने चक्कर देने आरम्भ किये। मदिरा का प्याला उसके हाथ में था। चक्कर देते देते एक बार अचानक वह झूम से सुन्दरी के पास बैठ गया और प्याला उसके सामने करता हुआ बोला। इस नृत्य में उसने आँख बचाकर मदिरा में बेहोशी का चूर्ण मिला दिया था।

"सरकार नृत्य में अपने शरीर को मैंने कितने चक्कर दिये। मेरे शरीर का हर अंग चक्कर खा रहा था, मगर प्याले से एक बूंद भी मदिरा नहीं गिरी।"

"मान गई—" सुन्दरी ने मुस्कुरा कर कहा।

और फिरंगी ने अंगड़ाई लेते हुये अपना दाहिना हाथ उसके गले में डाल दिया और बायें हाथ से मदिरा का प्याला उसके अधरों से लगा दिया।

"तुम्हारा हाथ काँप रहा है—" सुन्दरी ने मुस्कुरा कर कहा !

"यही तो कला है सरकार।" फिरंगी ने झट से कहा, मगर इस बात को वह भी समझ रहा था कि उसका हाथ सचमुच काँप रहा है। इसका कारण भय नहीं था बल्कि रानी सुन्दरी जैसी सुन्दर नारी से सामीप्य था। उसका सारा शरीर सनसना रहा था और दिल चाहता था कि सुन्दरी से लिपट जाये। वह अपना अस्तित्व भूलता जा रहा था।

रानी सुन्दरी भी मदहोश होती जा रही थी उसे होश ही नहीं था कि मदिरा का प्याला उसके होंठों से लगा हुआ है और उसे मदिरा पीना चाहिये।

फिरंगी ने नचना का रूप तो भर लिया था, मगर अपने पुरुष होने की अवस्था को तो नहीं बदल सकता था, इसलिये जब उसने सुन्दरी

के गले में बाहें डाली थीं तो नयना को भी विचित्र प्रकार के आनन्द का आभास मिल रहा था।

अचानक नयना ने उसी मदहोशी में फिरंगी के हाथ से प्याला ले लिया और एक हाथ फिरंगी के कन्धे पर रख कर चाहा कि अंगड़ाई ले कि प्याले से मदिरा छलक कर उसके शरीर पर गिरी। एक भभका उठा और फिर एक जोरदार थप्पड़ प्याले पर पड़ा। वह टूट कर चकना चूर हो गया।

फिरंगी समझ गया कि मामिला उलट गया। वह भागना ही चाहता था कि सुन्दरी ने थपकी दी और भ्रूरता ने फिरंगी के पाँव पकड़ लिये। और जब उसने घूर कर फिरंगी की ओर देखा तो वह अपने असली रूप में आ गया।

दासियों ने देखा कि पेशवाज और आभूषण पहने भूरी आँखों वाला एक गोरा चिट्टा आदमी खड़ा है।

"तू कौन है ?" सुन्दरी ने झल्ला कर पूछा।

"बड़ा असभ्य हो तुम!" फिरंगी आँखें निकाल कर बोला 'तुम्हें यह भी नहीं मालूम हैं कि हम जैसे सभ्यों से किस तरह बात की जाती है।"

"अरे सभ्य पुरुष!' एक दासी ने कटाक्ष करते हुये कहा "पहले अपना नाम तो बताओ।"

"यह हुई बात।" फिरँगी ने मुस्कुरा कर कहा लेकि "मेरा नाम सुनकर तुम लोगों को जुकाम हो जायेगा और यह भी हो सकता है कि जाड़ा देकर बुखार भी चढ़ आये मगर फिर भी बता देता हूँ। मेरा नाम फिरँगी है और मैं सन्त जालेन्द्र का शिष्य हूँ।"

फिरंगी के नाम और काम सभी को मालूम थे। नाम सुनते ही

उनकी दशा ऐसी हो गई जैसे उन्हें साँप सूँघ गया हो।

सुन्दरी भी इन ऐयारों के बारे में बहुत कुछ सुन चुकी थी। वह कड़क कर बोली।

"मैं तुम्हें जला कर राख कर दूँगी।"

"वह किस अपराध में सरकार!" फिरँगी ने बड़े भोलेपन से पूछा "इतनी देर तक गा नाच कर आपका दिल बहलाता रहा, क्या उसका यही बदला है!"

"तुम्हारे मन में विकार था—" सुन्दरी गरजी।

"क्या बताऊँ सरकार। आप को देख कर तो बूढ़े अपनी डाढ़ियों पर हाथ फेरे बिना नहीं रह सकते और मैं तो अभी जवान हूँ अगर इसी का नाम विकार है तो फिर आप जो उचित समझिये कीजिये।"

सुन्दरी मुस्कुरा पड़ी, मगर तत्काल ही उसे अपनी माता समर कला का उपदेश याद आ गया। समर कला ने उसे उपदेश दिया था कि ऐयारों की बातों में कभी न आना यह उपदेश याद आते ही उसके चेहरे का रँग बदल गया और उसने कमान रूपी भवें चढ़ाते हुये कहा।

"छल कपट वाली बातें न करो! तुम्हारा काल ही तुम्हें यहाँ खींच लाया है।"

"देखो रानी! प्यार की बातें करो और यदि इस प्रकार आँखें निकाल कर बात करोगी तो मैं भी बहुत बुरा आदमी हूँ। ऐसा तरसा तरसा कर मारूँगा कि तुम्हारी सारी शेखी भूल जायेगी।"

सुन्दरी का क्रोध सीमा पार कर गया। उसने एक दासी को आज्ञा दी।

"जल्लाद को बुलाओ।"

"जल्लाद की क्या आवश्यकता है सरकार—" फिरँगी सीना पर हाथ रखकर बोला "बस निगाहें तिर्छी कर लीजिये। मैं खुद ही मर जाऊँगा।"

सुन्दरी तिलमिला कर उठी और दण्ड देने के लिये आगे बढ़ी।

"देखो सुन्दरी!" फिरँगी हाथ उठाकर बोला "अभी कमसिन हो। अभी तुम्हारे खेलने खाने के दिन हैं। अगर मेरे रक्त से तुमने अपने हाथ रँगे तो मेरे गुरू सन्त जालेन्द्र तथा मेरे भाई चित्राँगद तथा कीर्ति कर्ण तुम्हें सुन्दरी से बन्दरी बना देंगे।"

फिरंगी जबान से तो अकड़ रहा था मगर दिल में प्रार्थना कर रहा था कि भगवान जल्द किसी को मेरी सहायता करने के लिये भेज वर्ना आज जान नहीं बचेगी, अगर धरती ने उसके पाँव न पकड़ लिये होते तो शायद वह इतना विवश न होता।

इतने में एक दासी जल्लाद के साथ अन्दर आई।

उस समय प्राण दण्ड देने का यह नियम था कि पहले अपराधी की गर्दन पर कोयले से रेखा खींची जाती थी फिर प्राण दण्ड की आज्ञा देने वाले से जल्लाद तीन बार आज्ञा माँगता था फिर अपराधी की गर्दन उड़ा देता था।

अतः फिरंगी के साथ भी यही हुआ। जल्लाद ने उसकी गर्दन पर कोयले से रेखा खींची और सुन्दरी ने पहली आज्ञा दी।

फिरँगी ने मुस्कुरा कर सुन्दरी की ओर देखा और बोला।

"मुझे तुम्हारी कमसिनी पर दया आ रही है।"

"कितना ढीट है—" एक दासी ने कहा "मौत सर पर खड़ी है और इस प्रकार की बातें कर रहा है!"

रानी सुन्दरी ने दूसरी आज्ञा दी तब ही चपला प्रविष्ट हुई।

झुककर उसने सुन्दरी को प्रणाम किया और कहने लगी।

"मुझे महारानी हँसा ने भेजा है। वह अपने अपराधियों को अपने हाँथों से कत्ल करना पसन्द करती है।"

सुन्दरी ने संक्षिप्त में सारी बातें बताते हुये कहा।

"यह बड़ा अधम और नीच है! महारानी से कह देना कि इसे सिसका सिसका कर मारें।"

"आप विश्वास रखिये! इसे तो वह इस प्रकार मारेंगी कि फिर दूसरे ऐयारों का हमारे पड़ाव में आने का साहस ही नहीं हो सकता--" चपला ने कहा।

चपला ने आगे बढ़कर फिरंगी के दोनों हाँथ बाँध दिए। सुन्दरी ने अपना जादू उतार लिया। चपला उसे खींचती हुई ले चली। फिरंगी गालियाँ बकने लगा और चपला अट्टहास करने लगी।

जब चपला पड़ाव से काफी दूर निकल गई तो फिरंगी ने कहा।

"अरे कुछ इसका तो विचार करो। मैं तुम्हारे चाहने वाले का गुरुभाई हूँ मेरे पास आकर एक बात तो सुन लो।"

चपला ने डोर छोड़ दी और उसके समीप आकर बोली।

"कितने भोले हो तुम अपना पराया भी नहीं पहचान सकते।"

इतना कहकर उसने एक झटका मारा तो चेहरे पर चढ़ा हुआ खोल उतर गया। सामने चित्रांगद खड़ा मुस्कुरा रहा था। फिरंगी उससे लिपट गया और कहने लगा।

"वाह भाई! खूब बचाया तुमने वर्ना जान चली जाती।"

'अच्छा यह जनाने कपड़े उतारिये और यारों का हिस्सा निकालिये।'

"कैसा हिस्सा?" फिरंगी ने पूछा।

"सुन्दरी के यहां सेजो लाये हो, उसका हिस्सा।"

"ओह अच्छा!" फिरंगी मुसकुरा कर बोला" जरा कपड़े उतार लूँ तो दूँ।"

वह एक वृक्ष की आड़ में चला गया और चित्रांगद वहीं टहलने लगा। जब काफी देर हो गई और फिरंगी ओट से बाहर नहीं आया तो चित्राँगद ने वृक्ष के तने के समीप जाकर चारों ओर देखा फिरंगी कहीं नहीं था।

वह झल्ला उठा और पैर पटकता हुआ सन्त के पास चला ताकि फिरंगी की शिकायत करके उसे दण्ड दिलवायें।

फिरंगी के जाने के बाद सुन्दरी को इतना क्रोध आया कि वह उसी अवस्था में हमला करने की तैयारी करने लगी। कुशल यह हुआ कि उसी समय रानी हंसा आ गई जब उसने सारी बातें सुन लीं तो बड़े प्यार से सुन्दरी को समझाते हुये कहा।

"देखो बेटी! मैंने तुम्हें पहले ही समझा दिया था कि इन दुष्टों से ने उलझो! रानी समरकला को आ जाने दो, उसके बाद इन से समझ लिया जायेगा।"

सुन्दरी कुछ नहीं बोली। बैठी भुन भुनाती रही। रानी हंसा के जाने के बाद भी उसका क्रोध कम नहीं हुआ, उसी दशा में सुलेखा दाखिल हुई।

सुलेखा सुन्दरी की मौसी की लड़की थी और स्वभाव में उसके

विलोम थी उसकी उम्र सुन्दरी से दो साल अधिक थी, मगर चेहरे पर बहुत अधिक भोलापन था।

योग्य वर न मिलने से कारण अभी तक उसका विवाह नहीं हुआ था। वह जादू नहीं जानती थी। इसीलिये सुन्दरी यह सोचा करती कि सुलेखा उससे जलती है इसी आधार पर वह बड़ी जली कटी बातें सुलेखा को सुनाती रहती थी, मगर सुलेखा हमेशा हंसकर टाल दिया करती थी। साथ रहने के कारण दोनों में सहेलियों जैसा व्यवहार होता था। सुलेखा को देखते ही सुन्दरी चौंक पड़ी और आँखें तरेर कर बोली।

"अरे! तुम कैसे आईं?"

"क्या मतलब है! चली जाऊं?" सुलेखा मुस्करा पड़ी।

"नहीं तो—" सुन्दरी ने रूखे स्वर में कहा "अचानक जब कोई आ जाता है तो इस प्रकार के शब्द मुख से निकल ही जाते हैं।"

"खैर छोड़ो! यह बताओ कि चेहरा इतना मलिन क्यों हो रहा है?"

"क्या बताऊं?" सुन्दरी ने तनक कर कहा "मैं तो यह समझ कर आई थी कि यहाँ जादू की लड़ाई होगी, मगर सनातन धर्मियों के ऐयार तो आफत के परकाले हैं। अभी एक आकर मुझे धोखा दे गया है, फिर उसने पूरी कहानी सुनाई।

"इसीलिए मैं यहाँ आने से तुम्हें रोक रही थी?" सुलेखा हंसती हुई बोली।

"तो फिर क्या तुम्हारे समान हर वक्त, घर में मुंह लटकाये बैठी!" सुन्दरी तनक कर बोली।

"तो क्या बुरा है। औरत घर का दीप है—" लक्ष्मी है?"

"जिन्हें कुछ नहीं आता वह ऐसी ही बातें कह कर अपना दिल

ठण्डा कर लेती हैं ?" सुन्दरी ने जल कर कहा।

"मानती हूँ कि तुमने सामरी की तमाम कक्षायें पास करली हैं और तुम्हें उसका प्रमाण पत्र भी मिल गया है, मगर इसका यह अर्थ तो नहीं है कि जो जादू न जानता हो वह दूसरी बातें भी न जानता हो।"

"अच्छा अच्छा ! तुम ज्ञानवती और मैं अनपढ़—" सुन्दरी बोली।

"मिर्चें क्यों चबा रही हो !" सुलेखा मुस्कुरा कर बोली "मैं तो एक शुभ सम्वाद सुनाने आई थी और तुम ने मुंह फुला लिया।"

"मैं नहीं सुनती शुभ सम्वाद।"

"ठीक है। मैं जाकर मौसी से कह देती हूँ कि तुम्हारी लाडली ने तुम्हारा सन्देश सुनना भी पसन्द नहीं किया—" सुलेखा ने कहा और जाने के लिये मुड़ गई।

"क्या सन्देश है ?" सुन्दरी ने पूछा।

"राजकुमार सुखपाल आने वाले हैं। मौसी ने कहा था कि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो।"

"क्या !" सुन्दरी उछल कर खड़ी हो गई और झपट कर सुलेखा का हाथ पकड़ लिया "बैठो तो। कहाँ जा रही हो। मैं तो हंसी कर रही थी और तुम बुरा मान गई।"

सुलेखा मुस्कुराती हुई बैठ गई और कहने लगी।

"नाम सुनकर ही जब यह बेचैनी है तो फिर जब उन्हें देखोगी तो तुम्हारी क्या दशा होगी ?"

"हटो ! तुम तो बनाने लगीं—" सुन्दरी ने मुंह फेर लिया।

"इधर देखो रानी ! मैं अनपढ़ तुम्हें क्या बनाऊँगी—" सुलेखा ने हँसते हुये कहा "सवेरे ही वह आ जायेंगे। इसी समय प्रबन्ध कर लेना—अच्छा मैं चली।"

"कहाँ जा रही हो ?" सुन्दरी ने पूछा ।" "यहाँ नहीं रहोगी ?"

"मैं क्या करूँगी ?"

"तुम्हारे बिना सारा मामिला चौपट हो जायेगा। वैसे तो मुझे उनकी चिन्ता नहीं है, मगर माता जी की आज्ञा है इसलिये हमें सब करना ही पड़ेगा।"

सुन्दरी ने ठीक ही कहा था। सच बात तो यह थी कि उस जैसी लड़की किसी एक पुरुष की होकर रह ही नहीं सकती थीं। विरट उस पर जान देता था, मगर वह जानती थी कि विराट चाहे लाख प्रेम जताये मगर उससे विवाह नहीं कर सकता इसलिये वह राजकुमार सुख पाल को भी लगाये रहना चाहती थी। वह अपनी माता पर यह प्रकट नहीं करना चाहती थी कि उसको सुख पाल से प्रेम नहीं है।

उधर सुखपाल भी सुन्दरी में अधिक दिलचस्पी नहीं लेता था, इसका अनुमान समर कला को भी था इसलिये वह चाहती थी कि दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगें।

जब सुखपाल आया तो सुलेखा भी वहां थी। सुन्दरी की सहेलियों ने उसका स्वागत किया और फिर हँसी मजाक आरम्भ हो गया। सहेलियों में सुलेखा भी मिली हुई थी।

"बड़ी देर की मेहरबां आते आते !" एक ने बोली कसी।

"इनका आना भी कयामत से कम नहीं—" दूसरी बोली।

"जादू जगा रहे थे बेचारे—" तीसरी ने कहा।

"तुम किस जादू से कम हो—" सुखपाल ने कहा "समीप तो आओ। जरा तुम्हारी सूरत देखूँ।"

"देखना ही है तो उनको देखियेगा जो कल रात से ही आपकी

प्रतीक्षा में जादू जगा रही है।"

"मगर आप हैं बड़े निर्दयी—" एक बोली "कब से आपकी प्रतीक्षा हो रही है और आप अब आये हैं।"

"मुझे मालूम होता कि तुम भी यहाँ हो तो सर पर पैर रख कर दौड़ा आता।"

"कहते तो सब ही हैं, मगर करता कौन है!"

"मैं!" सुखपाल ने मुस्कुरा कर कहा और लपक कर उसका हाथ पकड़ना चाहा मगर वह बल खाती हुई भाग गई।

"सुन्दरी को बुलाओ!" सुलेखा नें एक दासी से कहा "यह कब तक इसी प्रकार से खड़े रहेंगे।"

सुखपाल ने जब यह खुसुर फुसुर सुनी तो बोला।

"बात क्या है? मैं जिससे मिलने आया हूँ उनका कहीं पता ही नहीं है।"

"आप बैठिये वह आ रही हैं—" सुलेखा ने कहा।

सुखपाल ने बड़े ध्यान से उसे देखा। वहाँ जितनी लड़कियाँ थीं, उन सब में वही एक गम्भीर दिखाई दे रही थी, मगर थी प्रसन्न मुख।

सुलेखा ने जब सुखपाल को अपनी ओर घूरते हुये देखा तो लजा कर नजरें झुका लीं और बोली।

"बैठिये ना! आप कब तक खड़े रहेंगे। सुन्दरी आ रही है।"

"आप कहिये तो मैं काँटों में भी बैठ जाऊँ, मगर यह तो सोचिये कि क्या यह अच्छा लग रहा है कि मैं जिससे मिलने आया वही मौजूद नहीं है।"

"वह आती ही होगी। आप तो जानते ही हैं कि वह आप से

लजाती है।"

"अच्छा! तो सुन्दरी को भी लजाना आ गया है।" उसने व्यंग भरे स्वर में कहा।

"आप क्या समझते हैं कि बस आप ही को लजाना आता है।" एक सहेली ने उत्तर दिया।

"अब ऐसी बातें न करो कि सचमुच मुझे लाज लगने लगे—" सुखपाल ने हँसते हुये कहा।

सुलेखा उठकर सुन्दरी को बुलाने चली गई तो उसने एक से पूछा—

"यह कौन थी?"

"राजकुमारी सुलेखा!"

"अच्छा! यही राजकुमारी सुलेखा हैं। नाम तो सुना था, मगर कभी देखा नहीं था!"

"अवश्य न देखा होगा, क्योंकि यह अधिकतर घर ही में रहती हैं और पुरुषों के सामने कम ही आती हैं।"

"और आईं भी तो चली गईं।" उसने साँस खींच कर कहा।

"हम लोगों से तो आप को कोई दिलचस्पी हो नहीं सकती।"

"दिलचस्पी तो सबसे हो सकती है, मगर मैं दिल लगाना जानता नहीं।"

"फिर आप क्या जानते हैं।"

"दिल लगी करना!" सुखपाल हँस कर बोला।

यहाँ हँसी मजाक हो रहा था और दूसरे खेमे में सुन्दरी अपनी दासियों पर झल्ला रही थी। उसका शृंगार अभी पूरा नहीं हुआ था।

दासियाँ चोटियों में मोती पिरो रही थीं। कपड़े तीन बार बदले जा चुके थे और अब यह चौथा जोड़ा भी उसे पसन्द नहीं आ रहा था। वह पैर पटक रही थी और दासियाँ उसे मना रही थीं।

"ठीक तो है—" सुलेखा ने कहा।

"मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे यह कच्चा है—" सुन्दरी झल्ला कर बोली।

"दर्पण के सामने खड़ी होकर देख लो। सच्चाई सामने आ जायेगी।"

और जब सुन्दरी दर्पण के सामने खड़ी हुई तो अपने शृंगार और सौन्दर्य पर खुद ही मुग्ध हो गई। लाल मखमल के लिबास में वह किसी चित्रकार का बोलता चित्र मालूम हो रही थी। होठ वीर बहूटी के समान लाल थे। भुजायें कमल नाल के समान लचकीली और नर्म जान पड़ती थीं। माथे का टीका सितारे के समान जगमगा रहा था। अंगुलियों में मेंहदी रची थी। नेत्रों में लाल डोरे तैर रहे थे। उसने मुस्कुरा कर सुलेखा की ओर देखा और बोली।

"चलूँ ?"

"हाँ।"

"तुम भी तो कपड़े बदल लो।"

"मैं उनसे मिल आई रानी—" सुलेखा हँस पड़ी।

"अरे···इसी प्रकार ?

"हाँ।"

"कपड़े तो बदल लिया होता—" सुन्दरी बुरा मानकर बोली "कपड़े नहीं लाई थीं तो मेरे ही कपड़ों में से एक जोड़ा ले लिया होता।"

"यही ठीक है। तुम तो जानती हो कि मुझे सादे कपड़े पसन्द हैं।"

"गहने पहिन लो।"

"राजकुमार मुझे नहीं तुम्हें देखने आये हैं—" वह मुस्कुरा कर बोली।

सुन्दरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सुलेखा के साथ चल दी।

जब यह खेमे में आईं तो तमाम दासियाँ उठकर खड़ी हो गईं। सुखपाल उसे देखता ही रह गया। उसके सामने दो लड़कियाँ खड़ी थीं।

सुन्दरी और सुलेखा।

सुन्दरी एक तराशी हुई प्रतिमा थी जो प्रदर्शन के लिये आई थी। रत्न जटित आभूषणों से सुसज्जित, हुस्न और शवाब का मचलता हुआ जादू।

और सुलेखा…जंगल में खिला हुआ गुलाब थी। न साज न शृंगार। ऐसा लग रहा था जैसे गुलाब के खिले हुये फूल को आकाशजल ने धो दिया हो।

सुन्दरी की त्योरियां चढ़ी हुई थीं। उसने सुखपाल की ओर देखकर निगाहें झुका लीं। बाईस तेईस वर्ष का सुन्दर राजकुमार बड़ा भोला नजर आ रहा था। वह न जाने किस चिन्ता में डूबा हुआ था।

सुन्दरी ने दासियों को संकेत किया।

"अरे! यह इन्हें क्या हो गया?" एक दासी ने कहा।

"सौन्दर्य ने चेतना छीन ली है—" दूसरी मुस्कुरा कर बोली।

"जल्दी से गुलाब जल लाओ—" तीसरी बोली।

"क्या आवश्यकता है—" सुखपाल ने हँस कर कहा "मुस्कुरा कर देख भर लो चेतना लौट आयेगी।

"इनको देख कर तो लोग चेतना गंवाँ बैठते हैं।"

"तो क्या चेतना लौटाने वाला यन्त्र नहीं आता ?"

इतने में सुलेखा ने दासियों को संकेत किया और सब एक एक करके जाने लगीं। अन्त में सुलेखा जने के लिये उठी।

"आप क्यों जा रही हैं, बैठिये ना—" सुखपाल ने कहा।

"फिर मिलूँगी—" सुलेखा ने कहा और उठीं, मगर सुन्दरी ने उसका हाथ पकड़ लिया और धीरे से बोली।

"बैठो, तुम न जाओ।"

"मैं तुम लोगों के रंग में भंग नहीं डालना चाहती—" सुलेखा ने कहा।

"मेरी खातिर बैठिये—" सुखपाल ने कहा।

"क्या बैठूँ! आप भी मौन हैं और सुन्दरी भी चुप हैं।"

"दो अपरिचितों के मध्य थोड़ी देर तक—।"

"क्या तुम राजकुमार से प्रथम बार मिल रही हो ?" सुलेखा ने सुन्दरी से पूछा।

"नहीं तो—" सुखपाल बोल उठा।

"फिर अपरिचित कैसे हुए ?"

"मैं क्या जानूँ। उन्हीं से पूछिये—" सुखपाल हँस कर बोला।

"सुन्दरी लजाती है।"

"अच्छा !" सुखपाल ने व्यङ्ग किया "आप तो इस प्रकार कह रहीं हैं जैसे मैं इन्हें जानता ही नहीं।"

सुखपाल के स्वर भरे हुए व्यंग को सुन्दरी भी समझ गई। वह

तिलमिला कर बोली।

"आप क्या जानते हैं ?"

"बहुत कुछ।"

"मैं भी तो सुनूं।"

"यही कि मेरे सामने आपकी यह लज्जा और यह खामोशी केवल एक दिखावा है।"

सुलेखा कुछ कहने ही जा रही थी कि सुन्दरी ने उसे रोक दिया और तीव्र स्वर में बोली।

"क्षमा कीजिये! मैं इस प्रकार की बातें सुनना पसन्द नहीं करती।"

"मेरे साथ रहना है तो पसन्द करना पड़ेगा ही—" सुखपाल ने कहा "इस समय तुमने अपना रंग मुझ पर जमाने के लिये लज्जा और खामोशी का यह ढोंग रचाया था और जब मैंने सच्ची बात कह दी तो तुम्हारी लाज हवा हो गई और टाँय टाँय बोलने लगी हो।"

सुखपाल ने यह बात कुछ इस ढंग से कही थी कि सुलेखा हँस पड़ी। सुन्दरी का क्रोध और बढ़ गया। वह कुछ कहने ही जा रही थी कि एक दासी खेमे में आई और कहने लगी।

"महारानी समरकला आ रही हैं।"

वह दोनों उठकर खड़ी हो गईं!

समरकला ने अन्दर आते ही सुखपाल को देखा और प्यार से उसके सर पर हाथ फेरने लगी, फिर उसने सुन्दरी की ओर देखा और समझ गई कि दोनों में कुछ खटपट हो गई, इसलिये मुस्कुरा कर सुखपाल से कहने लगी।

"मेरा विचार यह है कि तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न हुआ

होगा। वैसे यह सुन्दरी बड़ी चँचल हो गई है। इसकी बातों का बुरा न मानना।"

"जी नहीं। बुरा मानने का क्या सवाल है।"

सुन्दरी को यह बात भी बुरी लगी, मगर माँ के रहने के कारण कुछ न बोल सकी।

"तुम यहीं रहोगे—" समरकला ने कहा "और सुन्दरी! तुम्हारा यह कर्त्तव्य होगा कि तुम राजकुमार की आज्ञा न टालो।"

"एक आज्ञा मैं भी चाहता हूँ—" सुखपाल ने कहा "मैं अपने लिये अलग खेमें की व्यवस्था कर रहा हूँ ताकि सुन्दरी के मनोरञ्जनों में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।"

"अच्छी बात है—" समरकला ने कहा "अब मैं चलती हूँ। युद्ध की तैयारी करनी है।"

समरकला के जाने के बाद ही सुखपाल भी उस खेमे से बाहर निकल आया। सुन्दरी के पास ही उसका खेमा भी लगा दिया गया था। वह अपने खेमे में जाकर बैठ गया।

दो दिन बीत गये मगर वह सुन्दरी से मिलने नहीं गया। सुन्दरी भी अकड़ी बैठी रही।

सुलेखा भी सुन्दरी के पास ही रुक गई थी। उसे यह जान कर बड़ा दुख हुआ कि सुखपाल और सुन्दरी में तनाव पैदा हो गया है। वह चुपचाप उठी और सुखपाल के खेमे में पहुँच गई।

सुखपाल अकेला था। सुलेखा को देखते ही चौंक पड़ा और बोला।

"मुझे विश्वास था कि आप अवश्य आयेंगी।"

"इस विश्वास का कारण?" सुलेखा ने मुस्करा कर पूछा।

तिलमिला कर बोली।

"आप क्या जानते हैं?"

"बहुत कुछ।"

"मैं भी तो सुनूं।"

"यही कि मेरे सामने आपकी यह लज्जा और यह खामोशी केवल एक दिखावा है।"

सुलेखा कुछ कहने ही जा रही थी कि सुन्दरी ने उसे रोक दिया और तीव्र स्वर में बोली।

"क्षमा कीजिये! मैं इस प्रकार की बातें सुनना पसन्द नहीं करती।"

"मेरे साथ रहना है तो पसन्द करना पड़ेगा ही—" सुखपाल ने कहा "इस समय तुमने अपना रंग मुझ पर जमाने के लिये लज्जा और खामोशी का यह ढोंग रचाया था और जब मैंने सच्ची बात कह दी तो तुम्हारी लाज हवा हो गई और टाँय टाँय बोलने लगी हो।"

सुखपाल ने यह बात कुछ इस ढंग से कही थी कि सुलेखा हँस पड़ी। सुन्दरी का क्रोध और बढ़ गया। वह कुछ कहने ही जा रही थी कि एक दासी खेमे में आई और कहने लगी।

"महारानी समरकला आ रही हैं।"

वह दोनों उठकर खड़ी हो गईं!

समरकला ने अन्दर आते ही सुखपाल को देखा और प्यार से उसके सर पर हाथ फेरने लगी, फिर उसने सुन्दरी की ओर देखा और समझ गई कि दोनों में कुछ खटपट हो गई, इसलिये मुस्कुरा कर सुखपाल से कहने लगी।

"मेरा विचार यह है कि तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न हुआ

होगा। वैसे यह सुन्दरी बड़ी चँचल हो गई है। इसकी बातों का बुरा न मानना।"

"जी नहीं। बुरा मानने का क्या सवाल है।"

सुन्दरी को यह बात भी बुरी लगी, मगर माँ के रहने के कारण कुछ न बोल सकी।

"तुम यहीं रहोगे—" समरकला ने कहा "और सुन्दरी! तुम्हारा यह कर्त्तव्य होगा कि तुम राजकुमार की आज्ञा न टालो।"

"एक आज्ञा मैं भी चाहता हूँ—" सुखपाल ने कहा "मैं अपने लिये अलग खेमें की व्यवस्था कर रहा हूँ ताकि सुन्दरी के मनोरञ्जनों में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।"

"अच्छी बात है—" समरकला ने कहा "अब मैं चलती हूँ। युद्ध की तैयारी करनी है।"

समरकला के जाने के बाद ही सुखपाल भी उस खेमे से बाहर निकल आया। सुन्दरी के पास ही उसका खेमा भी लगा दिया गया था। वह अपने खेमे में जाकर बैठ गया।

दो दिन बीत गये मगर वह सुन्दरी से मिलने नहीं गया। सुन्दरी भी अकड़ी बैठी रही।

सुलेखा भी सुन्दरी के पास ही रुक गई थी। उसे यह जान कर बड़ा दुख हुआ कि सुखपाल और सुन्दरी में तनाव पैदा हो गया है। वह चुपचाप उठी और सुखपाल के खेमे में पहुँच गई।

सुखपाल अकेला था। सुलेखा को देखते ही चौंक पड़ा और बोला।

"मुझे विश्वास था कि आप अवश्य आयेंगी।"

"इस विश्वास का कारण?" सुलेखा ने मुस्कुरा कर पूछा।

"आपकी याद !"

"मैं समझी नहीं ?"

"मैं आज तक बाहर नहीं निकला, न गाना सुना न नृत्य देखा, क्या आप बता सकती हैं कि मैं क्या करता रहा ?"

"मैं क्या जानूं !"

"बस मैं आपको याद करता रहा।"

"मुझे याद कर रहे थे !" सुलेखा ने आश्चर्य से पूछा "वह क्यों ?"

"काश मैं आपको समझा सकता। आपका नाम सुना था, आपके गुण सुने थे, मगर जब से देखा है, ऐसा लगता है जैसे हम दोनों का जन्म जन्मान्तर का साथ हो !"

सुलेखा घबड़ा गई। उसे आशा नहीं कि सुखपाल इस प्रकार की बातें उससे करेगा। उसने बात बदल कर पूछा।

"आप सुन्दरी से मिलने नहीं गये ?"

"वह भी तो मुझसे मिलने नहीं आई।"

"आप उसके होने वाले पति हैं। अगर अभी से उसका दिल अपने हाथ में लेने का यत्न नहीं करेंगे तो आगे कैसे काम चलेगा।"

"होने वाला पति !" सुखपाल हँसा "आप भी कैसी बातें करती हैं, मैं किसी ऐसी लड़की से विवाह करने के बारे में सोच भी नहीं सकता जो मुझे अपना प्यार न दे सकती हो।"

'यह आप क्या कह रहे हैं ?"

"ठहरिये ! बताता हूँ—" सुखपाल ने कहा और अपने नेत्र बन्द कर लिये। कुछ क्षण बाद नेत्र खोले और कहा "आप सुन्दरी के खेमे में जाइये। वहाँ इस समय अन्दर जाने की किसी को आज्ञा नहीं

है, मगर आप किसी न किसी प्रकार अवश्य अन्दर चली जाइयेगा। फिर जो कुछ देखियेगा, उसके प्रकाश में जो फैसला चाहियेगा, कीजयेगा।"

सुलेखा वहाँ से उठकर सुन्दरी के खेमे की ओर वापस आई। सुखपाल ने ठीक ही कहा था कि किसी को अन्दर जाने की आज्ञा नहीं थी।

"राजकुमारी के पास कौन है?" उसने पहरेदार से पूछा।

"यह हमें नहीं मालूम—" उत्तर मिला "राजकुमारी जी ने बस यह आज्ञा दी है कि किसी को अन्दर न आने दिया जाये। शायद वह जादू जगा रही हैं।"

सुलेखा का माथा ठनका। वह अपने खेमे में आई। उसके और सुन्दरी के खेमों के मध्य केवल एक पर्दा पड़ा हुआ था मगर वह पर्दा इतना मोटा था कि कुछ दिखाई नहीं दे सकता था। उसने चाकू निकाला और धीरे धीरे पर्दे में सुराख बनाने लगी।

उसने झाँक कर सुन्दरी के खेमे में देखा और फौरन मुँह हटा लिया। उसके सारे शरीर में कम्पन उत्पन्न हो गया था, वह सोच भी नहीं सकती थी कि सुन्दरी ऐसी भी हो सकती है। वह कुछ क्षण तक सोचती रही, फिर दोनों हाथों से मुँह छिपा कर अपने बिस्तर पर गिर गई। वह अब सुखपाल से भी मिलने का साहस अपने अन्दर नहीं पा रही थी, क्योंकि वह सुखपाल से झूठ नहीं बोल सकती थी। उसके पूछने पर उसे सच्ची बात बतानी ही पड़ती।

वह रात बीत गई, दूसरा दिन भी बीत गया मगर सुलेखा अपने खेमे से बाहर नहीं निकली। दासियाँ आईं तो उसने उन्हें भी भगा दिया। वह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि उसे क्या हो गया है।

अगर सुन्दरी बुरी है या सुन्दरी और सुखपाल के मध्य तनाव पैदा हो गया है तो उसे क्यों परेशानी है ? वह सोचते सोचते फिर सो गई।

और अचानक उसकी नींद टूट गई। उसके मुख से चीख निकलने ही वाली थी कि उसका मुँह दबा दिया गया। वह उसकी सूरत भी न देख सकी जिसने उसे अपनी भुजाओं में जकड़ रखा था। वह स्वतंत्र होने के लिये मचलती रही, उसने उसकी भुजाओं में दाँत भी काट लिये मगर मुक्त न हो सकी। अब वह सच्चे दिल से अपने सतीत्व की रक्षा के लिये एक ऐसी अनदेखी शक्ति से प्रार्थना करने लगी, जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानती थी।

अचानक बन्धन ढीला पड़ गया और वह तड़प कर मुक्त हो गई। उसने देखा कि सुखपाल उस आदमी को पीट रहा है, जिसने उसे जकड़ रखा था। सुखपाल ने उसे उठाकर पटक दिया और उसके जबड़े पर घूँसे बरसाने लगा।

वह आदमी शीघ्र ही चेतना गँवा बैठा।

सुखपाल उसे छोड़ कर हट गया और सुलेखा की ओर देखने लगा जो खड़ी थर थर काँप रही थी।

"आप जानती हैं यह कौन है ?" सुखपाल ने पूछा।

"नन...नहीं।"

"इसे सुन्दरी ने यहाँ इसलिये भेजा था ताकि यह आपका सतीत्व लूटे और सुन्दरी ठीक समय पर यहाँ पहुँच आये।"

"मगर क्यों ?"

"बदला—" सुखपाल ने कहा "सुन्दरी को यह मालूम हो गया था कि आपने उसे बड़ी लज्जाजनक अवस्था में देख लिया है, इसलिये वह आपको भी उसी दशा में देखकर आपका मुँह बन्द करना चाहती

थी, अपना दिल टण्डा करना चाहती थी।"

"मगर आप यहाँ कैसे पहुँचे?"

"मुझे जादू से पता चल गया था। मैं जानता था कि सुन्दरी आप से जलती से, इसलिये मैंने जादू के पुतले बैठा दिये थे, जो आपके बारे में पल पल की खबरें मुझे देते रहते थे।"

"आपको मेरी इतनी चिन्ता क्यों है?"

"जिससे प्रेम हो जाता है उसकी चिन्ता भी करनी पड़ती है, उसके सुख दुख का ध्यान भी रखना पड़ता है।"

सुलेखा उत्तर देने ही जा रही थी कि धरती हिलने लगी। फिर धूयें की एक पतली सी रेखा दिखाई पड़ी और जब वह विलीन हुई तो वहाँ सुन्दरी खड़ी दिखाई पड़ी। उसका चेहरा क्रोध के कारण लाल हो रहा था। वह कड़क कर बोली।

"मुझे नहीं मालुम था कि तुम जो देखने में इतनी भोली हो मेरे मंगेतर पर इस प्रकार डोरे डालोगी।"

"यही तुम्हारी भूल है—" सुखपाल बोला "मैं तुम्हारा मंगेतर नहीं हूँ। मैं तुमसे घृणा करता हूँ।"

"और इससे प्रेम करते हो जो अनपढ़ है—" वह घृणा से बोली "क्या यह मुझसे अधिक सुन्दर है?"

"यह चाहे जैसे भी है मगर तुमसे अच्छी है। मैं इनसे प्यार करता हूं और अब जाकर तुम्हारी माता को बता देता हूँ कि मैं सुलेखा से व्याह करेने जा रहा हूँ।"

सुलेखा ने चाहा कि चीख कर इन्कार कर दे मगर शब्द अधरों तक आकर रह गये।

सुन्दरी सुख पाल की बात का उत्तर देने के बजाय सुलेखा पर

अगर सुन्दरी बुरी है या सुन्दरी और सुखपाल के मध्य तनाव पैदा हो गया है तो उसे क्यों परेशानी है ? वह सोचते सोचते फिर सो गई।

और अचानक उसकी नींद टूट गई। उसके मुख से चीख निकलने ही वाली थी कि उसका मुँह दबा दिया गया। वह उसकी सूरत भी न देख सकी जिसने उसे अपनी भुजाओं में जकड़ रखा था। वह स्वतंत्र होने के लिये मचलती रही, उसने उसकी भुजाओं में दाँत भी काट लिये मगर मुक्त न हो सकी। अब वह सच्चे दिल से अपने सतीत्व की रक्षा के लिये एक ऐसी अनदेखी शक्ति से प्रार्थना करने लगी, जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानती थी।

अचानक बन्धन ढीला पड़ गया और वह तड़प कर मुक्त हो गई। उसने देखा कि सुखपाल उस आदमी को पीट रहा है, जिसने उसे जकड़ रखा था। सुखपाल ने उसे उठाकर पटक दिया और उसके जबड़े पर घूँसे बरसाने लगा।

वह आदमी शीघ्र ही चेतना गँवा बैठा।

सुखपाल उसे छोड़ कर हट गया और सुलेखा की ओर देखने लगा जो खड़ी थर थर काँप रही थी।

"आप जानती हैं यह कौन है ?" सुखपाल ने पूछा।

"नन...नहीं।"

"इसे सुन्दरी ने यहाँ इसलिये भेजा था ताकि यह आपका सतीत्व लूटे और सुन्दरी ठीक समय पर यहाँ पहुँच आये।"

"मगर क्यों ?"

"बदला—" सुखपाल ने कहा "सुन्दरी को यह मालूम हो गया था कि आपने उसे बड़ी लज्जाजनक अवस्था में देख लिया है, इसलिये वह आपको भी उसी दशा में देखकर आपका मुँह बन्द करना चाहती

थी, अपना दिल ठण्डा करना चाहती थी।"

"मगर आप यहाँ कैसे पहुँचे?"

"मुझे जादू से पता चल गया था। मैं जानता था कि सुन्दरी आप से जलती से, इसलिये मैंने जादू के पुतले बैठा दिये थे जो आपके बारे में पल पल की खबरें मुझे देते रहते थे।"

"आपको मेरी इतनी चिन्ता क्यों है?"

"जिससे प्रेम हो जाता है उसकी चिन्ता भी करनी पड़ती है, उसके सुख दुख का ध्यान भी रखना पड़ता है।"

सुलेखा उत्तर देने ही जा रही थी कि धरती हिलने लगी। फिर धूयें की एक पतली सी रेखा दिखाई पड़ी और जब वह विलीन हुई तो वहाँ सुन्दरी खड़ी दिखाई पड़ी। उसका चेहरा क्रोध के कारण लाल हो रहा था। वह कड़क कर बोली।

"मुझे नहीं मालुम था कि तुम जो देखने में इतनी भोली हो मेरे मंगेतर पर इस प्रकार डोरे डालोगी।"

"यही तुम्हारी भूल है—" सुखपाल बोला "मैं तुम्हारा मंगेतर नहीं हूँ। मैं तुमसे घृणा करता हूँ।"

"और इससे प्रेम करते हो जो अनपढ़ है—" वह घृणा से बोली "क्या यह मुझसे अधिक सुन्दर है?"

"यह चाहे जैसे भी हैं मगर तुमसे अच्छी हैं। मैं इनसे प्यार करता हूं और अब जाकर तुम्हारी माता को बता देता हूँ कि मैं सुलेखा से व्याह करेने जा रहा हूँ।"

सुलेखा ने चाहा किचीख कर इन्कार कर दे मगर शब्द अधरों तक आकर रह गये।

सुन्दरी सुख पाल की बात का उत्तर देने के बजाय सुलेखा पर

झपटी और उसके केश मुट्ठी में जकड़ कर झटका देने ही जा रही थी कि सुखपाल ने उसे ढकेल दिया !

"तुम इसके लिये मुझसे लड़ोगे ?' वह दाँत पीस कर बोली।

"आवश्यकता पड़ी या ऐसा समय आया तो मैं सारी दुनियाँ से लड़ने के लिये तैयार हूँ।"

सुन्दरी कुछ नहीं बोली। अपमान की अनुभूति से सुलेखा के नेत्रों में आँसू आ गये और वह दोनों हाथ से अपना चेहरा छिपा कर रोने लगी।

अचानक सुन्दरी ने पैर पटका और प्रथम इसके कि सुखपाल जादू करे, सैकड़ों आदमी सुलेखा पर टूट पड़े और कुछ ने जबरदस्ती सुलेखा को उठा लिया।

"इसे रानी माँ के पास ले जाओ—" सुन्दरी ने कहा "उनसे कहना कि इस लड़की ने तुम्हारी बेटी के मंगेतर को छीनना चाहा था अतः इसे कारागार में बन्द कर दिया जाये।"

सुखपाल उन आदमियों से लिपटा हुआ था। उसने अवसर पाकर जादू किया और वह आदमी दूर जा गिरे। सुलेखा की चीखें अब तक उसके कानों में आ रही थीं। उसने एक बार सुन्दरी की ओर देखा और घृणा के साथ फर्श पर थूक दिया।

फिर वह खेमे से निकल कर अपने खेमे तक गया और घोड़े पर सवार होकर रानी समर कला की ओर चल पड़ा। उसका घोड़ा आँधी तूफान के समान उड़ता चला जा रहा था। वह स्मरण शक्ति के सहारे चला जा रहा था।

मगर घने जंगलों में प्रविष्ट होते ही उसे गति कम देनी पड़ी, क्योंकि यहाँ कई मार्ग थे और यह नहीं पता था कि कौन सा मार्ग

रानी समर कज्ञा के महल तक जाता है।

"पता नहीं वह लोग सुलेखा को किस मार्ग से ले गये है—" वह बड़बड़ाया।

"मैं बताऊँ ?" एक ओर से आवाज आई और एक आदमी धम से एक वृक्ष से कूदा। उसके नेत्र भूरे और रंग गोरा था।

— — — —

राजकुमार सुखपाल ने बड़े आश्चर्य से उस आदमी के चेहरे की ओर देखा और पूछा।

"तुम कौन हो ?"

"सामरी का चचा। कुछ लोग उसका बाप भी कहते हैं।"

"अरे! तुम भगवान सामरी का अपमान कर रहे हो और वह भी मेरे सामने।"

"केवल इसलिये कि तुम्हें मालूम हो जाये कि भगवान का पैदा किया हुआ आदमी कभी भगवान नहीं हो सकता।"

"तुम सनातन धर्मी हो ?"

"हाँ, और मुझे इस पर गर्व है।"

"तुम मुझे सुलेखा का पता बता सकते हो ?"

"अवश्य बताऊँगा, मगर एक शर्त है।"

"वह क्या ?"

"पहले कुछ दो, फिर बात करो। मैं मुफ्त में काम नहीं करता।"

सुखपाल ने झल्लाकर जेब से एक अशर्फी निकाली और उसके

आगे बढ़ा दी।

"तुम सुखपाल हो या दुखपाल। एक अशर्फी देते हुये लाज नहीं लगती। बड़े राजकुमार बने फिरते हो।"

सुखपाल ने झल्लाकर घोड़े को ऐंड़ दी, मगर उस आदमी ने पता नहीं क्या किया कि उसका घोड़ा पिछली टाँगों के बल अगली दोनों पर खड़ा होकर हिनहिनाने लगा। सुखपाल संभल न सका और नीचे गिर पड़ा।

"देखा तुमने! अगर उचित मूल्य दिया होता तो यह दण्ड न मिलता। अब भी अच्छा है कि कुछ निकालो और मैं तुम्हारा काम कर दूँ।"

सुखपाल कपड़े झाड़ता हुआ उठा और उस आदमी से लिपट गया।

"अरे अरे···चोट लग जायेगी—" उसने कहा और फुर्ती से उछल कर टाँग मारी। सुखपाल फिर धरती पर गिर पड़ा।

इस बार वह उठकर आश्चर्य से उस आदमी की ओर देखने लगा।

"तुम्हारा नाम क्या है?" उसने पूछा।

"मेरा नाम फिरंगी है।"

"तुम सन्त जालेन्द्र के शिष्य हो?"

"हां, मगर जब गुरू बूढ़ा हो जाये तो फिर शिष्य ही को गुरू समझना चाहिये।"

"तुम मेरी सहायता करोगे?" उसने पूछा "मैंने सुना है कि सनातन धर्मी बड़े दलालु होते हैं और दुखियों के काम आते हैं। मेरे साथ अन्याय हुआ है।"

"मैं जानता हूँ --" फिरंगी बोला "सुन्दरी तुम्हारी मंगेतर है और तुम सुलेखा से प्रेम करते हो।"

"तुम्हें कैसे पता चला?" उसने आश्चर्य के साथ पूछा।

"मैं वहाँ मौजूद था --" फिरंगी ने कहा "अब मुझे देर हो रही है। तुमसे केवल इतना कहना है कि सुन्दरी ने सुलेखा को कहीं नहीं भेजा है।"

"मगर मैंने अपनी आँखों से देखा था कि कुछ लोग उसे लिये हुये जा रहे हैं। इन्हीं का पीछा करता हुआ मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ।"

"यह सब तुम्हें धोखा देने के लिये था। सुन्दरी के आदमी यहाँ तक सुलेखा को लाने के बाद, दूसरे मार्ग से फिर सुन्दरी के पास पहुँच गये।"

"इसका ध्येय?"

"तुम सुलेखा की खोज में इधर उधर भटकते फिरो और सुलेखा तुम्हें न मिले।"

"विश्वास नहीं होता।"

"तुम राजकुमार हो कि पहरेदार!" फिरंगी बिगड़ कर बोला "अपने जादू की शक्ति से मालूम कर लो।"

सुखलाल ने सोचा कि वह भी कितना मूर्ख है। उसे पहले ही जादू की शक्ति से मालूम कर लेना चाहिये था।

"अच्छा भाई!" फिरंगी ने कहा "मैं तो चला। तुम अपने जादू की शक्ति से पता लगाते रहो।"

थोड़ी दूर जाने के बाद वह फिर मुड़ा "हाँ राजकुमार! तुमने मेरा पारिश्रमिक बहुत ही कम दियां था इसलिये विवश होकर तुम्हारे गले का हार निकाल लिया है, मगर नाराज न होना। यह हाथ की सफाई

आगे बढ़ा दी।

"तुम सुखपाल हो या दुखपाल। एक अशर्फी देते हुये लाज नहीं लगती। बड़े राजकुमार बने फिरते हो।"

सुखपाल ने झल्लाकर घोड़े को ऐंड़ दी, मगर उस आदमी ने पता नहीं क्या किया कि उसका घोड़ा पिछली टाँगों के बल अगली दोनों पर खड़ा होकर हिनहिनाने लगा। सुखपाल संभल न सका और नीचे गिर पड़ा।

"देखा तुमने! अगर उचित मूल्य दिया होता तो यह दण्ड न मिलता। अब भी अच्छा है कि कुछ निकालो और मैं तुम्हारा काम कर दूँ।"

सुखपाल कपड़े झाड़ता हुआ उठा और उस आदमी से लिपट गया।

"अरे अरे...चोट लग जायेगी—" उसने कहा और फुर्ती से उछल कर टाँग मारी। सुखपाल फिर धरती पर गिर पड़ा।

इस बार वह उठकर आश्चर्य से उस आदमी की ओर देखने लगा।

"तुम्हारा नाम क्या है?" उसने पूछा।

"मेरा नाम फिरंगी है।"

"तुम सन्त जालेन्द्र के शिष्य हो?"

"हां, मगर जब गुरु बूढ़ा हो जाये तो फिर शिष्य ही को गुरु समझना चाहिये।"

"तुम मेरी सहायता करोगे?" उसने पूछा "मैंने सुना है कि सनातन धर्मी बड़े दलालु होते हैं और दुखियों के काम आते हैं। मेरे साथ अन्याय हुआ है।"

"मैं जानता हूँ --" फिरंगी बोला "सुन्दरी तुम्हारी मंगेतर है और तुम सुलेखा से प्रेम करते हो।"

"तुम्हें कैसे पता चला ?" उसने आश्चर्य के साथ पूछा।

"मैं वहाँ मौजूद था —" फिरंगी ने कहा "अब मुझे देर हो रही है। तुमसे केवल इतना कहना है कि सुन्दरी ने सुलेखा को कहीं नहीं भेजा है।"

"मगर मैंने अपनी आँखों से देखा था कि कुछ लोग उसे लिये हुये जा रहे हैं। इन्हीं का पीछा करता हुआ मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ।"

"यह सब तुम्हें धोखा देने के लिये था। सुन्दरी के आदमी यहाँ तक सुलेखा को लाने के बाद, दूसरे मार्ग से फिर सुन्दरी के पास पहुँच गये।"

"इसका ध्येय ?"

"तुम सुलेखा की खोज में इधर उधर भटकते फिरो और सुलेखा तुम्हें न मिले।"

"विश्वास नहीं होता।"

"तुम राजकुमार हो कि पहरेदार !" फिरंगी बिगड़ कर बोला "अपने जादू की शक्ति से मालूम कर लो।"

सुखलाल ने सोचा कि वह भी कितना मूर्ख है। उसे पहले ही जादू की शक्ति से मालूम कर लेना चाहिये था।

"अच्छा भाई !" फिरंगी ने कहा "मैं तो चला। तुम अपने जादू की शक्ति से पता लगाते रहो।"

थोड़ी दूर जाने के बाद वह फिर मुड़ा "हाँ राजकुमार ! तुमने मेरा पारिश्रमिक बहुत ही कम दिया था इसलिये विवश होकर तुम्हारे गले का हार निकाल लिया है, मगर नाराज न होना। यह हाथ की सफाई

है, हो सके तो मेरी प्रशँसा करना। मैं फिर आऊँगा और फिर तुम्हारी सहायता करूँगा।"

सुखपाल ने तमाम बातें सुनीं मगर वह जादू करने में लीन था इसलिये कुछ नहीं बोला।

फिरंगी उसे वहीं छोड़ कर अपने पड़ाव की ओर चल पड़ा।

रात समाप्त हो रही थी।

तीन चार दिन से वह अपनी सेना की ओर नहीं गया था। एक भय तो इस बात का था कि लूट के माल में सन्त हिस्सा मांगेगे, दूसरे चित्रांगद को ओर से भी भय था इसलिये घूम फिर कर वह सुन्दरी ही के खेमे के आस पास रहा।

सुन्दरी ने इतना उचित प्रबन्ध किया था कि अब उसके खेमे में दाखिल होना फिरंगी के लिये असम्भव हो गया था अतः वह पर्दे की आड़ से ही सारी बातें सुना करता था और इसी तरह उसे सुलेखा और सुखपाल की कहानी भी मालूम हो गई थी। चूँकि सुलेखा को भोलापन और उसकी सादगी उसे पसन्द आई थी इसलिये उसने निश्चय कर लिया था कि वह हर हाल में सुलेखा की सहायता करेगा।

जब फिरंगी ने अपने पड़ाव में कदम रखा तो सवेरा हो गया था। चूंकि सब लोग उसे पहचानते थे, इसलिये कुछ उसे देख कर मुस्कुराने लगे। कुछ मुंह बनाने लगे और कुछ हाल चाल भी पूछने लगे।

फिरंगी सब को उत्तर देता हुआ अपने खेमे की ओर बढ़ता जा रहा था कि अचानक दस बारह आदमियों ने उसे पकड़ लिया।

"अरे छोड़ो। यह क्या असभ्यता है—" फिरंगी ने झल्ला कर कहा।

"हम विवश है फिरंगी साहेब ! सन्त जालेन्द्र ने आज्ञा दी है कि आप को इसी प्रकार लाया जाये।"

"मैं तो खुद ही उनके पास जा रहा था।"

"तो चलिये।"

"छोड़ो तब न चलूं।"

"यह नहीं हो सकता। सन्त जी हमें मार डालेंगे।"

फिरंगी समझ गया कि यह लोग नहीं मानेंगे इसलिये वह मौन हो गया और उसी प्रकार चलने लगा।

सन्त मसनद पर बैठे हुये थे। फिरंगी को देखते ही चहक कर बोले।

"आओ आओ ! क्या हाल है ?"

"आपका सम्मान करता हूँ गुरु देव वर्ना यह लोग इस प्रकार मुझे नहीं ला सकते थे।"

"इसमें क्या संदेह है—" सन्त ने कहा "तुमसे अधिक सुयोग्य और आज्ञाकारी शिष्य और कौन होगा।"

फिर सन्त ने संकेत किया और वह आदमी चले गये जो फिरंगी को पकड़ कर लाये थे।

"वह उल्लू का पट्ठा कहाँ है ?" सन्त ने पूछा ?

"कौन ?" फिरंगी ने पूछा।

"चित्राँगद।"

"देखिये गुरु !" फिरंगी बुरा मान कर बोला आप 'चित्राँगद को जो भी चाहे कहिये मगर उसे उल्लू का पट्ठा न कहाँ कीजिये आप नहीं जानते कि चित्रांगद का बाप मेरा गुरु है।"

"चुप बे भूरे ! अधिक जबान चलाई तो वह हाथ दूँगा कि दिन में

भी तारे दिखाई देने लगेगें।"

"दिखाई तो दे रहे हैं—" फिरंगी चहक कर बोला "आपके ललाट की शोभा का क्या कहना। तारों को छोड़िये मालूम होता है भाल पर चन्द्रमा चमक रहा है।"

फिरंगी का वाक्य पूरा होते ही सन्त ने कोड़ा उठाया।

"अरे बाप रे—" फिरंगी कण्ठ फाड़ कर चीखा।

"लाओ वह पेशवाज निकालो जो तुम सुन्दरी के यहां से लाये हो।"

"क्या आप उसे पहिनियेगा?" उसने पूछा।

"मारते मारते खाल गिरा दूँगा—" सन्त ने आंखे निकाल कर कहा "बड़ा चहक रहे हो। यह नहीं सोचते कि इस बुढ़ापे में तुम लोगों के कारण कितना दुख मुझे उठाना पड़ रहा है।"

"गुरु पिता समान तो होता ही है—" फिरंगी ने कहा।

"अबे गधे! मैं सुन्दरी के खेमे में प्रेमा के रूप में मौजूद था" सन्त ने कहा।

"मगर क्षमा कीजियेगा गुरु आपने बड़ा खराब गाना सुनाया था।"

"स्वर बदल और बिगाड़ कर गा रहा था बेटे! अगर अपनी आवाज में गाता तो लोग पहचान नहीं लेते।"

"अगर इतना ही सोच सकता तो आज सन्त जालेन्द्र न होता—" फिरंगी ने अपने मुंह पर थप्पड़ मारते हुये कहा।

"बातें न बनाओं—लाओ निकालो!"

फिरंगी ने कुछ सोचा और पेशवाज निकाल कर सन्त के सामने रख दिया।

सन्त ने उसे अपने थैले में रखा और आशिर्वाद देते हुये बोले।

"जीते रहो बेटा। क्यों न हो बुढ़ापे का सहारा जो हो।"

"बस गुरु देव। दया है कृपा है—" फिरंगी झुक कर सलाम करता हुआ बोला।

"तुम चतुराई करोगे अवश्य—"

"अब क्या है?" फिरंगी ने मुंह बना कर पूछा।

"पेशवाज तो दे दिया मगर आभूषण और अशर्फियाँ गायब कर दीं।"

"मैं बिलकुल झूठ कह रहा हूँ गुरु देव कि मेरे पास अब कुछ नहीं है।"

"तो सच बता दे।"

"आप पिटाई तो न कीजियेगा?"

"नहीं, मगर सच बोलना।"

"सच्ची बात तो यह है कि मैंने लाखों के गहने सुन्दरी से पुरस्कार में पाया है।"

"ला मुझे दे दे। मैं उसका मूल्य लगा कर तेरे नाम नकदी जमा करा दूँगा जो तेरे और तेरे बाल बच्चों के काम आयेगा।"

"आप बाल बच्चों की चिन्ता न कीजिये। भगवान पालन हार है।"

"अबे कहना मान ले! जमाना बड़ा खराब है। चोर उचक्के, जेब कतरे बहुत हो गये हैं। अगर रकम हाथ से निकल गई तो जीवन भर पछताता रहेगा। मेरे पास रख देगा तो जीवन भर वह सुरक्षित रूप से पड़े रहेंगे।"

"बस मुझी गरीब को लूटना है।" फिरंगी ने व्यंग किया "साहस हो तो जाइये और कोई ऐयारी करके सुन्दरी को लूट लीजिये।"

फिरंगी की यह बात सन्त को तीर के समान लगी। वह कुछ सोच कर मुस्कुराये, फिर उठ कर फिरंगी की पीठ थपथपाई और अकेले ही खेमे के बाहर निकल गये।

"सुनिये तो गुरुदेव! रूप तो बदल लीजिये—" फिरंगी भी पीछे दौड़ा।

"नहीं—" सन्त ने मुड़े बिना उत्तर दिया और आगे बढ़ते गये।"

फिरंगी अपनी भूल पर पश्चाताप करने लगा, फिर वह भी पीछे पीछे चला। उसे भय था कि कहीं सन्त किसी विपत्ति में न फँस जायें।

सन्त तेजी से कदम बढ़ाते हुये सुन्दरी के खेमे की ओर जा रहे थे।

खेमे के समीप पहुँचने पर उन्होंने भीतर जाना चाहा मगर परिहारों ने रोक दिया।

"जाओ! अपनी रानी से कह दो कि सन्त जालेन्द्र आया है।"

परिहारों ने सन्त को घूर कर देखा।

"अबे जाता है या दूँ खाने भर को—" सन्त ने मारने के लिये हाथ उठाया।

एक ने जो सन्त की विचित्र सूरत देखी और क्रोध में भरी हुई आवाज सुनी तो डर गया। सोचने लगा कि कौन अपने को विपत्ति में डाले। वह फौरन अन्दर चला गया। दूसरा वहीं खड़ा रहा।

रानी सुन्दरी का दरबार सजा हुआ था। जादूगर बैठे हुये थे और सुन्दरी कल रात में सुलेखा की गिरफ्तारी पर विवेचना कर रही थी।

"सरकार ! एक आदमी द्वार पर खड़ा है और आप से मिलना चाहता है। वह अपना नाम सन्त जालेन्द्र बताता है।"

सन्त का नाम सुनते ही सबके चेहरे पीले पड़ गये। खुद सुन्दरी भी बौखला गई, मगर दिल बड़ा करके उसने पूछा।

"क्या अकेला है?"

"जी हाँ!"

"क्या चाहता है?"

"आपसे मिलना।"

"जाओ, उसे भेज दो।"

सन्त अन्दर आये। वहाँ जितने लोग थे वह सब उनका विचित्र रूप देखते ही और अधिक बौखला उठे। सन्त ने सुन्दरी को सलाम किया और बोले।

"रानी सुन्दरी! क्या तुम जालेन्द्र को पहचानती हो?"

"नहीं।"

"यहाँ जितने लोग बैठे हैं, क्या इनमें से किसी ने जालेन्द्र का वास्तविक रूप देखा है? मेरा मतलब है उनकी असली सूरत?"

"हाँ—" कई सामन्तों ने खड़े होकर कहा।

सन्त अट्टहास करने लगे, फिर बोले "मैं जालेन्द्र हूँ ना?"

"हाँ—" उन्होंने कहा।

"रानी सुन्दरी! लाइये मेरा पुरस्कार दीजिये। मैंने कितनी सफाई से जालेन्द्र का रूप भरा है—" सन्त ने कहा "और यह भी कमाल है कि बड़ा से बड़ा जादूगर भी यह गलत प्रमाणित नहीं कर सकता कि मैं असली जालेन्द्र नहीं हूँ।"

"तो फिर तुम कौन हो?" सुन्दरी ने आश्चर्य के साथ

पूछा।

"एक ऐयार! जो आप का सेवक बन कर आपके शत्रुओं को पराजित करना चाहता है।"

सुन्दरी कुछ नहीं बोली।

'देखिये! आप भी धोखा खा गईं। मेरा दावा है कि आपने भी मुझे असली जालेन्द्र ही समझा था। आपको कम से कम यह तो सोचना चाहिये था कि जालेन्द्र इतना मूर्ख नहीं है कि इस प्रकार अकेला आप के खेमे में आकर अपनी गर्दन फँसवायेगा।"

सुन्दरी को अब इस बात का विश्वास हो गया कि यह व्यक्ति असली जालेन्द्र नहीं है, इस लिये वह मुस्कुरा कर बोली।

"मैं तुम्हारी योग्यता की प्रशंसा करती हूँ। सचमुच मैंने भी तुम्हें असली ही जालेन्द्र समझा था।"

"एक विशेषता मेरी और भी है—" सन्त ने कहा "अगर आप जादू की शक्ति से भी मालूम करना चाहेंगी तो यही पता चलेगा कि मैं ही असली जालेन्द्र हूँ, इस कारण कोई भी जादूगर मेरा भेद नहीं जान सकता था। यह गुण मुझे सामरी से मिला है।"

"क्या तुम भगवान सामरी का दर्शन कर चुके हो!"

"वह खुद मेरे दर्शन के लिये आते हैं—" सन्त बोले "अगर कहिये तो अभी बुला दूँ?"

"बुलाओ—" सुन्दरी ने उत्सुक होकर कहा।

"कुछ देर लगेगी—" सन्त ने कहा।

"हम प्रतीक्षा करेंगे।"

सन्त ने सिर पर माया पट डाल ली और गायब हो गये। उनके अचानक इस प्रकार गायब होने के कारण सब चकित हो उठे।

सन्त माया पट ओढ़े हुये रानी सुन्दरी की पीठ की ओर आये और स्वर बदल कर गर्जना की।

"सुन्दरी! तूने हमें क्यों याद किया है?"

आवाज इतनी गम्भीर और रोबदार थी कि सबने यही समझा कि भगवान सामरी सचमुच आ गये। वह जल्दी से धरती पर लेट गये। सुन्दरी थर थर कांपने लगी।

"मैं यह सब पसन्द नहीं करता! अपने सर उठाओ और ठीक से बैठो।"

सब जल्दी जल्दी कपड़े झाड़ते हुये बैठ गये।

"अपना रूप दिखाइये भगवन—" सुन्दरी ने कम्पित स्वर में कहा।

"नहीं!" सन्त इतनी जोर से दहाड़े कि सुन्दरी कुर्सी से उछल कर फर्श पर गिर पड़ी "तू हमें नहीं देख सकती! हमने तेरी सहायता के लिये अपना खास आदमी भेज दिया है। वह जालेन्द्र बन कर आया है। उसका सम्मान करो, उसे इनाम दो और जैसा वह कहे करो।"

"भगवन की जो आज्ञा।"

आवाज आनी बन्द हो गई। सन्त माया पट ओढ़े फिर उसी स्थान पर आकर खड़े हो गये जहाँ पहले खड़े थे। फिर उन्होंने माया पट हटा दिया।

अचानक उन पर दृष्टि पड़ते ही एक बार फिर वह सब बौखला गये।

"मैं उनके ही पास गया था, मगर वह क्रोध में मुझे वहीं छोड़ कर अकेले यहाँ चले आये मुझे आने में देर हो गई। भला उनका मैं

कैसे मुकाबिला कर सकता हूँ।"

"तुम सचमुच काम के आदमी हो—" सुन्दरी हर्षित होती हुई बोली "भगवान सामरी अभी आये थे। तुम्हारी बड़ी प्रशंसा कर रहे थे। मुझे तुमसे एक खास काम लेना है।"

इतना कह कर सुन्दरी ने संकेत किया। सब जादूगर उठ कर चले गये। जब कोई वहाँ नहीं रह गया तो सुन्दरी ने कहा।

"मैं तुमसे एक खास काम लेना चाहती हूँ।"

"कहिये ?"

"तुम किसी प्रकार राजकुमार सुखपाल को गायब कर दो।"

"यह कौन सी बड़ी बात है, मगर जो काम आप कर सकतीं हैं वह मुझसे क्यों कराना चाहती हैं ?"

"मैं उस पर कोई जादू करूँगी तो उसे पता चल जायेगा। इस लिये मैं तुमसे कह रही हूँ।"

"रानी जी! मैं एक गरीब आदमी हूँ। मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पालता हूँ।" सन्त ने हिचकिचा कर कहा।

"तुम इसकी चिन्ता न करो। मैं तुम्हें धनवान बना दूंगी।"

"आपकी जैसी आज्ञा—" सन्त ने कहा।

सुन्दरी ने अशर्फियों की एक थैली उठाई और उसे सन्त की ओर उछालकर बोली।

"यह तुम्हें पान खाने को दे रही हूँ। काम हो जाने पर इतना पुरस्कार दूँगी जितना कभी तुमने स्वप्न में भी न सोचा होगा।"

सन्त ने थैली उठाकर अपने झोले में रखी और वहाँ से निकल कर सुखपाल के खेमे की ओर बढ़े जो बिल्कुल बगल ही में था।

सुखपाल जंगल से वापस होने के बाद सुलेखा को तलाश करता

रहा, मगर केवल इतना ही पता चल सका कि सुन्दरी ने अपने जादू से उसे अपने ही खेमे में कहीं छिपा रखा है, मगर इतना शक्तिवान जादू था कि वह बेचारा उसका तोड़ नहीं कर सकता था। उसे सुन्दरी से इतनी घृणा हो गई थी कि वह सुन्दरी से मिलने नहीं भी गया और जब सुन्दरी खुद उससे मिलने आई तो उसने मिलने से इन्कार कर दिया। वह अपने खेमे में अकेला लेटा हुआ सुलेखा के बारे में सोच रहा था।

उसी समय सन्त प्रविष्ट हुये। उनके विचित्र रूप और बेढंगे डील डौल को देखकर वह घबड़ा गया।

"कौन हो तुम और बिना आज्ञा अन्दर कैसे आ गये?" उसने पूछा।

सन्त उत्तर देने के बजाय उसे देखने लगे। उसका चौड़ा ललाट भोला चेहरा और विशाल नेत्र और स्वभाव में सादगी ने उन्हें बहुत प्रवाहित किया।

"उत्तर क्यों नहीं देते?" सुखपाल ने तीव्र स्वर में कहा।

"उत्तर तो ऐसा देता कि दिन में तारे दिखाई देने लगते। मगर तुम्हारे रूप, तुम्हारे भोलेपन और सादगी पर दया आ गई।"

"अच्छा!" सुखपाल हंस पड़ा "अब तुम्हारे जैसे लोग भी इस योग्य हो गये हैं कि उन्हें सुखपाल पर दया आने लगी है···खैर अपना नाम बताओ?"

"नाम सुनना चाहते हो तो कुछ नजराना दो।"

"अरे!" सुखपाल ने चौंकते हुये कहा "इसी स्वर में फिरंगी साहेब ने भी मुझसे बात की थी। मुझे तुम उन्हीं के भाई बन्द जान पड़ते हो।"

"भाई बन्द नहीं, मैं उस भूरे का बाप हूँ।" सन्त ने कहा।

"मगर आप तो एशिया के रहने वाले जान पड़ते हैं और फिरंगी—।"

"तुम नहीं जानते—" सन्त ने बात काटी "बाप दो प्रकार के होते है।"

"यह सूचना मेरे लिये नई है।" सुखपाल फिर हँस पड़ा।

"इसी प्रकार हजारों बातें मालूम होंगी—" सन्त ने कहा "एक बाप वह होता है जो सन्तान पैदा करने के बाद समझ लेता है कि उसका कर्त्तव्य पूरा हो गया, और दूसरा बाप वह होता है जो सन्तान पैदा तो नहीं करता। मगर एक चतुर माली के समान बुराइयों की डाली पत्तियाँ छाँटता रहता है। अपने परिश्रम और उपदेशों तथा आदर्शों का फूल लगाता है। ऐसे लोगों को संसार वाले गुरू कह कर पुकारते है, मगर सच पूछो तो उनका स्थान पिता से भी ऊँचा होता है।"

"तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि आप फिरंगी के गुरू हैं?"

"हाँ—" सन्त ने कहा।

"अर्थात् सन्त जालेन्द्र?"

"हाँ।"

सुखपाल ने जल्दी से उठ कर उनका स्वागत किया, फिर बोला।

"मगर मैं कैसे विश्वास कर लूँ कि आप ही सन्त जालेन्द्र हैं?"

"इस प्रकार?" सन्त ने कहा और थैले से एक गुड़िया निकाल कर उसका पेट दबाया।

"क्रि याँव।" की आवाज निकली और साथ ही उसके मुँह से बेहोशी का चूर्ण निकल कर सुखपाल की नाकों में चला गया। उसने दो तीन बार छींका और फिर लड़खड़ा कर गिर पड़ा।

सन्त कुछ क्षण बैठे मुस्कुराते रहे, फिर उन्होंने उसके चेहरे पर शीतल जल छिड़का। वह अँगड़ाई लेता हुआ उठ बैठा और फिर खड़ा हो गया।

"घबड़ाओ नहीं—" सन्त ने मुस्कुरा कर कहा "अब तो शायद तुम्हें विश्वास हो गया होगा कि मैं कौन हूँ!"

"जी हाँ—" सुखपाल ने अपने नेत्र मलते हुये कहा "यह मेरा सौभाग्य है कि आपने स्वयं दर्शन दिये, वर्ना मैं स्वयं आपकी सेवा में उपस्थित होने वाला था। इसका कारण सुन लीजिये।"

सुखपाल ने सुन्दरी और सुलेखा की सारी कहानी सुनाने के बाद कहा।

"सन्त जी! मेरे ही कारण सुलेखा पर जुल्म रहा है। उसे बचाना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।"

"लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है कि सुलेखा सुन्दरी से भी खराब निकले?"

"नहीं सन्त जी!" सुखपालजल्दी से बोला "वह इतनी भोलीऔर भली है कि मैं कह नहीं सकता। वह बेचारी तो जादू भी नहीं जानती।"

"अच्छा! मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, मगर तुम्हें कुछ कष्ट सहन करने पड़ेंगे।"

"आप जो भी आज्ञा देंगे उसका पालन करूँगा।"

"सुन्दरी पर मेरा रंग जम गया है।"

"क्या वह जानती है कि आप ही सन्त जालेन्द्र हैं?"

"नही! वह मेरा कोई नाम नहीं जानती। मैं उससे इसी रूप में मिला था। मैंने उसे विश्वास दिला दिया है सामरी ने मुझे जालेन्द्र का रूप दिया है। सुन्दरी ने तुम्हें गिरफ़्तार करने के लिये भेजा है।"

"तो क्या आप मुझे गिरफ्तार करेंगे?" सुखपाल ने चौंक कर पूछा।

"हाँ, नीति यही कहती है।"

"फिर उसके बाद क्या होगा?"

"लड़का होगा और तुम्हें भाई कहेगा—" सन्त झल्ला उठे "पता नहीं किसने तुम्हें राजकुमार बना दिया है।"

"क्षमा कीजियेगा! मैं यह पूछना चाहता था कि मुझे क्या करना होगा—" उसने लज्जित होते हुये पूछा।

"तुम सुन्दरी पर यह प्रकट करना कि तुमको मुझसे कोई मतलब नहीं है, मगर जब मेरी ओर से संकेत पाना तो सुन्दरी से प्रेम करना आरम्भ कर देना।"

"यह मुझसे नहीं होगा।"

"मैं सच्चा प्रेम करने को नही कह रहा हूँ, बस बनावटी प्रेम करना।"

सुखपाल मौन हो गया, सन्त ने उसे फिर बेहोश किया और अपने थैले में रख कर सुन्दरी के पास चले आये।

सुन्दरी ने जब सन्त को खाली हाथ देखा तो मुँह बना कर बोली।

"मुझे तो तुम जबानी ही तीस मार खाँ जान पड़ते हो।"

"ऐसी बातें फिर मुझसे न कहियेगा—" सन्त बिगड़ उठे।

"एक बात तुमसे कहा वह भी तुम न कर सके, फिर क्या कहूँ!"

"यह आपने कैसे समझ लिया कि मैंने आप का काम नहीं किया?"

"तो क्या तुम उसे गिरफ़्तार कर लाये हो?"

"जी हाँ।"

"कहाँ है?" सुन्दरी ने उत्सुकता प्रकट की।

"इतना बड़ा शिकार इतनी सरता से आपके सामने प्रस्तुत नहीं कर सकता।"

"क्या चाहते हो?"

"अपना इनाम।"

"जो माँगोगे दूँगी।"

"तो फिर कुछ दीजिये।"

सुन्दरी ने अपने हाथों के कंगन, गले के हार तथा बुन्दे उतार कर फेंक दिये, सन्त ने झुक कर उसे सलाम किया और कहने लगे।

"इन्हें बेचने में बड़ा समय लगेगा, कुछ नगदी मिले तो काम चले।"

सुन्दरी ने एक दासी को आज्ञा दी। वह थाल भर कर अशर्फियाँ ले आई। सन्त ने सारा सामान उठा कर अपने थैले में रख लिया। सुन्दरी चौंक कर बोली।

"अरे! अशर्फियाँ क्या हुईं? तुमने उन्हें कहाँ रखा?"

"यह मेरी ऐयारी है! फिर कभी बतलाऊँगा। अब थोड़ी देर के

लिये आप सब इस खेमे से हट जाइये।"

"क्यों?"

"मैं जादू की शक्ति से सुखपाल को आपके सामने हाजिर करूँगा।"

सुन्दरी हट गई।

सन्त ने अपने जादुई थैले से सुखपाल को निकाला और फर्श पर लिटा दिया।

"आइये रानी जी—" सन्त ने आवाज दी।

सुन्दरी जो बगल वाले खेमे में टहल रही थी आवाज सुनते ही चली आई। सुखपाल को देखते ही वह खुशी से पागल हो उठी। उसने सन्त के गले में भुजायें डाल दीं और कहने लगी।

"मैं अब तुम्हीं से विवाह करूँगी।"

"ऐसा अनर्थ न कीजियेगा—" सन्त पीछे हटते हुये बोले "मेरी बीवी सुन लेगी तो तो आपको मार डालेगी। वह बड़ी जालिम औरत है।"

"संसार की कोई औरत मेरा मुकाबिला नहीं कर सकती! मैं ही उसे मार डालूँगी—" सुन्दरी ने कहा और सन्त की ओर बढ़ी। वह उन्हें प्यार करने जा रही थी।

"अरे बाबा मैं बूढ़ा आदमी आपके योग्य नहीं हूँ।"

"कौन तुम्हें बूढ़ा कहता है। तुम जवानों से अच्छे हो। कम से कम विराट से तो तुम्हारी अवस्था कम ही है।"

सन्त ने जब देखा कि सुन्दरी ने लाज शर्म सब त्याग दी है तो पहले वह बहुत घबड़ाये फिर मायापट ओढ़ कर गायब हो गये।

"कहाँ गये मेरे प्यारे!" सुन्दरी ने विचित्र स्वर में आवाज दी

"आज मैं सुखपाल के सामने तुमको जी भर कर प्यार करूँगी ताकि वह खूब जले।"

सन्त कुछ नहीं बोले। वह चक्कर काट कर सुन्दरी के पीछे आये और स्वर बदल कर बोले।

"मूर्ख लड़की! तूने मेरे भेजे हुये आदमी के साथ प्रेम करना चाहा है अगर फिर ऐसी गलती की तो मैं उसे सदा के लिये तेरे पास से हटा लूँगा!"

सुन्दरी समझी कि यह आवाज सामरी की है। उसने हाथ जोड़ दिये और सर झुका कर बोली।

"उसे भेज दीजिये भगवन! अब ऐसी भूल न होगी।"

सन्त फिर अपने स्थान पर वापस आये और मायापट उतार कर प्रकट हो गये।

"यह बताइये कि आपने सुखपाल को क्यों मँगवाया है?" सन्त ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"मैं उसे कैद करूँगी।"

"कहाँ?"

"उसी स्थान पर जहाँ सुलेखा कैद है।"

"वहाँ क्यों?"

"इसलिये कि दोनों एक दूसरे के समीप रह कर भीएक दूसरे से दूर रहें—" सुन्दरी ने कहा "मैं सुलेखा को सुखपाल के सामने सता सता कर मारूँगी।"

"क्या केवल इसलिये कि आप सुखपाल को प्राप्त कर सकें?"

"हां।"

"क्या आप मेरी एक बात मानेंगी?"

"कहो ?"

"अधिक अच्छा तो यह होगा कि सुलेखा की ओर से सुखपाल के दिल में घृणा पैदा कराई जाये।"

"यह कैसे हो सकता है—"

"आप सुखपाल को मेरे साथ छोड़ दीजिये, मैं सब ठीक कर लूँगा।"

"मगर कैसे ?"

"अभी मैं यह नहीं बताना चाहता।"

"कुछ संकेत ही दो।"

"जब आप दोनों को एक स्थान पर रखेंगी तो दोनों में अवश्य प्रेम बढ़ेगा और आपके लिये उनके दिल में घृणा उत्पन्न होगी। अगर मैं वहाँ रहूँगा तो ऐसी चाल चलूँगा कि वह दोनों आपस ही में एक दूसरे से घृणा करने लगेंगे, फिर उस समय आप सुलेखा को मार डालियेगा।"

"अच्छी बात है—" सुन्दरी ने कहा "अब सुखपाल को होश में लाओ।"

"यह उचित नहीं होगा। जहाँ आप इसे कैद करना चाहती हैं वहीं इसे ले चलिये। फिर मैं इसे होश में लाऊँगा।"

"एक बात है—" सुन्दरी चिन्तित हो उठी।

"वह क्या ?"

"मैंने सुलेखा को जादुई कारागार में कैद कर रखा है, वहाँ तुम कैसे जाओगे ?"

"यह आप जानें।"

"सुन्दरी कुछ क्षण तक सोचती रही, फिर बोली।

"अच्छा चलो!"

फिर सुन्दरी ने थपकी दी! सन्त का सर चकराने लगा और उनके नेत्र बन्द होने लगे। जब उन्हें होश आया तो तो उन्होंने आंखें खोल कर देखा। वह एक विमान पर लेटे हुए थे। सुखपाल उनके पास ही पड़ा हुआ था। सुन्दरी मौन बैठी थी और विमान उड़ता चला जा रहा था।

सन्त उठकर बैठ गये। उन्होंने सुन्दरी को ध्यान पूर्वक देखा और बोले।

'आपने सुलेखा को जिसकी निगरानी में कैद कर रखा है वह कोई जादूगर है?"

"हाँ, वह एक औरत है। उसका नाम उन्मादी है। तुम उससे मिल कर बहुत प्रसन्न होगे।"

"क्या वह कोई बड़ी जादूगरनी है?"

"बहुत बड़ी! उसके फन्दे से कोई बच ही नहीं सकता।"

"तो क्या मैं भी उसी की कैद में रहूँगा?" सन्त घबड़ा कर बोले।

"तुम उसके महल से बाहर नहीं निकल सकोगे—" सुन्दरी नेकहा "हाँ, उसके अन्दर जहाँ चाहो बिना रोक टोक घूम फिर सकते हो। मैं उससे कह दूंगी।"

"और सुखपाल?"

"सुलेखा के समान वह भी अपने स्थान से हिल डोल नहीं सकेगा।"

"आप उन्मादी को आदेश दे दीजियेगा कि जब मैं उससे कहूँ, तब वह सुखपाल को मुक्त कर देगी।"

"क्यों?"

'देखिये! अगर आपको मुझ पर सन्देह है तो फिर मुझे आज्ञा

दीजिये मैं अपने घर चला जाऊँ, और अगर मुझ पर विश्वास है तो फिर आपका काम उसी दशा में हो सकता है जब मेरे इच्छानुसार कार्य किया जावे।"

चूंकि सुन्दरी पर सन्त का रंग जम गया था इसलिये वह जल्दी से बोली।

"नाराज क्यों होते हो। तुम जो चाहोगे वही होगा।"

थोड़ी देर के बाद विमान एक झटके के साथ रुका। यह स्थान बिल्कुल सुनसान था। सुन्दरी ने विमान से उतरते ही सन्त तथा सुखपाल को अलग हटाया/और विमान में आग लगा दी।

सन्त आश्चर्य के साथ देखते रहे। जब विमान जल कर राख हो गया तो वहाँ की धरती फटी और एक सुरंग का मुख दिखाई पड़ा।

"इसमें कूद जाओ—" सुन्दरी ने कहा।

"और यह दो मन की लाश?" सन्त ने सुखपाल की ओर संकेत करके पूछा।

"इसे उठाकर इसी में फेंक दो।"

"मर जायेगा।"

"नहीं—" सुन्दरी ने मुस्कुरा कर कहा।

सन्त कुछ देर तक सोचते रहे, फिर सुखपाल को उठा कर सुरङ्ग के मुँह में छोड़ दिया। धम की आवाज आई।

"वह तो मर गया—" सन्त घबड़ा कर बोले "कदाचित अब मेरी बारी है।"

"तुम कदाचित डर रहे हो—" सुन्दरी ने हँस कर कहा और वह भी कूद पड़ी।

"आ जाओ—" आवाज आई "अब तुम्हें डरना नहीं चाहिये।"

"आता हूँ—" सन्त ने कहा और कूद गये।

जब सन्त के कदम जमीन से लगे तो उन्हें ऐसा लगा जैसे धरती

के बजाय रबर का गद्दा हो! वह उछले और जब आंखें खुलीं तो सुन्दरी खड़ी मुस्कुरा रही थी।

उसने हँस कर ताली बजाई।

एक काला कलूटा आदमी प्रकट हुआ! सुन्दरी ने सुखपाल की ओर संकेत किया। उसने सुखपाल को उठाकर कन्धे पर लादा। सुन्दरी सन्त के साथ आगे बढ़ी। नौकर पीछेपीछे चल रहा था।

थोड़ी दूर चलने के बाद दीवारें दिखाई देने लगीं। सुन्दरी ने फिर ताली बजाई। सामने वाली दीवार में एक द्वार प्रकट हुआ। जब यह लोग द्वार के समीप पहुँचे तो वह अपने आप खुल गया। यह लोग अन्दर प्रविष्ट हुए तो सामने एक सुन्दर उपवन दिखाई पड़ा। फूलों के एक कुंज में एक औरत खड़ी थी। उसकी अवस्था पचीस से अधिक नहीं थी। रंग गोरा था, नेत्र काले और विशाल थे, शरीर पर एक लिबादा पड़ा हुआ था। चेहरा अत्यन्त सुन्दर था। वह जल्दी से आगे बढ़ी और झुक कर सुन्दरी को प्रणाम किया।

"अच्छी हो ना?" सुन्दरी ने मुस्कुरा पूछा।

"आपका आशीर्वाद है—।"

"यही उन्मादी हैं—" सुन्दरी ने सन्त से कहा।

"मगर देखने से तो प्रेमिका मालूम होती है—" सन्त ने कहा।

"यह कौन आदमी है राजकुमारी जी, जो आपके सामने पटर पटर बातें किये जा रहा है?" उन्मादी ने आश्चर्य से पूछा।

"ओह। मैं यह बताना तो भूल ही गई—" सुन्दरी ने कहा "यह भगवान सामरी के भेजे हुये खास आदमी है। सुखपाल को इन्होंने ही गिरफ्तार किया है। यह जब कहें सुखपाल को मुक्त कर देना।"

"अच्छा—" उन्मादी ने कहा और सुखपाल की ओर देखने लगी जिसे नौकर ने धरती पर रख दिया था।

"इसे होश में लाइये—" उसने सुन्दरी से कहा।

"यहां नहीं—" सन्त ने कहा "सुलेखा के सामने।"

सुन्दरी ने संकेत किया और उन्मादी इन लोगों को लिये हुये सुलेखा के पास आई। नौकर सुखपाल को उठाये हुये था सुलेखा सर झुकाये बैठी हुई थी। कपड़े मैले हो गये थे। बाल उरझे हुये थे। रोते रोते आंखे सूज गई थी। होठों पर पपड़ियां जमी हुई थी मगर इस उदासी ने उसे और सुन्दर बना दिया था।

सुन्दरी को देखते ही उसने घृणा के साथ मुंह घुमा लिया।

"लो! तुम्हारे प्रेमी को भी तुम्हारे पास पहुँचा दिया है—" सुन्दरी ने व्यंग भरे स्वर में कहा "इतनी प्यारी बहिन किसे मिलती है।"

"यह तो बताओ कि मैं ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो तुम मेरे पीछे पड़ गई हो—" सुलेखा ने कहा "अगर सुखपाल तुम्हें नहीं चाहता तो इसमें मेरा क्या दोष है।"

"यह सब मैं नहीं जानती—" सुन्दरी तनक कर बोली "एक म्यान में दो तलवारे नहीं रह सकतीं एक को टूटना ही पड़ता है इसलिये तुम्हें भी मर ही जाना चाहिये।"

"तो फिर मार डालो। कष्ट देने से तुम्हें क्या मिल जायेगा—"

सुन्दरी ने उत्तर देने के बजाय सन्त से कहा।

"अब सुखपाल को होश में लाओ।"

सन्त ने सुखपाल के चेहरे पर पानी छिड़का। सुखपाल उठकर बैठ गया और आंखे फाड़ फाड़ कर चारों ओर देखने लगा। जब उसकी आंखे उन्मादी से टकराई तो उसे ऐसा लगा जैसे उसके शरीर की सारी

शक्ति क्षीण हो गई हो।

और जब सुखपाल और सुलेखा की निगाहें मिलीं तो दोनों चीख पड़े।

उसी समय कई बड़े बड़े पक्षी उड़ते हुये आये और वह सुलेखा के पूरे शरीर पर चोंचे मारने लगे। सुलेखा केवल चीखती रही। उसके नेत्रों से आंसू गिरते रहे मगर न उसके हाथ उठ सकते थे न शरीर हिल डोल सकता था।

सन्त के लिये यह हृदय विदारक दृश्य असहनीय हो उठा उनका दिल चाहा कि सुन्दरी का गला मरोड़ डाले मगर यह नीति के विरुद्ध था इसलिये खून का घोंट पीकर रह गये और जल्दी से बोले।

"अब यह सब रहने दीजिये। मैं सब ठीक कर लूँगा।"

सुन्दरी ने उन्मादी की ओर देखा। उन्मादी ने अपने हाथों को हिलाया और पक्षी गायब हो गये।"

"सुनो सुखपाल!" सुन्दरी ने बड़े कर्कश स्वर में कहा "अगर तुम अपने हृदय से सुलेखा का विचार निकाल दो और मेरे साथ विवाह करने पर तैयार हो जाओ तो मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगी, वर्ना इसी प्रकार कैद में सड़ा सड़ा कर मार डालूंगी।"

"अगर मैं तुम्हारी बात मान लूँ तो क्या सुलेखा को भी मुक्त कर दोगी?" सुखपाल ने पूछा।

"यह असम्भव है! मैं केवल इस बात की प्रतीक्षा कर रही हूँ कि महारानी समरकला अपना जादू जगा लें। उसके बाद ही सुलेखा कत्ल कर दी जायेगी—" सुन्दरी ने कहा।

सुखपाल ने कुछ कहना चाहा, मगर सुन्दरी ने हाथ के संकेत से रोकते हुए कहा!

"निर्णय कर लेना! सोच विचार के लिये अभी काफी दिन पड़े हैं। मौत और जिन्दगी दोनों तुम्हारे हाथ में हैं, जिसे चाहो पसन्द

कर सकते हो।"

सुखपाल और सुलेखा चीखते ही रहे, मगर सुन्दरी सन्त तथा उन्मादी को लेकर वहाँ से चल दी। मार्ग में उसने मुस्कुरा कर उन्मादी से कहा।

"क्यों जी! तुम्हारे प्रेमी से कब मिलना होगा?"

"राजकुमारी जी!" उन्मादी ने बुरा मानते हुये कहा "मैं आपका बहुत सम्मान करती हूँ।"

सन्त की समझ में नहीं आया कि इस हँसी की बात से उन्मादी का चेहरा क्यों विकृत हो गया। वह आश्चर्य से सुन्दरी की ओर देखने लगे। सुन्दरी मुस्कुरा रही थी। वह सन्त को चकित देख कर हँस पड़ी, फिर बोली।

"वास्तव में उन्मादी का यह विचार है कि उनके प्रेमी पर संसार की हर औरत आशिक हो सकती है, इसीलिये वह उसे किसी को नहीं दिखातीं, मगर चूंकि तुम्हें यहीं रहना है इसलिये कभी न कभी उस सुन्दर युवक को देख ही लोगे।"

इतना कह कर सुन्दरी धरती पर पैर जमा कर ऊपर की ओर उछली और वायु मण्डल में ऊपर उठती चली गई। यहाँ तक निगाहों से ओझल हो गई।

सन्त जालेन्द्र एक पत्थर पर बैठे अपना सर खुजा रहे थे। उन्मादी उनके लिये एक पहेली बन गई थी जो किसी प्रकार समझ में नहीं आ रही थी। न तो उसे संगीत से लगाव था न संसार की किसी

दूसरी वस्तुओं से दिलचस्पी थी। वह जब भी उन्मादी के बारे में पूछने यही उत्तर मिलता कि वह अपने प्रेमी के पास है।

सन्त जालेन्द्र का कोई दाव नहीं लग रहा था। इस मामिले में सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि किसी नारी को इसकी आज्ञा नहीं थी कि वह उन्मादी के पास जाये। इसका मुख्य कारण यह था कि उन्मादी नहीं चाहती थी कि उसके प्रेमी पर किसी की नजर पड़े, इसलिये सन्त उसके पास किसी प्रकार का सन्देश भी नहीं भिजवा सकते थे।

"नारियों पर यह प्रतिबन्ध क्यों है?" सन्त ने एक दासी से अवसर पाकर पूछा।

"उन्मादी यह सोचती है कि जो नारी भी उसके प्रेमी को देख लेगी वह उस पर आसक्त हुए बिना नहीं रह सकती—" दासी ने उत्तर दिया।

"क्या वह इतनी ही सुन्दर है?"

दासी अट्टहास कर उठी, फिर बोली।

"पता नहीं — मैंने तो आज तक नहीं देखा।"

"पुरुष देख सकते हैं?"

"हाँ, उन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है।"

सन्त अभी दासी से बातें कर ही रहे थे कि सुखपाल ने उन्हें आवाज दी, सन्त पैर पटकते हुए आगे बढ़े और सुखपाल के समीप पहुँच कर गरज उठे।

"क्यों बुलाया है मुझे···क्या चाहते हो?"

सुखपाल ने निगाह उठा कर देखा, दासी जा रही थी, उसने धीरे से कहा।

"आप इतना एहसान और कर दीजिये कि मुझे सुन्दरी के पास कैद करवा दीजिये।"

"तुम यह जानते हो न कि मैं विना पारिश्रमिक लिये कोई काम नहीं करता ?"

"जानता हूँ, मगर यहाँ तो मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।" उसने विवशता से कहा।

"तो पुर नोट लिख दो—" सन्त ने दाँत निकाल कर कहा।

सुखपाल इतने दिनों में सन्त को भली प्रकार समझ चुका था। उसने पुर नोट लिख दिया। सन्त ने उसे जेब में रखा और उसे सान्त्वना देते हुए एक ओर निकल गये।

उन्मादी के यहाँ अधिकतर औरतें ही नौकर थीं, पुरुष बहुत ही कम थे। सन्त यह सोचते जा रहे थे कि कोई पुरुष मिले तो उसे उन्मादी के पास भेजें, कि इतने में वही दासी फिर दिखाई पड़ी, जिससे वह थोड़ी देर पहले बातें कर रहे थे। उन्होंने उसे आवाज दी और लपक कर उसके पास पहुँच गये।

"अब क्या है ?" दासी ने पूछा।

"राजकुमारी जी इस समय कहाँ होंगी ?"

"अभी वह अपने प्रेमी के यहाँ से आई हैं।"

"मैं उनके पास जा सकता हूँ ?"

"चलो, मैं तुम्हें पहुँचा दूँ—" दासी ने कहा।

वह सन्त को लिये हुए उन्मादी के पास आई। उन्मादी बड़े अभिमान से बैठी हुई पाँव हिला रही थी। सन्त को देखते ही कड़क कर बोली।

"क्यों आये हो ?"

"आपका शोभायमान मुखड़ा देखने—" सन्त ने जल्दी से कहा।

"मुखड़ा !" उन्मादी ने आश्चर्य से आँखें घुमाते हुए कहा "क्या मेरे माथे पर सींगें निकल आई हैं या मेरी नाक गायब हो गई है···

कौन सी खास बात हो गई है जो तुम मेरा मुखड़ा देखने आये हो ?"

सन्त ने इधर उधर देखा, दासी जा चुकी थी और अब वहाँ कोई नहीं था। उन्होंने बड़े रोमान्टिक ढंग से कहा।

"आपका ललाट चन्द्रमा के समान प्रकाशमान है। नेत्रों में शराब की मौजें लहरा रही हैं। कपोलों पर गुलनार की लालिमा है और अधर गुलाब की पंखुड़ियाँ हैं।"

"क्या उटाँग पटाँग बक रहे हो—" उन्मादी ने अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए कहा "मेरी आंखों में शराब कहाँ...हां थोड़ा सा कीचड़ अवश्य है उसे साफ कर देती हूँ—रह गई कपोलों और अधरों की बात तो मुझे तो कहीं फूल वूल नहीं दिखाई दे रहे हैं। तुम गुलाब की पँखुड़ियाँ किसे कह रहे हो ?"

"यही तो आप नहीं जानती कुमारी जी !" सन्त ने चापलूसी के साथ कहा "सौन्दर्य वास्तव में देखने वालों की नजरों में होता है। मेरी निगाहें आपको सुन्दर देखती हैं इसलिये मैं आपको सुन्दर समझता हूं।"

"तुमने उसे देखा है, जिसे मैं सुन्दर समझती हूँ और जिससे प्यार करती हूँ ?"

"इस इन्तजार में तो सर के बाल गायब हो गये—" सन्त ने कहा "एक नजर देख लेता तो जीवन की सारी साध पूरी हो जाती।"

"लेकिन लोग उसे देख कर मेरा अपमान करते हैं।"

"जो ऐसा करते हैं वह मूर्ख भी हैं और पागल भी !"

"यही तो मैं भी सोचती हूँ—" वह हर्षित होकर बोली "उतने सुन्दर युवक में दोष निकालना पागलपन नहीं तो और क्या है।"

"वास्तव में वह लोग जलते हैं; इसलिये ऐसा कहते हैं।"

"मगर मेरे प्रियतम में एक दोष है—" उन्मादी ने उदासी के साथ कहा।

"वह क्या ?" सन्त उत्सुक हो उठे।

"कभी कभी वह मेरे हाथ से भोजन नहीं करता और उदास रहने लगता है।"

"तो यह कौन सी बड़ी बात है—" सन्त ने अकड़ते हुए कहा "चुटकी बजाते यदि उसकी उदासी दूर न कर दूँ तो मेरे नाम पर कुत्ता पाल लीजियेगा।"

"तो फिर चलो—" उन्मादी उठती हुई बोली।

"मगर एक बात है कुमारी जी—" सन्त ने कहा।

"कहो ?"

"मैं बिना पारिश्रमिक लिये कोई काम नहीं करता।"

"तो क्या काम होने से पहले ही पारिश्रमिक दे दूँ ?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

"इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है—" सन्त भी मुस्कुरा उठे।

"मगर मेरा यह सिद्धान्त नहीं है।"

"तो जाने दीजिये ! काम हो जाने के बाद ही दीजियेगा।"

यह बातें करते हुए सन्त जालेन्द्र उन्मादी के साथ एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ सोने का एक बहुत बड़ा पिंजरा रखा हुआ था। उस पिंजरे में एक लंगूर बैठा था। लंगूर का चेहरा वनमानुष समान था। कान बड़े बड़े थे और उसकी पूँछ सलाखों के बाहर निकली हुई थी। पिंजरे के सामने एक अँगेठी रखी हुई थी जिसमें सुगन्ध फैलाने वाली वस्तुएँ जल रही थीं।

"यह है मेरा प्रियतम !" उन्मादी ने बड़ी गम्भीरता के साथ कहा।

सन्त खिलखिला कर हँस पड़े। उन्मादी यद्यपि ऐसी नहीं थी कि उसे सुन्दरी कहा या समझा जा सके, मगर सूरत शकल इतनी बुरी भी नहीं थी कि उसे कुरूपा कहा जाता। अच्छा भला नाक नक्शा था और फिर भी उसने एक लंगूर को अपना प्रियतम बना रखा था।

"तुम मेरी हँसी उड़ा रहे हो?" उन्मादी ने बिगड़ कर कहा।

"अरे! यह आप क्या कह रही हैं—" सन्त ने अपने दोनों कान पकड़ते हुये कहा "मेरी यह मजाल कि आपकी हँसी उड़ा सकूं।"

"फिर हँस क्यों रहे थे?"

"जब आदमी खुश होता है तो हँसी आ ही जाती है—" सन्त ने कहा।

"खुशी किस बात की?"

"मैंने अपनी जिन्दगी में इतना सुन्दर प्रियतम देखा ही नहीं।"

"सच कहते हो?"

"बिलकुल सच कह रहा हूँ—" सन्त ने कहा और पिंजरे के सामने खड़े होकर अपने दोनों हाथ उठाये, फिर तरंग में आ कर गुनगुनाने लगे।

"एक सूरत भी नहीं मिलती तेरी सूरत से!
हम जहाँ में तेरी तस्वीर लिये फिरते हैं!!"

"क्या तुमने संसार में इतना सुन्दर प्रियतम देखा है?"

"कभी नहीं—" सन्त ने जल्दी से कहा "मैंने संसार में एक से एक सुन्दर देखे हैं, मगर इस सा नहीं देखा। अगर कहिये तो इसी बात को गा कर सुना दूं।"

"तुम बड़े अच्छे आदमी हो—" उन्मादी हर्षित होती हुई

बोली "अब मुझे आशा हो गई है कि तुम मेरा काम अवश्य कर दोगे।"

लंगूर सर झुकाये बैठा था। उन्मादी को देख कर उसने एक बार सर उठाकर दाँत निकाले थे और खौंट्र खौंट्र की आवाजें निकालकर फिर सर झुका कर मौन हो गया था।

"देखो न! कितना उदास बैठा हुआ है—" उन्मादी ने कहा "किसी ने सच कहा है कि उदासी में सौन्दर्य और निखर आता है।"

"जी हाँ, इस समय बिलकुल राजकुमार लग रहा है।"

"क्या तुम इसे हँसा नहीं सकते?" उसने पूछा।

"क्यों नहीं—" सन्त ने जल्दी से कहे।

"तो फिर जल्दी से हँसा दो—" उसने विकल हो कर कहा।

सन्त तड़प कर आगे बढ़े। लंगूर की आँखों में आँखें डाल कर उन्होंने नथुने सिकोड़े, फिर होंठ ऊपर चढ़ाकर दाँत बाहर निकाले और लंगूरों के समान चीखने लगे।

लंगूर ने समझा कि शायद बहुत से लंगूर आ गये हैं। उसने अपने स्वभाव के अनुसार पिंजरे के सलाखों को अगले दोनो बाजुओं से पकड़ा और सर झटक झटक कर चीखने लगा।

"अरे! तुमने तो कमाल कर दिया—" उन्मादी तालियाँ बजा बजा कर उछलने लगी।

सन्त फौरन पलटे और झुक झुक कर उसे सलाम करने लगे।

"मान गई—" वह हंसती हुई बोली।

"यह आपकी दया है—" सन्त ने कहा "अगर इनाम भी मिल जाये तो इससे भी बड़ा कमाल दिखा सकता हूँ।"

"अवश्य इनाम मिलेगा।"

"तो दीजिये।"

"बोलो—क्या माँगते हो ?"

"आप सुखपाल को कैद से मुक्त कर दीजिये।"

"क्या मतलब ?" उन्मादी ने आंखें निकाल कर पूछा।

"मुक्त करने का यह अर्थ नहीं होगा कि आप उसे बिलकुल छोड़ दो दीजिये।"

"फिर ?"

"कुछ प्रतिबन्ध कम कर दीजिये।"

"जैसे ?"

"वह सुलेखा के पास जा सके, उससे बातें कर सके, महल की सीमा के अन्दर चल फिर सके, बस।"

"ठीक है। हम सुखपाल और सुलेखा दोनों को ही इस प्रकार की स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं—" उन्मादी ने कहा और अपने दोनों हाथ हवा में लहराने लगी।

"लेकिन कहीं राजकुमारी सुन्दरी नाराज न हो जायें ?" सन्त ने पूछा।

"नहीं, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, वह दोनों जीवन भर यहाँ से नहीं निकल सकते।"

सन्त खुशी के कारण उछलने लगे।

"मगर अब तुम्हें मेरे प्रियतम ही के पास रहना होगा।"

"अरे बाप रे, मैं तो मर गया।"

"क्यों !" उन्मादी ने फिर आँखें निकालीं "क्या तुम्हें इनके साथ रहना पसन्द नहीं ?"

"नहीं, यह बात नहीं है—" सन्त ने बात बिगड़ती देख कर जल्दी से कहा "वास्तव में मुझे डर लगता है।"

"किससे ?"

"अपने आपसे—" सन्त ने कहा "अगर मैं आपका प्रतिद्वन्दी बन गया और इनसे प्रेम करने लगा तो क्या होगा?"

उन्मादी हंसने लगी, फिर बोली।

"तुम इसकी चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी प्रतिद्वन्दता सहन कर लूँगी मगर किसी नारी की नहीं।"

"अच्छी बात है—" सन्त ने उदासी के साथ कहा।

"मैं दोनों को मुक्त करने जा रही हूँ, मगर तुम यहाँ से न हटना।"

उन्मादी के जाने के बाद सन्त अपना सर पीटने लगे और फिर वह सुलेखा और सुर्खपाल को बुरा भला कहने लगे, जिनके कारण आज उन्हें एक लंगूर के साथ समय व्यतीत करना पड़ रहा था।

अचानक उनकी पीठ पर तड़ाक से एक चाबुक पड़ा।

सन्त की आंखों में तारे नाच गये। वह झल्ला कर पलटे तो देखा कि लंगूर अपनी पूछ अन्दर खींच रहा है और उसके दाँत बाहर निकले हुये हैं। उन्होंने झल्ला कर कहा।

"सुन बे लंगूर! मैं तेरी पूँछ काट लूँगा बेटा! अपनी जात बिरादरी में तुम कटे कहलाओगे।"

अचानक लंगूर की पूछ फिर बाहर निकली और सन्त के सर पर पड़ी। सन्त तड़प कर भागे और कुछ दूर पर जा कर खड़े हो गये, फिर पलट कर वहीं से लंगूर को घूंसा दिखाने लगे। लंगूर ने फिर अपनी पूछ अन्दर कर ली।

"सुन बे!" सन्त ने गरज कर कहा "शायद तू मुझे नहीं जानता। मैंने बड़ों बड़ों की पूंछें काट ली हैं तेरी क्या औकात है। मेरा नाम जालेन्द्र है। समझे या नहीं।"

"मगर तुम बन्दरों के समान दूर से ही गीदड़ भभकी देरहे हो—" अचानक लंगूर ने आदमियों के स्वर में कहा।

"अरे बाप रे—"सन्त उछल पड़े "यह तो बोलता है।"

"यहाँ आओ?" लंगूर ने कहा।

"नहीं आऊंगा—"सन्त ने कहा "और बेटा! अब लो इनाम! बहुत पूँछ चलाना सीख गये हो।"

फिर उन्होंने अपनी जेब से एक डिबिया निकाली जिस में बेहोशी का भस्म भरा हुआ था! उन्होंने थोड़ा सा भस्म चुटकी में लेकर चाहा कि उड़ाये कि लंगूर बोला।

"किसी बेकस को ऐ बेदादगर मारा तो क्या मारा।
जो खुद ही मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा!"

"हाँय!" सन्त आँखे निकाल कर बोले "अबे दुम के साथ साथ जबान भी चलाता है।"

"वह तो मैं हँसी कर रहा था—" लंगूर ने कहा।

"तुम्हारी हँसी ने मेरी जान ही निकाल ली थी।"

"परीक्षा ले रहा था श्रीमान वैसे मैं बड़ा अभागा आदमी हूँ।"

"आदमी हो या लंगूर?"

"पहले सुना करता था कि लंगूर तरक्की करके आदमी बन गया मगर अब तो ऐसा लगता है जैसे आदमी प्रगति करके लंगूर बन जायेगा।"

"हाँय!" सन्त चकित हो उठे "क्या तुम दार्शनिक भी हो?"

"पहले बहुत कुछ था—" लंगूर ने ठण्डी साँस खीच कर कहा· मगर अब तो सचमुच लंगूर ही हूँ।"

"उन्मादी के सामने तो भीगी बिल्ली बने थे और अब टाँय टाँय बोल रहें हो इसका क्या कारण है?"

"यह बड़ी दुखभरी कहानी है फिर किसी दिन सुनाऊंगा।"

"हाँ, और उसके बाद कह गे कि इसके सुनने से बहुतों का भला होगा और फिर—"

"चुप हो जाओ—" लंगूर ने धीरे से कहा "वह आ रही है अब मैं तीन दिन तक नहीं बोलूंगा मगर तीसरे दिन रात में जब चन्द्रमा डूब जायेगा तब तुम मेरे पास आना तबमैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाऊंगा मुझे आशा है कि भगवान तुम्हारे हृदय में मेरे प्रति अवश्य दया उत्पन्न करेगा।"

सन्त मौन हो गये। लंगूर के मुख से भगवान का नाम सुनकर, वह सारा क्रोध भूल गये।

"सुखपाल और सुलेखा को मैं ने मुक्त कर दिया—"

"जी!" सन्त चौंक कर पलटे। सामने उन्मादी खड़ी थी। मगर सन्त को अब उनकी मुक्ति से उतनी दिलचस्पी नहीं रह गई थी जितनी लंगूर की कहानी सुनने की थी।

उन्मादी इतना कह कर चली गई और सन्त वहीं सर झुका कर बैठ गये।



सुखपाल को अचानक महसूस हुआ कि वह अपने स्थान से हिल डोल सकता है। उसने चारों ओर नजर दौड़ाई बहुत दूरी पर उसे उन्मादी दिखाई पड़ी जो अपने दोनों हाथ हवा में लहरा रही थी। वह समझ गया कि सन्त ने अपना वचन पूरा कर दिया। वह अपने स्थान से उठा और धीरे धीरे चलता हुआ सुलेखा के पास आया।

सुलेखा के चेहरे पर फैली हुई उदासीनता को देखकर उसे विश्वास कर लेना पड़ा कि वह बेचारी अभी तक कैद में है। वह उसी के पास बैठ गया।

दूर दूर तक सन्नाटा था उन्मादी भी न जाने किधर चली गई थी चारों ओर घोर निस्तब्धता छाई हुई थी।

"तुम बहुत उदास हो सुलेखा—" सुखपाल ने भर्राये हुये स्वर में कहा।

"मैं हर्षित भी कैसे हो सकती हूँ—" सुलेखा ने ठण्डी साँस खींच कर कहा। "जीवन ने कोई खुशी नहीं दी घर छूटा अपने पराये छूटे और बदले में मिली यातनाये दुख और परेशानियाँ।"

"लेकिन अगर हमारा प्यार सच्चा है तो हम सफल होकर ही रहेंगे।"

"प्यार!" सुलेखा चौंक पड़ी "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आप क्या कह रहे हैं!"

"तुम इतनी भोली हो यह मुझे नहीं मालूम था।" सुखपाल ने मुस्कुरा कर कहा 'तुम्हारे प्रेम में फँस कर मैंने सुन्दरी को छोड़ा घर बार छोड़ा जङ्गलों में मारा मारा फिरता रहा और तुम हो कि यह भी नहीं जानती कि प्यार और प्रेम क्या होता है।"

"आज आप स्वतंत्र कैसे है?" अचानक सुलेखा ने पूछा।

"सन्त जालेन्द्र की कृपा से।"

"सन्त जालेन्द्र!" वह फिर चौंकी "वह यहाँ कहाँ!"

"अरे! तुम यह भी भूल गई। मेरे और तुम्हारे लिये सन्त ने इतने दुख झेले...और अब वह यहाँ आये हैं हमें मुक्त कराने!"

"मगर वह तो सनातन धर्मी है!"

"हाँ और मैं ने भी सनातन धर्म स्वीकार कर लिया है और तुम्हें भी यही परामर्श दूँगा कि तुम भी सनातन धर्मी बन जाओ।"

सुलेखा मौन हो गई। उसका सर झुक गया था और ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी गहन चिन्ता में हो।

"क्या तुम मुझ से नाराज हो ?" सुखपाल ने पूछा ।

"नहीं तो—" सुलेखा ने सर उठाकर कहा ।

"फिर बोलती क्यों नहीं, उत्तर क्यों नहीं देती ?"

इतने में उन्मादी की बहुत सी दासियाँ आती हुईं दिखाई दी। सुखपाल जल्दी से खिसक गया ।

"सुनो—" एक दासी ने सुलेखा के समीप आकर कहा "तुम इस वाटिका में जहाँ चाहो जा सकती हो । चल फिर सकती हो मगर इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम अपने को बिल्कुल ही स्वतंत्र समझो ।"

सुलेखा खड़ी हो गई और यह महसूस करके उसे खुशी हुई कि वह चल फिर सकती है ।

"यह बताओ कि मैं अब कहाँ रखी जाऊंगी ?" सुलेखा ने पूछा ।

"तुम हमारी निगरानी में रहोगी, हमारे साथ—" दासी ने बड़े प्यार से कहा । "विश्वास रखो तुम्हें किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होगा ।"

सुलेखा उनके साथ चल दी । उसे एक कमरे में स्थान मिल गया यहाँ एकान्त वास नहीं था । दासियाँ थोड़ी थोड़ी देर के बाद आजाया करती थी । भोजन का भी प्रबन्ध था, लेकिन फिर भी उसे उलझन लग रही थी ।

जब सन्ध्या हुई और अन्धकार फैलने लगा तो सुलेखा को खिड़की के पास एक परछाई दिखाई पड़ी, और कुछ खटका भी हुआ, मगर चूंकि उस समय कुछ दासियाँ कमरे में थीं इसलिये उसने ध्यान नहीं दिया, मगर जैसे ही वह सब हटीं, सुलेखा ने खिड़की से सर निकाल कर देखा ।

दीवार से सुखपाल चिपका खड़ा था । उसने सुलेखा को देखते ही अधीरता से कहा ।

"क्या तुम मुझसे न मिलोगी ?"

"कैसे मिलूँ। मेरे पास तो हर समय जमघटा सा लगा रहता है।"

"रात में जब वह सो जायें तो चली आना।"

"उनमें से एक द्वार के समीप पलंग बिछा कर सोती है।"

"खिड़की की ओर से आना।"

"मुझसे कूदा नहीं जाये।"

"तुम चिन्ता न करो, मैं व्यवस्था कर लूंगा।"

कुछ आहट हुई और सुलेखा चौंक कर तेजी से खिड़की के पास से हट आई और अपने बिस्तर पर आकर बैठ गई।

फिर जैसे जैसे रात होती गई, उन्मादी की दासियाँ आती गईं। वह सब थकी हुई दिखाई दे रही थीं और आपस में उन्मादी के पागल पन पर विवेचना करती जा रही थीं।

अचानक उनमें से एक ने सुलेखा को सम्बोधित कर के कहा।

"अजी सुनती हो। तुम्हारा चाहने वाला भी यहीं है, कहीं उससे मिलने के लिये न पहुँच जाना ?"

सुलेखा का दिल धड़कने लगा।

"हमारा वश चलता तो उसे भी यहीं बुला लेते, मगर क्या करें ?" वह बड़ी काइयाँ है—' दूसरी बोली।

"अजी सुनो!" तीसरी ने कहा "वह भी तुम्हें चाहता है या खाली तुम्हीं --"

सुलेखा लाज वश पानी पानी हो गई, दासियाँ उसकी घबड़ाहट से आनन्द उठा रही थीं।

"तुम जानती हो कि वह राजकुमारी सुन्दरी का मंगेतर है ?"

"हाँ—" सुलेखा ने कहा "मगर सुन्दरी उसे नहीं चाहती।"

"सुन्दरी की बात जाने दो—" तीसरी ने कहा "उनको तो पता

नहीं कितने प्रियतम और मंगेतर हैं।"

इन्हीं बातों में रात व्यतीत होती रही, जम्हाइयाँ आती रहीं और आँखें नींद से लाल होती रहीं—और फिर बारी बारी सब सो गईं।

मगर सुलेखा के नेत्रों में नींद नहीं थी।

थोड़ी देर बाद खिड़की पर किसी ने कंकरी फेंकी। वह समझ गई कि सुखपाल आ गया। उसका दिल धड़कने लगा, माथा पसीने से भीग गया। वह पलंग से उठी, मगर उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके पैरों में किसी ने जंजीर डाल दी हो, फिर भी कोई भावना ऐसी थी जो उसे खींचे लिये जा रही थी। वह खिड़की के पास आकर रुकी और नीचे की ओर झाँका।

सुखपाल खड़ा था।

"तुम खिड़की पर से कूद पड़ो—" सुखपाल ने कहा।

"मैं गिर पड़ूँगी।"

"नहीं, मैं संभाल लूँगी।"

"यह मुझसे नहीं होगा।"

"मूर्खता न करो! समय कम है, आ जाओ मैं तुम्हें गोद में संभाल लूँगा।"

सुलेखा इस एहसास से गड़ी जा रही थी कि सुखपाल उसे अपनी गोद में उठायेगा, मगर दिल था कि पीछे हटने को तैयार नहीं था। उसने पीछे की ओर देखा और फिर नेत्र बन्द करके खिड़की पर बैठ गई, और पाँव नीचे लटका दिये।

सुखपाल ने अपने हाथ बढ़ाये और फिर दूसरे ही क्षण वह सुखपाल की गोद में थी।

वह बड़ी तेजी से मचल कर उसकी गोद से अलग हो गई और झल्ला कर बोली—

"कहो, क्यों बुलाया है, क्या कहना है ?"

सुखपाल ने उसे आश्चर्य से देखा और कहने लगा।

"समझ में नहीं आता कि तुमको किस खाने में रखूं।"

"अरे! तो तुम मुझे खाने में रखोगे!" वह बोली और चाहा कि पीछे हटे, मगर सुखपाल ने लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया, सुलेखा ने झटका देकर हाथ छुड़ा लिया और कहने लगी।

"तुम अभी कह रहे थे ना कि तुमको मुझसे प्रेम है ?"

"हाँ।"

"तो फिर प्रेम को इस प्रकार अपमानित न करो।"

सुखपाल उसे देखता ही रह गया।

"तुम समझते हो कि मैं बिलकुल पत्थर हूँ, मगर ऐसा नहीं है—" सुलेखा ने बड़ी गम्भीरता से कहा "मैं भी प्रेम करना जानती हूँ, मगर काश तुम मेरी भावनाओं और उलझनों को समझ सकते।"

"कैसी भावना और कैसी उलझन ?"

"तुम सुन्दरी के मंगेतर हो।"

"हां—" सुखपाल ने तीव्र स्वर में कहा "मगर तुम भी यह बात जानती हो कि सुन्दरी कुल्टा और पतिता है, वह किसी एक की होकर रह ही नहीं सकती। मेरे और उसके स्वभाव और पसन्द में आकाश और पाताल का अन्तर है। मैं किसी मूल्य पर उसे अपना नहीं सकता, वैसे भी वह मुझे घृणा करती है।"

"जो कुछ भी हो, मगर वह मेरी बहिन है।"

"और बहिन भी ऐसी कि जो तुम्हें मार डालना चाहती है।" सुखपाल ने व्यंग किया।

एक क्षण के लिये सुलेखा खो सी गई। उसे ऐसा लगा जैसे अब वह धैर्य नहीं रख सकती। उसका मन चाहा कि सुखपाल के कन्धे पर

सर रख कर नेत्र बन्द कर ले और आनन्द के अथाह सागर में डूब जाये। मगर अचानक वह चौंक सी पड़ी। उसने सर झटक दिया।

"तुम खुद सोचो —" सुखपाल बोले जा रहा था "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, ऐसा प्यार जिसमे पाप की भावना नहीं। तुम मेरा जीवन हो, मेरे सपनों का संसार हो, मेरी कामनाओं और अभिलाषाओं का केन्द्र हो। अगर तुमने मेरा दिल तोड़ दिया तो मैं कहीं का नहीं रहूँगा। बिना मौत मर—!"

मगर बात पूरी करने से पहले ही उसके सर पर एक पत्थर का टुकड़ा आकर लगा और वह कराह कर बैठ गया और दोनों हाथों से सर पकड़ लिया।

सुलेखा ने देखा कि रक्त की एक पतली सी रेखा सुखपाल के चेहरे पर फैलती जा रही है। वह व्याकुल हो उठी और जल्दी से जमीन पर बैठ गई, फिर सुखपाल का सर अपनी गोद में रख लिया और अपनी साड़ी का आंचल फाड़ कर उसके सर पर पट्टी बाँधने लगी।

"तुम्हें मेरे कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ रहा है।" सुखपाल ने कराहते हुए कहा।

"क्या चोट अधिक लगी है।" सुलेखा ने पूछा।

वह बड़े प्यार से उसके सर पर हाथ फेर रही थी और उसका सर इतना झुका हुआ था कि उसकी गर्म गर्म साँसों की भाप सुखपाल के चेहरे पर पड़ रही थी। सुखपाल ने उसके गले में बाहें डाल दीं। सुलेखा का सर और झुक गया। उसके अधर काँप रहे थे। चेहरा पसीने से भीग गया था और दिल बड़े जोर से धड़कने लगा था। उसके पूरे शरीर में आनन्दमयी सनसनी दौड़ रही थी।

उसी समय कुछ आहट हुई। सुखपाल जल्दी से उठ कर बैठ गया। सुलेखा भी खड़ी हो गई।

"तुम अब जाओ, शायद कुछ लोग आ रहे हैं—" सुखपाल ने ने कहा।

"मगर मैं जाऊँ कैसे?" सुलेखा ने विवशता के साथ कहा।

"मेरे कन्धों पर पैर रख कर खिड़की से उतर जाओ।"

"यह मुझसे नहीं होगा—" उसने लजाते हुये कहा।

"जल्दी करो वर्ना वह लोग आ गये तो बना बनाया खेल बिगड़ जायेगा।"

सुखपाल इतना कह कर उकड़ू बैठ गया, सुलेखा ने उसके कन्धों पर पाँव रख कर दोनों हाथ खिड़की पर जमा दिये और फिर वह अन्दर थी, मगर लाज के मारे उसका बुरा हाल था। पूरा शरीर पसीने से भीग रहा था। वह यह सोच कर पछता रही थी कि सुखपाल उसके बारे में न जाने क्या सोचता होगा।

और सुखपाल एक ओर भागा जा रहा था। आने वाले उन्मादी के पहरेदार थे और कदाचित उन्हीं में से किसी ने पत्थर फेंका था। वह उनकी निगाहों से बचता दबकता भागा जा रहा था। उसे यह सन्देह हो रहा था कि उसका पीछा किया जा रहा है। वह बारबार मुड़ मुड़ कर पीछे देखता था और फिर भागने लगता था।

अचानक उसके पाँव रुक गये।

एक ओर प्रकाश हो रहा था। वह उधर ही बढ़ा और फिर आश्चर्य से उसकी आंखें फैल गईं।

एक सोने के बहुत बड़े पिंजरे में एक लंगूर बन्द था और सन्त उसके सामने खड़े थे। लंगूर आदमियों के समान बातें कर रहा था।

सुखपाल और चकित हो गया, उसने आड़ ले ली और बातें सुनने लगा।

सन्त लंगूर के आदेशानुसार चाँद डूबने के बाद आये थे। लंगूर

ने उन्हें देखते ही प्रणाम किया था और सन्त ने आशीर्वाद दिया था।

"तुम्हारी पूँछ और लम्बी हो।"

"देखिये! उस दिन भी आप से कहा था कि इस प्रकार का आशीर्वाद अब कभी न दीजियेगा—" लंगूर ने बिगड़ कर कहा।

"अच्छी बात है, मगर यह बताओ कि तुमने मुझसे बातें करने के लिये आज का दिन और यह समय क्यों नियत किया था?"

"इसलिये कि उन्मादी आज इस समय के बाद से अपने दूसरे कैदियों की निगरानी के लिये चली जायेगी और इधर नहीं आयेगी, इसलिये मैं इत्मीनान से आपसे बातें कर सकूंगा।"

"तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है जैसे तुम भी अपने को उन्माद का बन्दी समझते हो?"

"जी हाँ, मैं भी उसका बन्दी ही हूँ।"

"मगर वह तुम्हें अपना प्रियतम कहती है और इस बात का दा.. करती है कि वह तुमसे बहुत अधिक प्रेम करती है, इतना कि तुम्हारे बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती।"

"मैं उसका प्रियतम नहीं बल्कि उसका पति हूँ।"

"पति!" सन्त ने चकित होकर कहा।

"जी हाँ।"

"क्या तुम ईश्वरवादी हो?"

"जी हाँ।"

"फिर इसके चँगुल में कैसे फँस गये?"

"मेरा नाम लमपति था और मैं इस देश का राजा था। जब विराट ने सम्राट वीरभद्र से विद्रोह किया और तिलिस्म जादू नगरी का सम्राट बन बैठा तो मैंने भी अपने स्वामी से विद्रोह किया और संम्राट विराट का साथी बन गया। मुझे भी कुछ देश मिले उसी जमाने में

उन्मादी से मेरा विवाह हुआ।

"उस समय तुम सनातन धर्मी नहीं थे ?"

"नहीं—" वह बोला "मुझे नहीं मालूम था कि उन्मादी इतनी कुल्टा और पतिता होगी विवाह के बाद भी उसने अपना रंग नहीं बदला तब मैंने निश्चय किया कि उसे रंगे हाथों पकड़ना चाहिये, इसलिये मैं उससे बहाना करके शिकार के लिये चला गया, मगर सच्ची बात यह थी कि मैं किले से बाहर गया ही नहीं बल्कि भेष बदल कर किले में रहा। जब रात हुई तो मैं उन्मादी के शयन कक्ष में प्रविष्ट हुआ। उन्मादी उस समय एक दूसरे जादूगर के साथ रति विहार में निमग्न थी, मुझे देखते ही दोनों बौखला गये। मैं तलवार खींच कर उस जादूगर पर टूट पड़ा, सोचा था कि पहले उससे निपट लूँ तब उन्मादी की खबर लूँगा, मगर उन्मादी के लिये यह अवसर अच्छा साबित हुआ, जब तक मैं उससे लड़ता रहा वह जादू करती रही। जैसे ही मैंने उस जादूगर को कत्ल किया वैसे ही उसने मेरे ऊपर जादू किया। मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरी पत्नी होकर मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेगी, मैं बौखला गया। उसने जादू से मुझे लंगूर बना दिया।"

लमपति मौन हो गया। उसके नेत्रों से आँसू गिर रहे थे।

"तुम्हारी कहानी सचमुच बड़ी हृदय विदारक है—" सन्त ने कहा "इसीलिये नारी जाति का विश्वास नहीं होता।"

"जब से अब तक मैं इसी दशा में था कि एक दिन !"

"ठहरो—" सन्त ने टोकते हुये कहा "तुमने इसकी सूचना विराट को नहीं दी।"

"मैं महारानी समर कला का अधीन राजा था और समर कला का सारा कार्य सुन्दरी ने सँभाल रखा था। सुन्दरी और उन्मादी दोनों ही एक ही स्वभाव और प्रकृति की नारियाँ हैं। दोनों ने मिल

कर यह खबर उड़ा दी कि मैं मर गया फिर यह बात फैला दी कि मेरी मृत्यु के कारण उन्मादी का मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया है इसीलिये वह इस प्रकार के कार्य किया करती है।"

"मगर चोर चोरी से जाता है हेरा फेरी से नहीं जाता" सन्त ने कहा "अगर तुम्हारे कहने के अनुसार मैं तुम्हारी कहानी को सच मान लूं तो यह प्रश्न पैदा होता है कि उन्मादी अब क्यों नहीं आवारगी करती। वह तो पुरुषो से घृणा करती है ?"

"कदाचित आप त्रिया चरित्र नहीं जानते। कुछ नारियाँ ऐसी भी होती हैं जो पुरुषों से प्रकट में घृणा का प्रदर्शन करती रहती है और छिप छिप कर पुरुषों से ही रंग रलियाँ भी मनाती रहती है— इसी सम्बन्ध में अगर एक बात और आप को बता दूँ तो आप उछल पड़ेंगे।"

"उछल कूद तो अपने ही तक रखो, कैसे बताओ कौन सी बात है ?

"सुखपाल नाम का जो राजकुमार आपके साथ आया है उन्मादी उसे भी गले लगाना चाहती है इसीलिये उसने सुखपाल को मुक्त किया है।"

सन्त मौन रहें मगर सुखपाल जो ओट से सारी बाते सुन रहा था चौंकला गया फिर उसने सन्त को आशीर्वाद दिया जिनके कारण वह उन्मादी के पंजे से बच निकला था।

"तुमने यह नहीं बताया कि तुमने सनातन धर्म कैसे स्वीकार किया ?"

"मैं लंगूर बना इसी पिंजरे में बन्द था कि एक रात मेरी आँख लग गई। मैं ने स्वप्न में देखा कि एक योगी मेरे सामने खड़े है और कह रहे हैं कि—लमपति जादू तेरे दुख के दिन बीत गये और अब अच्छे दिन आने वाले हैं इसलिये तू सनातन धर्म स्वीकार कर

ले और ईश्वर वादी हो जा। बहुत जल्द तेरे पास एक सनातन धर्मी आने वाले हैं। उनका नाम सन्त जालेन्द्र होगा। तू किसी जादूगर से तो बात नहीं कर सकता मगर मेरे आशीर्वाद से तेरे अन्दर यह शक्ति आ जायेगी कि तू उनसे बात करे और इस विपत्ति से छुटकारा पा जाये। फिर मेरी आँख खुल गई और मैं ने उसी समय सनातन धर्म स्वीकार कर लिया। फिर जब मैं ने आप को देखा तो मुझे सनातन धर्म की सच्चाई का पूर्ण विश्वास हो गया और मेरी जबान भी खुल गई अर्थात मैं आदमियों के समान बोलने लगा।"

"आओ, हाथ मिला ऊँ—" सन्त ने हाथ बढ़ाते हुये कहा।

"हाथ तो सलाखों से बाहर निकल नहीं सकता। कहिये तो पूँछ निकाल दूँ।"

"मसखरे भी हो—" सन्त ने हँसते हुये कहा "अब यह बताओ कि उन्मादी की कैद से तुम किस प्रकार मुक्त हो सकते हो?"

"जब तक वह करज़ न होगी तब तक न मैं मुक्त हो सकूंगा और न अपनी असली सूरत में आ सकूंगा।"

"यह कौन सी बड़ी बात है। मैं अभी उसके सीने में तलवार भोंक देता हुँ।"

"वह तिलिस्म बन्द है। तलवार काम नहीं करेगी।"

"तो क्या वह मर ही नहीं सकती?"

"देखिये सन्त जी। काम बहुत कठिन है मगर मैं आपको बता देता हूँ। आगे आप जानिये और आपका काम।"

"बताओ भी" सन्त झल्ला उठे।

"देखिये। पिंजरे के सामने जो यह अंगेठी रखी हुई है और जिस में सुगन्धित वस्तुये जल रही हैं इसी में अगर की तीन बत्तियाँ भी हैं। दो बत्तियाँ तो जल रही हैं मगर बीच वाली तीसरी बुझी हुई है। अगर कोई सनातन धर्मी उसे अपने हाथ से जलाये और उन दोनों बत्तियों

को उखाड़ कर फेंक दे जो जल रही हैं तो उन्मादी मर जायेगी।"

"यह कौन सा कठिन काम है—" सन्त ने कहा!

"कठिनाई यह है कि जब आप अंगेठी के निकट पहुँचेंगे तो आप को ऐसा लगेगा जैसे आपके पीछे कोई खड़ा है और जब आप बत्तियाँ निकालना चाहेंगे तो हजारों डरावनी सूरतें दिखाई देंगी अगर आपने पीछे मुड़ कर देखा तो फिर जिन्दा नहीं बचेंगे।"

सन्त ने दिल कड़ा किया। नेत्र बन्द करके कुछ देर तक भगवान की प्रार्थना करते रहे, फिर आँखे खोल कर अंगेठी की ओर बढ़े।

"देखिये! चाहे जैसी भी आवाज सुनाई दे मगर आप पीछे नहीं देखियेगा। बस सामने ही देखते रहियेगा।"

मगर सन्त इस प्रकार आगे बढ़ते गये जैसे उन्होंने उसकी बात सुनी ही न हो। जैसे ही वह अंगेठी के समीप पहुँचे उन्हें ऐसा लगा जैसे पीछे से उनकी गर्दन पर कोई बहुत धीरे धीरे अंगुलियाँ फेर रहा हो। सन्त ने मजबूती से अपने दाँत एक दूसरे पर जमा लिये और बीच वाली बत्ती जलाने के लिये बढ़े।

"ईश्वर के लिये मुझे बचाइये—" सन्त को लमपति की चीख सुनाई पड़ी। एक क्षण के लिये उनका ध्यान हट गया मगर फिर तत्काल ही वह संभले। उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

फिर जैसे ही उन्होंने तीसरी बत्ती जलाई वैसे ही हजारों चीखें सुनाई देने लगी कभी ऐसा लगता जैसे बसन्त वाला सहायता के लिये पुकार रही हो कभी राजकुमार अरुण की कभी चन्द्र कला की मगर सन्त ने जैसे अपने कान बन्द कर लिये थे। फिर उन्होंने उन दोनों बत्तियों की ओर हाथ बढ़ाया जो जल रही थी। उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने हजारों सूइयाँ उनके हाथों में गड़ा दी हो। फिर चारों ओर से धमाकों की आवाजें आने लगी और भूकम्प सा आ गया मगर सन्त वह पीड़ा भी सहन कर गये। उन्होंने जी कड़ा करके दोनो बत्तियों पर

हाथ डाल दिया और उन्हें खींच कर बाहर फेंक दिया।

बस एक तूफ़ान आ गया। अन्धकार फैल गया। आंधी इतनी तेज चलने लगी कि बड़े बड़े विशाल वृक्ष जड़ से उखड़ने लगे और फिर इतनी भयंकर चीख सुनाई दी कि सन्त को चक्कर आ गया और वह मूर्छित हो गये।

जब चेतना लौटी तो उन्होंने देखा कि सुखपाल सामने खड़ा मुस्कुरा रहा है और सोने के पिंजरे में एक सुन्दर युवक राजकीय वस्त्र पहने बैठा मुस्कुरा रहा है।

"इस वीरता का क्या कहना—" सुखपाल ने सन्त के हाथों को चूमते हुये कहा "मैं तो समझता था कि आप केवल प्रवंचक ही हैं मगर आप तो बहुत बड़े वीर और साहसी भी निकले।"

"अभी क्या देखा है—" सन्त ने चारों ओर देखते हुये कहा "वह लंगूर कहां गया?"

'सेवक हाजिर है—" पिंजरे से आवाज आई "आपके आशीर्वाद से पूछ झड़ गई है, अब अपने हाथों से पिंजरे का द्वार खोलिये ताकि चरण रज मस्तक पर लगा सकूँ।"

"कदाचित तुम्हें नहीं मालूम कि सन्त जी बिना पारिश्रमिक लिये कोई काम नहीं करते—" सुखपाल ने कहा।

"देखो कितना समझदार बच्चा है—' सन्त ने सुखपाल की ओर देखते हुये कहा।

"पहले बाहर तो निकालिये—" लमपति ने कहा "इस समय मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।"

सन्त ने आगे बढ़ कर द्वार खोल दिया। लमपति बाहर निकल कर सन्त के चरणों पर गिर पड़ा। सन्त ने उसे उठाकर सीने से लगाते हुये कहा।

"अब सुलेखा की चिन्ता करो।"

"बस आपकी आज्ञा की देर थी—" लमपति ने कहा और ताली बजाई। एक विमान उड़ता हुआ आया, जिस पर कुछ परियाँ बैठी हुई थी।

"उत्सव का प्रबन्ध किया जाये!" लमपति ने कहा।

देखते ही देखते मैदानमें छिड़काव हो गया। शामियाना लग गया। बीच में रत्न-जटित कुर्सियाँ लग गईं। शामियाने में मोती की झालरें जगमगाने लगीं।

"सुलेखा कहाँ है?" सन्त ने इधर उधर देख कर पूछा।

"उसी के कारण मुझे मुक्ति मिली है,इसलिये वह मेरी बहिनहै—'

"फिर सुखपाल तुम्हारा कौन हुआ?" सन्त ने बात काट कर पूछा।

"अभी तो कुछ भी नहीं—" लमपति ने हँसते हुये कहा, "समय आने पर देखा जायेगा। सुलेखा अब मेरी बहिन के समान शान से आयेगी।"

"और मेरा नजराना?"

"यह पूरा शामियाना आपका है।"

"बड़े कन्जूस हो—" सन्त मुँह बना कर बोले "इतना तो मैं अपने शिष्यों में बाँट देता हूँ।"

"तो फिर यह पूरा देश आपका है—" लमपति ने हँसते हुये कहा "इसलिये कि अब अपना शेष जीवन मुझे आप ही की सेवा में व्यतीत करना है।

सन्त हँसने लगे।

फिर पूरी रात नाच गाना होता रहा, लमपति, सुलेखा और सुखपाल सभी हर्षित थे, मगर सन्त चिन्तित थे। उनका ध्यान अपनी सेना की ओर लगा हुआ था।

—•—

सन्त की सेना में सन्त के अचानक गायब हो जाने से सब ही चिन्तित थे। दिन भी काफी बीत गये थे। फिरंगी और चित्रांगद सन्त को सुन्दरी के पड़ाव में देख चुके थे इसलिये उन्हें विश्वास था कि सन्त कोई बड़ा काम करके आयेंगें, मगर चूँकि दिन बहुत बीत गये थे इसलिये वह चिन्तित हो उठे थे कि कहीं सन्त किसी विपत्ति में में न पड़ गये हों। वह दोनों पता लगाने के लिये सुन्दरी के पड़ाव की ओर चल दिये उधर सुन्दरी मग्न थी। सुखपालका खटका निकल चुकाथा इसलिये वह निर्भय होकर रंग रलियाँ मना रह थी। एक दिन उसने सोचा कि अगर सुखपाल का दिल सुलेखा क ओर से हट ग या हो तो सुलेखा को कत्ल कर देना चाहिये यही स च कर उसने एक पत्नी को बुलाया ताकि मालूम कर सके कि क्या स्थिति है कि उसे सन्त दिखाई पड़े।

हुआ यह था कि सुलेखा तथा सुखपाल को अपनी सेना की ओर भेज कर सन्त लमपति के साथ सुन्दरी के खेमे की ओर चल पड़े थे फिर नदी किनारे उन्होंने लमपति को छ ड़ दिया था और माया पट ओढ़ कर सुन्दरी के खेमे में प्रविष्ट ह गये थे—और फिर माया पट उतार दिया था।

सुन्दरी इस प्रकार अचानक उन्हें सामने देख कर चकित रह गई।

"आपने मुझे याद किया और मैं आ गया—" सन्त ने उसके बोलने से पहले ही कहा मैं उन्मादी के पास बैठा था कि अचानक मुझे यह सूचना मिली कि आप उन्मादी का हाल जानना चाहती है बस मैं वहाँ से चल दिया।"

"कमाल है—" सुन्दरी ने आश्चर्य से कहा "सुखपाल का क्या हाल है?"

"मैं ने उसे ठीक कर लिया है।"

"तब तो सुलेखा को कत्ल कर देना चाहिये—" सुन्दरी हर्षित होकर बोली।

सन्त कुछ नहीं बोले वह चारों ओर देखने लगे। फिरंगी और चित्रांगद भी भेष बदले वहाँ मौजूद थे सन्त ने उन्हें पहचान लिया फिर वह सुन्दरी के मुकुट की ओर देखने लगे जिसके प्रति उन्होंने सुन रखा था कि वह अत्यन्त मूल्य वान है। उन्हें मौन देख कर सुन्दरी ने पूछा।

"क्या बात है तुम चुप क्यों हो गये!"

"कान लाइये तो बताऊं—" सन्त ने कहा!

सुन्दरी कुर्सी पर बैठे बैठे सर झुका कर अपना कान सन्त के होठों के पास ले गई सन्त ने उचक कर उसका मुकुट उतार लिया और पूरी शक्ति से कुर्सी पर लात मारा। वह कुर्सी सहित उलट गई।

फिरंगी और चित्रांगद ने अवसर उपयुक्त देखकर अपने पास बैठे हुये जादूगरों के पेटों में कटार भोंकी और उनके कण्ठ से हार तथा अंगूठियाँ उतार कर चलते बने।

एक ओर रानी हँसा के आगमन की सूचना उस पर से सुन्दरी का कुर्सी सहित उलट जाना और फिर जादूगरों का मरना...बड़ी विचित्र स्थिति थी।

सन्त भी चल दिये थे और सुन्दरी के खेमे में हुल्लड़ मचा हुआ था।

रानी हँसा ने आकर सब को डांटा। जब कोलाहल समाप्त हुआ तो उसने सुन्दरी से हाल चाल पूछा। सुन्दरी ने बड़ी कठिनाई से बस इतना कहा।

"जालेन्द्र बहुत बड़ा ऐयार है।"

रानी हंसा मुंह फेर कर मुस्कुराई फिर उसने ताली बजाई। एक पक्षी उड़ता हुआ आया रानी हंसा ने उसके सर पर हाथ फेरा और पक्षी ने चोंच खोली फिर वह आदमियों के समान बोलने लगा। वह आदि से अन्त तक की कहानी सुना रहा था कि किस प्रकार सन्त

उन्मादी के यहाँ पहुँचे और किस प्रकार उन्मादी को कत्ल करके सुलेखा और सुखपाल तथा लमपति को मुक्त किया। सब लोग चकित थे और सुन्दरी का चेहरा क्रोध के कारण लाल हत जा रहा था। जब पक्षी सब सुना चुका तो वह पैर पटक कर बोली।

"मैं जालेन्द्र को जिन्दा नहीं छोड़ूगी।"

"बेटी इसी प्रकार के दावे हम भी करते थे—" हंसा ने कहा "तुम्हें तो खुश होना चाहिये कि उसने तुम्हें जिन्दा छोड़ दिया।"

सुन्दरी को यह बात अच्छी नहीं लग । हंसा ने भी देखा कि सुन्दरी अपनी हट नहीं छोड़ सकती तो वह उठ कर चली गई।

सुन्दरी ने अपने सामन्तों पर दृष्टि डाली और तड़प कर बोली।

"क्या तुम में से कोई ऐसा नही हैं ज मेरे अपमान का बदला ले सके!"

'क्यों नहीं—" प्रवाह जादू ने खड़े हं कर कहा "आप की आज्ञा की देर थी।"

चूँकि वह सुन्दरी का चचा लगता था इसलि सुन्दरी कुछ नहीं बोली, मगर प्रवाह तीर के समान निकल गया।

उधर सन्त जी सुन्दरी के खेमे से निकल कर सीधे अपने पड़ाव गये और सब लोगों को अपनी कहानी सुनाते ये कहा।

"सुलेखा कहाँ है। मैं उसके लिये बहुत चिन्तित था और उसी के लिये मैंने इतना कष्ट भी उठाया!"

"चन्द्रकला ने उसे अपनी बहिन बना लिया है और अब वह उन्हीं के खेमे में है—" अरुण ने कहा।

"बड़े भाग्य शाली हो बेटे—" सन्त ने सुखपाल की ओर देखते हुये कहा "विवाह के बाद ससुराल में छेड़ छाड़ के लिये एक से एक बढ़ कर मिलेगा!"

"और सुखपाल को मैं ने अपना छोटा भाई बना लिया है—"

अरुण ने कहा।

"वह गधा कहाँ गया ?" सन्त ने सर उठाकर चारों ओर देखते हुये पूछा।

लोग चकित होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे कि आखिर सन्त जी किसे पूछ रहे है। इतने में खेमे के बाहर से किसी गधे के रेकने की आवाज आई। सब लोग हँसने लगे। फिर बाहर से आवाज आई।

"गुरु देव! गधा हाजिर है। भाई चित्रांगद भी मेरे साथ हैं।"

"अबे मूर्ख! ऐयारी इसको कहते हैं—" सन्त ने ललकारा "तुम सब ने केवल भेस बदलना सीखा है मगर बुद्धि से कोई काम नही किया ?"

"क्या करें सन्त जी।" फिरंगी ने कहा "हमारा कोई दोष नहीं अयोग्य गुरु ने यह कला सिखाई ही नहीं तो योग्यता कहा से दिखाते।"

"अबे गधे ! मुझे अयोग्य कहता हैं।"

"अरे बाप रे! आपको कह दिया मैं समझा कि मेरा गुरु मेरा बाप था।"

"लाओ वह हार और अँगूठियाँ निकालो—" सन्त ने कहा।

"कभी कभी शिष्यों को भी पुरस्कार दे दिया कीजिये।"

"अयोग्यों को पुरस्कार नहीं दिया जाता।"

बाहर से कोई उत्तर नहीं मिला।

"देखो! तुम लोग मुझे समझाते हो—" सन्त ने लोगों से कहा "मगर यह दोनों अपनी शरारतों से बाज नहीं आते।"

"जाने दीजिये! दो चार अँगूठियों में आपका क्या बनता बिगड़ता है—" वसन्त बाला ने कहा।

"तुम मत बोलो—" सन्त बिगड कर बोले "तुम्हारे कारण मेरी

जो हानि हुई थी उसे मैं अब तक नहीं भूला हूँ।"

वसन्त वाला हँसने लगी।

"अबे! तुम दोनों आते हो या मैं खुद आऊँ—" सन्त ने ललकारा।

मगर जब बाहर से कोई आवाज नहीं आई तो सन्त डन्डा संभाले हुये बाहर आये। देखा कि फिरंगी और चित्रांगद भागे जा रहे हैं। सन्त ने दौड़ाया मगर वह दोनों निकल भागे।

"जाने दीजिये! मैं हजारों अंगूठियाँ मंगवा दूँगा—" सुखपाल ने कहा। जो सन्त के साथ बाहर निकल आया था।

"तुम बड़े कनजूस हो—" सन्त बिगड़ गये "कहते हो मगर कुछ करते धरते नहीं।"

अचानक वायुमण्डल से एक पंजा प्रकट हुआ। और सन्त की कमर में हाथ डालकर ले उड़ा।

"अरे अरे।" कहते हुये सन्त ने संभलना चाहा, मगर बन्धन पुष्ट था!

सुखपाल भी इस हमले के लिये तैयार नहीं था। वह पीछे दौड़ा और जब होश ठिकाने आया तो उसने जादू किया मगर प्रवाह जादू कमजोर नहीं था उसने भी बहुत से जादुई गोले फेंके जिसके कारण सन्त की सेना के बहुत से लोग मारे गये।

सुखराज का कोई वश नहीं चला।

प्रवाह सन्त को लिये उड़ा चला जा रहा था। चूंकि उसे खतरा था कि उसका पीछा किया जा रहा है इसलिये उसने सन्त को एक जङ्गल में उतारा! सन्त धूल झाड़ते हुये खड़े हो गये। उनका दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था। उन्होंने प्रवाह को ध्यानपूर्वक देखा, फिर बोले।

"अरे सरकार इसकी क्या आवश्यकता थी किसीसे बुलवा भेजते।"

"बको मत। मुझ पर तुम्हारा कोई दाँव नहीं चल सकता—" प्रवाह तनक कर बोला।

"मैं पहलवान नहीं हूँ सरकार कि दाँव मारूँ, हाँ गले का दाँव अवश्य जानता हूँ...जो राग कहिये सुना दूँ।"

और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उन्होंने लहक कर एक तान मारी।

"क्या तुम्हारा नाम जालेन्द्र नहीं है?" प्रवाह ने पूछा। वह भी शायद कुछ घबड़ा गया था, क्योंकि उसने भी सन्त को इससे पहले कभी नहीं देखा था। इस लिये सन्देह में पड़ गया था कि यह जालेन्द्र है या नहीं।

"जालेन्द्र?" सन्त ने आँखे फाड़ कर कहा "पता नहीं आप किस आदमी का नाम ले रहे हैं।"

"तो फिर तुम कौन हो!"

"तान तोड़—" सन्त ने कहा "पिता का नाम तान जोड़ और दादा का नाम तान फोड़ था। मैं खान्दानी गायक हूँ।"

"मगर तुम्हारा रूप तो जालेन्द्र जैसा है।"

"अरे बाप रे—" सन्त काँपने लगे "आपके पास दर्पण होगा।"

"दर्पण क्या होगा?"

"अपना रूप देखूंगा—" सन्त ने कहा "अभी एक विचित्र डील डौल और चेहरे का आदमी मिला था। मुझसे कहने लगा कि दस रुपया दो तो तुम्हें फिर से जवान बना दूँ। जवान बनने को लालच में मैं ने उसे दस रूपये दे दिये। फिर उसने मुझे न जाने क्या खिलाया पिलाया कि मैं अपने को जवान महसूस करने लगा।"

"मगर तुम्हें जवान बन ने की इच्छा क्यों थी?"

"बस यही न पूछिये—" सन्त ने ठण्डी साँस भर कर कहा "पिता जी ने मेरा विवाह इसलिये नहीं किया था कि मेरा गला खराब हो

जायेगा। इसी में मेरी अवस्था चालीस वर्ष की हो गई फिर पिता जी मर गये और मैंने अट्ठारह वर्ष की लड़की से विवाह कर लिया लड़की क्या है बस पारा है। चलती है तो धरती की छाती फटती है। उसकी गदराई हुई जवानी को देख कर मुहल्ले के लड़के सीना थाम लेते हैं। मैं किस किस को समझाऊँ! बस इसी लिये सरकार मैं जवान होना चाहता था।"

जादूगर ऐयारा होते ही थे, प्रवाह ने एक अट्ठारह वर्षीय लड़की की सुन्दरता और जवानी का जब वर्णन सुना तो उसके मुँह में पानी भर आया। वह सोचने लगा कि काश वह लड़की उसे मिल जाती। वह कुछ क्षण तक सोचता रहा, फिर बोला।

"तुम अपनी बीवी के पास मुझे ले चलो, अगर वह सचमुच इतनी ही सुन्दर है तो मैं जादू की शक्ति से तुमको बीस वर्ष का जवान बना दूँगा।"

"यह मैं नहीं करूंगा, क्योंकि अगर कहीं आप ही का दिल आ गया तो फिर मैं क्या करूँगा।"

"कैसी बातें करते हो—" प्रवाह ने बात बिगड़ती देख कर कहा "यह तो मैं तुम्हारी भलाई के लिये कह रहा हूँ। तुम मुझसे बड़े हो इसलिये वह मेरी भाभी होगी, बस मैं जरा हँसी मजाक करता, दिल लगी होती।"

"दिल लगी में ही दिल लगा हो जाता है सरकार—" सन्त बोले "लेकिन आपकी बात टाल भी नहीं सकता, मगर एक वादा करना होगा।"

"क्या?"

"मुझे जवान बना दीजियेगा।"

"अवश्य!" प्रवाह ने जल्दी से कहा "मगर इसके लिये थोड़ी

देर तक तुम्हारी पत्नी के साथ एकान्त में बैठ कर जादू जगाना पड़ेगा।"

"मुझे स्वीकार है—" सन्त ने कहा और प्रवाह को लेकर चल दिये।

प्रवाह उनकी चिकनी चुपड़ी बातों में ऐसा आ गया था कि सब कुछ भूल गया था, एक स्थान पर पहुँच कर सन्त रुके और अट्टहास करके कहने लगे।

"लीजिये सरकार! वह तो यहाँ पहाड़ी के दर्रे में अपने किसी चाहने वाले के साथ बैठी हुई है।"

"कहाँ?" प्रवाह ने अधीरता के साथ पूछा।

"वह रही, आप यहीं ठहरिये, मैं जाता हूँ।"

"तुम यहीं रहो, ही जाता हूँ—" प्रवाह ने कहा और आगे बढ़ा।

सन्त दबे पाँव प्रवाह के पास पहुँच गये! प्रवाह ने जैसे ही झुक कर दर्रे में झाँकना चाहा, सन्त ने उस पर कमन्द फेंकी और बोले।

"ले बेटा! संभल जा! मेरी बीबी से बाद में मिलना, पहले अपनी मौत से मिल!"

प्रवाह धरती पर पड़ा गें गें कर रहा था कि अचानक धरती हिलने लगी। सन्त ने सोचा कि अगर यह बच गया तो जिन्दा नहीं छोड़ेगा, इसलिये जल्दी से उसके सीने में कटार भोंकी और मायापट ओढ़ कर गायब हो गये, थोड़ी देर बाद कई जादूगर रोते पीटते आये और प्रवाह की लाश उठा कर चल दिये।

उधर सुन्दरी इस प्रतीक्षा में बैठी हुई थी कि प्रवाह सन्त जालेन्द्र का सर काट कर लाता होगा, मगर जब प्रवाह की लाश उसके सामने आई तो वह क्रोध से पागल हो उठी उसने उसी समय नगाड़ा बजवाया और सेना लेकर रानी इन्दुमति की सेना पर चढ़ दौड़ी।

जब रानी हँसा को पता लगा तो वह दौड़ी आई और समझा बुझा कर सुन्दरी को वापस ले गई, मगर दूसरे दिन सुन्दरी किसी प्रकार नहीं मानी अ ु ः । कर दी।

इस युद्ध की घोषणा ने सन्त की सेना में खलबली मचा दी। चन्द्रकला ने तमाम सामन्तों को अपने खेमे में बुलवाया। सन्त भी एक ओर बैठे हुये थे, उनके पीछे फिरंगी खड़ा पंखा झल रहा था।

"रहने दे बेटा! तेरा हाथ दुखने लगेगा।"

"नहीं गुरू! मुझे सेवा करने दीजिये—" फिरंगी ने कहा "ऐसा ही है तो दो चार पैसे मेरे हाथ पर रख दीजियेगा, बाल बच्चों का भला होगा।"

"क्या कहा! सन्त ने आंखें निकाल कर कहा "कानी कौड़ी नहीं दूँगा। इधर तुमने काफी पैदा किया है, मगर गुरू का हिस्सा नहीं निकाला।"

"एक बात पूछू गुरुदेव?" फिरंगी ने बत बदली।

"पूछो।"

"युद्ध करना पुरुषों का काम है, मगर यह विचित्र युद्ध है, जिसमें नारियों का बोल बाला है...यह क्या बात है?"

"अगर यही समझ लेते तो फिरंगी के बजाय जालेन्द्रहोते—' सन्त ने मुस्कुरा कर कहा जब पुरुष का मस्तिष्क प्रगति की असीम सीमा पर पहुँच जाता है तो उसे पैदा करने वाली वस्तु विनाश का कारण बन जाती है।"

"यह तो बड़ी गहरी बात है जो अपनी समझ में नहीं आ सकती।"

"तो इसे इस प्रकार समझ लो कि नारी स्वयं एक जादू है इसलिये जादू भी उसी को शोभा देता है।"

"और पुरुष ?"

"अगर पुरुष न हों तो नारी में सौन्दर्य की अनुभूति ही न उत्पन्न हो।"

फिरंगी कुछ कहने ही जा रहा था कि रानी इन्दुमति ने सबको सम्बोधित करते हुये कहा।

"आप लोग जानते होंगे कि सुन्दरी, रानी समरकला की लड़की है, और आप लोग यह भी जानते हैं कि विराट का भी सम्बन्ध सुन्दरी से है, समरकला तथा विराट ने मिल कर सुन्दरी को जादुई कला में दक्ष बना दिया है, अभी मुझे सूचना मिली है कि वह रणस्थल में इस प्रकार का जादू करके आ रही है कि कोई ऐयार किसी प्रकार की ऐयारी नहीं कर सकेगा, दूसरी बात यह है कि शायद ही हममें से कोई सुन्दरी के जादुओं का मुकाबिला कर सके।"

तमाम लोगों के चेहरे पीले पड़ गये, मगर रानी पद्मा, रानी उर्वशी तथा उद्यान क्रोधावेश में खड़े हो गये।

"आप लोग समझे नहीं—" रानी इन्दुमती ने कहा "आप लोगों की वीरता में सन्देह नहीं है, आप में से हर व्यक्ति सुन्दरी का मुकाबिला कर सकता है, मगर कठिनाई तो यह है कि सुन्दरी के साथ रानी हँसा, चित्रकार, चित्रावती इत्यादि भी उसका साथ देंगी, ऐसी दशा में सुन्दरी से निपटना कठिन होगा।

अचानक बसन्त बाला अपने स्थान से उठ कर खड़ी हुई और गम्भीर स्वर में बोली।

"लड़ाई के मैदान में जाने से पहले इस प्रकार के अनुमान उचित नहीं हैं। जो होगा देखा जायेगा, आप लोग तैयारी कीजिये।"

यह बातें हो ही रही थीं कि नगाड़े घड़घड़ाने लगे, दुंदुभी की

आवाज से वायु मण्डल काँपने लगा, अश्वारोहियों ने पंक्तियाँ जमा लीं। सुन्दरी ने रण स्थन में आकर अपना विमान आगे बढ़ाया और ललकार कर बोली।

"वीरों के समान मैदान में आकर मुकाबिला करो ताकि पता चले कि कौन कितने पानी में है, अब लोमड़ी के समान ऐयारी करने वालों की दाल नहीं गलेगी। कहाँ है रानी बसन्त बाला''क्यों सामने नहीं आतीं ?"

"देखा !" रानी बसन्त बाला ने कहा "मैं जानती थी कि सुन्दरी मेरे अतिरिक्त और किसी को मुकाबिले के लिये नहीं बुला सकती, इसीलिये मैंने कहा था कि युद्ध से पहले अनुमान लगाना उचित नहीं है।"

बात सत्य थी, रानी बसन्त बाला को ललकारने के दो कारण थे। पहला तो यह कि विराट रानी बसन्त बाला पर जान देता था और सुन्दरी इसे सहन नहीं कर सकती थी, दूसरी बात यह थी कि सन्त की सेना में जादुई युद्ध करने की कला बसन्तबाला अधिक अच्छा दूसरा कोई नहीं जानता था, अतः जब दूसरी बार सुन्दरी ने बसन्त बाला को ललकारा तो बसन्त बाला सहन न कर सकी, उसने अपनी दासियों को संकेत किया। वह सब उसके साथ चलीं।

बसन्त बाला ने सन्त के निकट पहुँच कर उन्हें प्रणाम किया और सन्त ने उसे आशीर्वाद दिया। फिर राजकुमार अरुण ने उसकी पीठ थपथपाई और वह मैदान में आ गई।

दूसरी ओर से सुन्दरी भी आगे बढ़ी।

दोनों ओर को सेनाओं की नजरें इन दोनों राजकुमारियों पर लगी हुई थीं।

बसन्त बाला के नेत्रों में गुलाबी डोरे तैर रहे थे। बाल कन्धों से बल खा कर कमर तक आ गये थे। कपोलों पर पसीने की बूंदें इस

प्रकार चमक रही थीं जैसे गुलाब की पंखुड़ियों पर ओस की बूंदें चमकती हैं। अधरों पर मुस्कान नाच रही थी, गोरी गोरी कलाइयाँ नंगी थीं। शरीर पर फूलों का वस्त्र था, मगर इतनी सुन्दरता और चतुराई से तैयार किया गया था कि शरीर के किसी अंग का कोई भी भाग दिखाई नहीं दे रहा था।

दूसरी ओर सुन्दरी ने पूरा शृंगार किया था, शरीर पर इतने महीन कपड़े का वस्त्र था कि उसका अंग अंग झलक रहा था। उसका यह सौन्दर्य स्वयं एक जादू बन गया था। लाखों ललचाई हुई निगाहें उस पर पड़ रही थीं।

उसने आते ही एक गुलदस्ता उठाया और बसन्त बाला की ओर संकेत करके सूंघने लगी।

"देखो! कितनी मादक सुगन्ध है बसन्त बाला।"

"तुम ही सूंघो—" बसन्त बाला ने मुस्कुरा कर कहा।

सुन्दरी से झल्ला कर गुलदस्ता फेंका बसन्त बाला ने गले से एक गजरा उतार कर फेंका। दोनों आपस में टकराये। पक्षियों का एक झुण्ड पैदा हुआ। शीतल हवा चलने लगी, बादल घिर आये, मगर पानी बरसने के बजाय उनसे फूल गिरने लगे, मगर वास्तव में वह फूल नहीं बल्कि दहकते हुये अंगारे थे।

यह बसन्त बाला का जादू था बरसते हुए फूल सुन्दरी की ओर बढ़े। सुन्दर ने आवाज दी। गर्म हवा का झोंका आया। फूल और बादल गायब हो गये। सुन्दरी मुस्कुराई और बोली।

"अब जरा यह तमाशा देखो।"

"वा... से तमाशे के अतिरिक्त और किस वस्तु की आशा हो सकती है—" बसन्त बाला ने व्यंग किया।

सुन्दरी ने अपने कानों के झुमके उतारे और उन्हें नचा कर फेंका। एक सुंदर महल प्रकट हुआ, जिसमें कोई द्वार नहीं था,

मगर भीतर की सारी वस्तुयें दिखाई दे रही थीं। अब जो ध्यान से देखा गया तो पता चला कि वह शीश महल है, जिधर देखो अपनी ही सूरत नजर आती थी, वसन्त बाला ने जब अपना चेहरा देखा तो अपने सौन्दर्य पर खुद ही मुग्ध हो गई, सुन्दरी ने हँस कर कहा।

"जाओ बसन्त बाला! यह महल तुम्हारे ही लिये बनाया गया है।"

बादल का एक छोटा सा टुकड़ा प्रकट हुआ और उसकी छाँव में चलती हुई बसन्त बाला उस महल में दाखिल हो गई।

सुन्दरी भी कुछ मुर्झा गई, वह अपने स्थान से उछली और गायब हो गई।

राजकुमार अरुण व्याकुल हो उठा, यह पहला संयोग था कि उसने बसन्त बाला को विराट, रानी हँसा तथा रानी समरकला के अतिरिक्त किसी दूसरे के जादू में गिरफ्तार देखा था।

"क्या रानी बसन्त बाला सुन्दरी से हार जायेगी?" अरुण ने चन्द्रकला से पूछा।

"विजय और पराजय तो भाग्य के हाथ है—" चन्द्रकला ने मुस्कुरा कर कहा।

"तुम मुस्कुरा रही हो?" अरुण झल्ला गया।

"घबड़ाइये नहीं—" चन्द्रकला ने कहा "वसन्त बाला की गुप्त रूप से सहायता करने वाले मौजूद हैं। क्या आपने बादल का वह टुकड़ा नहीं देखा था?"

"वह कैसा था?"

"साँवली—" चन्द्रकला ने कहा "मगर इस बात को सुन्दरी भी न समझ सकेगी।"

"मगर यह तो एक प्रकार का विश्वासघात है, मुकाबिला अकेले अकेले का था।"

"जी नहीं, उधर से भी चित्रकार और समरकन्ना अपनी पूरी शक्ति लगाये हुये हैं।"

अरुण मौन होकर उसी महल की ओर देखने लगा! अचानक चारों ओर से बादल उठे और पानी बरसने लगा, फिर बादलों के झुण्ड से फूलों की एक शाखा निकली और उस शीश महल पर तैरती चली गई, मगर ऐसा लगता था जैसे वह पुष्प डार न हो बल्कि लोहे का हथौड़ा हो, क्योंकि उसने सारा शीश महल चकना चूर कर दिया और अब उसके स्थान पर एक वाटिका दिखाई देने लगी थी।

लोग चकित दृष्टि से उधर ही देख रहे थे कि अचानक वाटिका में रानी बसन्त बाला दिखाई पड़ी, उसके केश भीगे हुये थे, जिनसे मोतियों के समान पानी के कतरे टपक रहे थे, कन्धे से पैरों तक एक लिबादा पड़ा हुआ।

नमी थी चेहरे पर स्नान करके निकली थी।
दिलों की मौत का सामान करके निकली थी!!

जिसने भी देखा उसने दिल थाम लिया, वह इठलाती हुई चली आ रही थी। उसके पीछे दासियाँ थीं, जिनके सरों पर लाल रूमाल बँधे हुए थे। हाथों में दफ थे जिनके किनारों पर घुँघरू लगे हुये थे। जब वह हाथ हिलातीं तो झनकार से सारा मैदान गूंजने लगता था।

अचानक बसन्त बाला चलते चलते रुक गई। फिर उसने पाँव हिलाया, उसकी पाजेब की झनकार के साथ ही दफ बज उठे और सारे मैदान में मधुर संगीत गूंजने लगा।

इतने में लोगों ने देखा कि सुन्दरी सर झुकाये चली आ रही है। उसका चेहरा उदास था, कपड़े फटे हुये थे। उसने बसन्त बाला को देखते ही झुक कर सलाम किया और कहने लगी।

"राजकुमारी जी ! आपने मुझे क्यों बुलाया है, क्या आप मुझसे नाराज हैं ?"

वसन्त बाला कुछ नहीं बोली, केवल मुस्कुरा कर रह गई।

"क्या आपको मेरी मुहब्बत पर विश्वास नहीं है ?"

"कैसे विश्वास हो —" वसन्त बाला ने मुस्कुरा कर कहा।

"अगर कहिये तो अपना सर काट दूं ?" सुन्दरी ने कहा।

वसन्त बाला ने मुस्कुरा कर संकेत किया। सुन्दरी ने कटार खीची और अपनी गर्दन पर रखी। उसकी दासियों ने भी ऐसा ही किया। फिर जैसे ही उसने अपनी गर्दन काटनी चाही एक पक्षी चीखता हुआ सुन्दरी के सामने ढेर हो गया सुन्दरी ने चौक कर देखा। वसन्त बाला ने फिर मुस्कुरा कर संकेत किया। इस बार एक दूसरा पक्षी आया और उसने कटार के नीचे अपनी गर्दन रख दी। उसकी गर्दन कटते ही रक्त का फौवारा छूटा और रक्त फूलों पर पड़ने लगा। सुन्दरी फिर चौकी उसने जल्दी से एक गोला खीच कर बाटिका पर मारा। सारा बाग जलने लगा फिर लोगों ने देखा कि न वह बाटिका है न वह सामान है बल्कि एक जङ्गल है जिसमें वसन्त बाला खड़ी है और सुन्दरी उसे दूर से ललकार रही है।

"ओ छोकरी ! घर में बैठ कर अपनी माँ की गोद में खेल—" वसन्त बाला ने दाँत पीस कर कहा "पहले तेरे पक्षी ने तुझे बचाना चाहा, मगर जब उस में असफलता मिली तो रानी हँसा और तेरी माँ बीच में कूद पड़ी वर्ना तू तो मर ही गई थी।"

सुन्दरी ने कोई उत्तर नहीं दिया और अपनी पूरी सेना के साथ वसन्त बाला पर टूट पड़ी। वसन्त बाला ने अपनी सेना की ओर देखा और फिर युद्ध होने लगा। रानी पदमा, रानी उर्वशी तथा उद्यान जादू भी कूद पड़े। राजकुमार अरुण भी तलवार खीच कर लड़ने लगा और पहले ही हमले में सुन्दरी की सेना काफी पीछे हट गई।

अचानक वसन्त बाला को एहसास हुआ कि उसकी सेना की संख्या कम होती जा रही है और लोग पीछे भाग रहे हैं! उसने नजर उठा कर ऊपर की ओर देखा तो एक ओर से चित्रांवती और दूसरी ओर से चित्रकार हमला कर रहे थे। वसन्त बाला ने संकेत किया और उद्यान रानी पद्मा। लाहूत तथा लमपति जादू चित्रकार पर चढ़ दौड़े। रानी वसन्त बाला और रानी उर्वशी सुन्दरी से लड़ रही थी।

उधर रानी हँसा ने सोचा कि इस समय अरुण अकेला है! यह सत्य है कि इस समय उस पर कोई जादू असर नहीं कर सकता मगर गिरफ्तार तो किया ही जा सकता है अतः वह अपने स्थान से उड़ी और अरुण की ओर बढ़ी।

वसन्त बाला समझ गई इस लिये वह भी उसी ओर झपटी।

"खबरदार! उधर न जाना—" सुन्दरी ने ललकारा।

"हट जा! मुझे तेरी जवानी पर दया आती है—" वसन्त बाला ने कहा।

फिर सुन्दरी ने वसन्त बाला पर हमला कर दिया और वसन्त बाला के सर पर हलका सा घाव हो गया। चेहरे पर रक्त बहने लगा वह झल्ला कर पलटी। सुन्दरी ने गोला फेंका जिससे वसन्त बाला की दो दासियाँ मारी गई। वसन्त बाला से सहन न हो सका। वह सुन्दरी पर टूट पड़ी। रानी हँसा ने जब देखा तो वह अरुण का विचार छोड़ कर उसी ओर लपकी और सुन्दरी से कहने लगी।

"उधर से पलट आओ। उसका मुकाबिला न करो।"

सुन्दरी को और जिद हो गई। उसने झल्ला कर वसन्तबाला पर ताबड़ तोड़ कई वार किये। वसन्त बाला का कन्धा भी जख्मी हो गया एक बार झूम कर वसन्त बाला ने आकाश की ओर देखा और बाये हाथ में गुलदस्ता तथा दाहिने हाथ में कटार लेकर सुन्दरी से लड़ने लगी। सुन्दरी ने देखा कि वसन्त बाला अपने मस्तक की ओर

से असावधान है। उसने बसन्त वाला के सर पर वार किया। वसन्त वाला ने गुलदस्ता आगे बढ़ा दिया। गुलदस्ता फटा और उसमें से ऐसी सुगन्ध निकली कि सुन्दरी का सर घूम गया। बसन्त वाला ने नारा मार कर कटार का वार किया। सुन्दरी कराह कर गिरी और तड़प कर मर गई। उधर चित्रकार और चित्रावती को रानी पदमा इत्यादि ने घेरे में ले रखा था। सुखपाल और लमपति ने जान की बाजी लगा दी थी। चित्रकार ने झल्ला कर लमपति पर हमला किया। वार इतना गहरा था कि लमपति सहन न कर सका और मर गया उसकी मौत ने लाहूत और रानी पदमा को पागल बना दिया। दोनों उस पर तावड़ तोड़ हमले करने लगे।

उसी समय रानी सुन्दरी के मरने से काली आँधी उठी। रानी पदमा ने अवसर उपयुक्त देख कर अपना झूमर चित्रकार पर खीच मारा। एक देव पैदा हुआ और चित्रकार को ले भागा। रांनी हँसा जो सुन्दरी के कत्ल से बौखला गई थी जब उसने देखा कि चित्रकार भी जाना चाहता है तो उसने एक थपकी दी। एक दूसरा देव उत्पन्न हुआ और उसने पदमा को देव को कत्ल किया और चित्रकार को ले भागा।

उधर जब आँधी साफ हुई तो लोगों ने देखा कि रानी समरकला रानी हंसा के पास खड़ी रो रही है।

"मैं उसे बचा न सकी —" समर कला ने कहा "मगर आप हट जाइये अब मैं सहन नहीं कर सकती।"

इतना कह कर वह वसन्त वाला की सेना पर टूट पड़ी। वसन्त वाला चोट लगने तथा इतनी देर से लड़ने के कारण सुस्त पड़ गई थी मगर फिर भी वह बड़े साहस से लड़ रही थी। उद्यान इत्यादि ने जब यह देखा तो वह भी समर कला से लड़ने लगे। अचानक रानी समर कला ने कटार खींच कर बसन्त वाला पर मारा। वसन्तवाला

ने कटार को रोक कर समर कला पर वार किया।

रानी समरकला ने जल्दी से अपना सर आगे बढ़ा दिया।

"यह क्या अनर्थ किया।" एक ओर से आवाज आई मगर बोलने वाला दिखाई नहीं दे रहा था।

वसन्त वाला व्याकुल हो उठी, मगर वह भी विवश थी। वार कर चुकी थी। कटार रानी समर कला के सर पर पड़ी और उसके सर से खून का फौवारा निकला और बूंदें उछल कर वसन्त वाला के चेहरे पर पड़ी। फिर किसी ओर से एक फूल वसन्त वाला के सर पर पड़ा और वसन्त वाला धरती पर गिर कर तड़पने लगी।

फिर लोगों ने देखा कि जहाँ वसन्त वाला थी वहाँ एक पिंजरा है और उस पिंजरे में एक कोमल बन्द है। रानी समर कला पिंजरा उठा कर आगे बढ़ी। पूरी सेना ने उसे रोकना चाहा, मगर वह किसी घायल सिंहनी के समान लोगो को मारती काटती निकल गई।

रानी हंसा ने नगाड़ा बजवा दिया और लड़ाई बन्द हो गई।

सन्त की सेना में सुन्दरी की हत्या और सुलेखा तथा सुखपाल के मिलन से जो हर्ष उत्पन्न हुआ था वह मिट्टी में मिल गया था। विजय पराजय में बदल गई थी। रानी वसन्त वाला का कैद होना और लमपति का मारा जाना सन्त जालेन्द्र के सीने में एक गहरे घाव के समान पीड़ा दे रहा था! वह मुट्ठियाँ बाँधे टहल रहे थे।

सेना के तमाम अधिकारी वहाँ खड़े थे मगर किसी के मुख से कुछ नहीं निकल रहा था। अचानक सन्त ने गरज कर कहा।

"सौगन्ध है उस परम पिता परमेश्वर की जिसके अधीन सारी शक्तियाँ है, मैं समर कला को कत्ल किये बिना नहीं मानूंगा!"

किसी ने कुछ नहीं कहा।

अरुण ने चन्द्र कला की ओर देखा और कहने लगा।

"मुझे आशा थी कि—।"

"और आप की आशा ठीक ही थी—" चन्द्रकला ने जल्दी से कहा "सांवली को मैंने उस ओर भेज दिया था जहाँ आप थे ताकि रानी हंसा आपको गिरफ्तार न कर सके, मगर सुन्दरी के मारे जाने के कारण सांवली असावधान हो गई, बस उसी समय अचानक समर कला ने बसन्त वाला पर हमला कर दिया, सांवली बस इतना कर सकी कि उसने बसन्त वाला को कत्ल होने से बचा लिया।"

"हाँ—" अरुण ने कहा "मैंने देखा था कि बसन्त वाला पर एक फूल पड़ा था। कदाचित उसी के कारण बसन्त वाला बच ई।"

"हाँ, और वह फूल सांवली ने फेंका था।"

सन्त अपने ध्यान में मौन टहल रहे थे कि अचानक फिरंगी और चित्रांगद आये।

"क्या समाचार है?" सन्त ने पूछा।

"रानी समर कला ने प्रतिज्ञा की है कि वह सुन्दरी की हत्या के बदले सबको कत्ल कर डालेगी।"

'देखा जायेगा—" सन्त ने अकड़ कर कहा "मारने वाले से बचाने वाला अधिक शक्तिशाली है।"

"आपने क्या सोचा है?"

"युद्ध जारी रहेगा। हम सर नहीं झुकायेंगे।"

"हम सब जान लड़ाने को तैयार हैं।"

"आप लोग अपना अपना काम देखिये—" सन्त ने कहा "मैं जा रहा हूँ। शैतानी मलिका समरकला से मुझे निपटना है।"

"ठीक है—" अरुण ने लोगों की ओर देख कर कहा "नोन्ना जी को जाने दीजिये और आप लोग कल को लड़ाई के लिये तैयारी कीजिये।"

"हाँ बेटा—" सन्त ने कहा "कोशिश करना हमारा काम है, फल भगवान के हाथ है।"

इतना कह कर सन्त तेजी के साथ खेमे से बाहर निकल गये।

रात का सन्नाटा गहरा होता जा रहा था और लोग अधीरता के साथ आने वाले सबेरा का इन्तजार कर रहे थे।

॥ समाप्त ॥



